PHARMA दर्पण

Editor- Brejesh Garg | www.medicaldarpan.com | Monthly News Paper

B.N. Medical Complex, Bulandshahr (U.P.) | Postal Reg. No. BSR 52/2023-2025 | RNI UPBIL/2011/50248

Year 14 | Issue 5 | D.O.P. 20 March 2024 | Pages 16 | ₹ 10/- Copy | ✆ 09045029158, medicaldarpan.ctp@gmail.com

PCD / FRANCHISEE

V & U Pharmaceuticals

Quality ☑ Service ☑ Reliability ☑

Where Quality is the Core

All Products of V & U Pharmaceuticals are manufactured under stringent quality control in approved manufacuring facilities.

WHO GMP CERTIFIED · GMP · ISO 9001 CERTIFIED

A NAME SYNONYMOUS TO QUALITY & TRUST
INVITING PROPOSAL FOR FRANCHISEE ACROSS COUNTRY

1. One of the best quality products and packaging.
2. Attractive Pricing.
3. Comprehensive & expanding produt basket
4. Expert Marketing Support/ Print Inputs.
5. Attractive Bonanza

TABLETS/CAPSULES
SYRUPS/LIQUIDS
RESPULES/ROTACAPS
DEVICES/CREAMS

V & U PHARMACEUTICALS
Contact: 7017051435/9999355975
H-1.39N, RIICO Industrial Area, Khushkhera, Bhiwadi, Distt:Alwar, Rajasthan 301707
sales@vnupharmaceuticals.com; vnupharmaceuticals@gmail.com
www.vnupharmaceuticals.com

Our General Divisions

MERRIL · MESTRA · STERILE GENETICS

Third Party Enquiry Also Welcome

And many more ...
We have more then 250 products in our successfully running company.

For any query :- 9719839944

New Molecules available

Natural Progesterone 300mg SR Tab
Faropenem-200mg Tab.
Ambroxol+ Levocetrizine+ Montelukast
Trypsin+ Rutoside+ Bromeline+ Diclofenac
Sultamycillin-375mg Tab.
Rifaximin-400mg Tab.
Thiocolchicoside+ Aceclofenac+ Paracetamol
Medoxyprogesterone 10mg

Introduce New Derma Division

Emocare (A Neuro Psychiatrist Divison)	NUECAD (Cardiac-Diabetic division)	Womana (Gyne-infertility division)	BEAUKIN (A Derma Division of Merril Pharma)
Piraciti-Plus: Citicoline 200mg + Piracetam 800mg Tab.	Metolip-ER 25/50: Metoprolol Tartrate 25/50 (ER)	Gensure-Sachet: L-Arginine 3gm. + Proanthocyanidin 75 mg.	Antihist-D: Desloratadine 10 mg.
Velpy-200/300/500: Sodium Valporate With Valporic Acid	Nuepido-AS: Clopidogrel 75 mg +Aspirin 75 mg	Gensure-LC: L-Carnitine + Co-Enzyme + Astaxanthin + Piperin + Lycopene+ Zinc Sulphate	Tacroril: Tacrolimus Cream 0.03
Emofexine Tab.: Desvenlafaxine 50mg ER	Nuepido-Plus: Clopidogrel 75 mg +Aspirin 150 mg	NMPC-softgel/SR tab/ Inj.: Natural Micronised Progesterone B.P. 100/200/300 mg.	Candigel: Luliconazole 1.0% w/w
Emofexine Plus -50: Desvenlafaxine 50 mg + Clonazepam 0.5 mg	Tenzex-M: Teneligliptin 20mg + Metformin Hydrochloride 500mg	Gensure-F: Folic Acid, Inositol, L-Arginine, Selenium Grape Seed Extract, Lycopene, Vitamins & Zinc	Eberil: Eberconazole 30 mg

Registered Office :- A-401/402, Empire Business Hub, Science City Road, Ahmedabad-380060 (Gujrat)-India,
Email : order@mestrapharma.com Website : www.mestrapharma.com

DydroBest (A Gynaecology division of Best Biotech) · Best BEST BIOTECH

In
Female Infertility & Painful Menstrual Disorders

Dydrobest® TABLETS
Dydrogesterone 10 mg.

- Female Infertility
- High Risk Pregnancy
- Endometriosis
- Irregular Menstrual Disorders
- Premenstrual Syndrome (PMS)

Dydrogesterone Tablets IP 10 mg · 10 x 1 x 10 Tablets

A true partner in *Successful pregnancy*

For trade enquiries please Call
91 9866908086
e-mail: bestbiotech4u@gmail.com,
Website: www.bestbiotechindia.com

Hillwin Pharmaceuticals

WHO GMP CERTIFIED

THIRD PARTY MANUFACTURING & FRANCHISEE/PCD

Best quality of efficiency Product we directly approved by WHO GMP
With the Wide Range of :

Tablets · Capsules · Liquids · Dry Syrup · Injectables · Drops · Lotions · Gels · Ointments · Shampoos · Protein Powders · Ayurveda Products · Neutraceuticals

Excellent Packing Like Alu-Alu, Blister & Strip Packing

Brand Promotional Input Like...
Visual aid · Sample Catch covers · Visiting Cards · Product Literature · MR Bags · DCR Pad · Gifts

Trade Enquiries are Welcome for Third Party MFG. / PCD Franchises Distribution on Monopoly basis in PAN India.

CALL US : +91 8476855579 , 9476782423
Head Office : B-39, New Shopping Complex, Opp. PNB Bank Shivalik Nagar, Haridwar (U.K.)

Biounity Pharma (Your good health is our target)

THIRD PARTY MANUFACTURING SERVICE

Committed to Healthcare through Innovation & Quality

100% SATISFACTION · BEST QUALITY

WE OFFER
- MORE THAN 1000 PRODUCTS
- EXCEPTIONAL PROFIT MARGIN
- PROMPT / TIMELY DELIVERY
- COMPLETE MONOPOLY RIGHTS
- EXCLUSIVE PROMOTIONAL MATERIAL
- ATTRACTIVE PACKING

CONTACT FOR BEST RATE IN THIRD PARTY MANUFACTURING
8449549885
8476946001
po.pharmabiounity@gmail.com,
mkt.biounitypharma@gmail.com

Wide Therapeutic Range
Orthopadic · Gynaecare · Gastroenterology · Anti-Infective · Urology Care · Anti-Allergic · Cardiovascular · Anti-Diabetic · Cough & Cold · Bronchodilator · Paediatric · Respiratory · Injectables · Neuropsychiatry · Nutritional Supplements · OTC Products · Derma Care · Eye/Ear/Nasal Drops

SMAYAN HEALTHCARE www.smayan.in

BEST THIRD PARTY INJECTABLES (AMPOULES) MANUFACTURERS COMPANY IN INDIA

Attractive Packaging
Timely Delivery
Quality Range

WHO · ISO · GMP

For Enquiries Contact:
Smayan Healthcare Pvt. Ltd.
Head Office: SCO - 167, First Floor, Sector - 38 C, Chandigarh, India - 160036
Manufacturing Unit: Plot No. 8-9-26-27, HPSIDC, Industrial Area, Davni, Baddi, District - Solan, (H.P.), 173205
Email: manager@smayan.in, Contact No: +91 - 8591978885 , +91 76967 63030

Soft Gelatin | Injection (Ampoules) | Liquids | Cosmetic | Nasal Spray | Lotions | Ointments | Dusting Powder

FOR ENQUIRIES
Contact +91 9922377776
95610 00050

Tapa Tap · XFORCE air · XFORCE · XFORCE Overtime · XFORCE Bubblegum · Vinral-Z Plus · ELECTOZOF OR+

We Are Manufacturer of
LATEX BASED MALE CONDOMS
Juices & Energy Drink
- 200 ml tetra pack
- 250 ml pet bottle
- 500ml pet bottle

For 3rd PARTY ENQUIRY
Contact : +91 8884441700

TARUN® BIOTECH PVT LTD | NWAY® BIOTECH PVT LTD

हॉस्पिटल के 45 कर्मचारियों को किया सस्पेंड

गोरखपुर– टीबी हॉस्पिटल के आउटसोर्सिंग पर लगे सभी 45 कर्मचारियों को एक साथ बर्खास्त कर देने का समाचार प्रकाश में आया है। बताया गया है कि यह कार्रवाई इन कर्मचारियों को बायोमेट्रिक हाजिरी के नाम पर वेतन कटौती का विरोध करने के फलस्वरूप की गई है। गोरखपुर एयरपोर्ट के पास बने टीबी अस्पताल में सेवा प्रदाता फर्म के तहत 45 आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की भर्ती की गई थी। बायोमेट्रिक हाजिरी न लगाने पर फर्म द्वारा इन कर्मचारियों का वेतन काट लिया गया। कर्मचारियों ने वेतन कटौती का विरोध किया। इसके चलते सेवा प्रदाता फर्म ने एक साथ सभी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया है। फर्म ने कर्मचारियों को हटाने के साथ ही स्वास्थ्य विभाग के साथ अपना अनुबंध भी एकतरफा खत्म कर दिया है। हालांकि, अस्पताल के सीएमएस ने आश्वासन दिया है कि किसी कर्मचारी को बाहर नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा है कि फर्म का यह फैसला स्वीकार्य नहीं है। सेवा प्रदाता फर्म ने ईमेल कर कर्मचारियों को बर्खास्तगी की सूचना दी। फर्म के इस कदम से कर्मचारियों में हडकंप मचा हुआ है। बता दें कि एयरपोर्ट स्थित 100 बेड के टीबी सह सामान्य अस्पताल में आउटसोर्सिंग पर 45 कर्मचारी तैनात हैं। इनमें से ज्यादातर नर्स और वार्ड ब्वॉय हैं। ये कर्मचारी फरवरी वर्ष 2016 से आउटसोर्सिंग पर तैनात किए गए। जुलाई 2021 से उनकी सेवा प्रदाता फर्म बदलकर दिल्ली की चींटी इंटरप्राइजेज कर दी गई थी। नई फर्म ने छह महीने पहले से बायोमेट्रिक हाजिरी लगावानी शुरू कर दी थी। इसके लिए अस्पताल के अंदर एक बायोमेट्रिक मशीन लगी है। इसमें सिर्फ आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की ही बायोमेट्रिक हाजिरी ली जा रही हैं। बायोमेट्रिक हाजिरी के शुरू होने से अब तक कर्मचारियों का मानदेय नहीं मिल पाया था। आठ फरवरी को खाते में चार महीने का मानदेय आया। उसमें भी बायोमेट्रिक हाजिरी के नाम पर कटौती हो गई। कर्मचारियों को चार हजार से लेकर 30 हजार रुपये तक कम मानदेय मिला है। फर्म ने इस कटौती की वजह बायोमेट्रिक हाजिरी का रिकॉर्ड माना है। उधर, टीबी अस्पताल के सीएमएस डॉ.एके वर्मा इन कर्मचारियों के पक्ष में हैं। उनका कहना है कि अस्पताल में चिकित्सकों के बाद यही कर्मचारी हैं। इन्हीं के भरोसे अस्पताल में मरीज भर्ती हैं। वे फर्म के फैसले को स्वीकार नहीं करते। उन्होंने भरोसा दिलाया है कि किसी भी कर्मचारी को बाहर नहीं होने दिया जाएगा।

शुभकामनाएं दी

तरुण मित्र परिषद के अध्यक्ष मनोज कुमार जैन (मनोनीत निगम पार्षद) को जन्म दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएँ प्रेषित की गई। परिषद के महासचिव अशोक जैन व सहसं. चव आलोक जैन ने दरियागंज स्थित उनके कार्यालय मे पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए उनके 56वें वर्ष मे प्रवेश करने पर स्वस्थ व दीर्घ जीवन की कामना की और आशा की कि वे अपने व्यापार मे एक सफल व्यवसायी व राजनैतिक व सामाजिक जीवन मे उच्च शिखर तक पहुंचकर समाजसेवा के क्षेत्र मे बढ़चढ़ कर कार्य करते रहें। परिषद के उपाध्यक्ष अशोक कुमार जैन, कमल कुमार मेहरोत्रा, संगठन सचिव राकेश जैन, अनिल जैन, पी. के. जैन, निर्मल मेहरोत्रा, सहित सभी पदाधिकारियों ने अपने संदेश के माध्यम से शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर अनेकों राजनेताओं, व्यापारिक व सामाजिक संस्थाओं द्वारा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। मनोज कुमार जैन ने सभी का शुभ कामनाएँ प्रेषित करने हेतु आभार व्यक्त किया।

– अशोक जैन, **महासचिव**
मो० 9266638138

बंद फैक्टरी में अवैध रूप से दवाओं के निर्माण का भंडाफोड़

रुडकी– बंद फैक्टरी में अवैध रूप से दवाओं का निर्माण करने का भंडाफोड़ किया गया है। एसटीएफ ने रुडकी के गंगनहर क्षेत्र में बंद पड़ी फैक्टरी पर रेड की। यहां ब्रांडेड कंपनियों के नाम से दवाएं अवैध तौर पर बनाकर बेची जा रही थीं। खास बात यह है कि आरोपी फैक्टरी मालिक के खिलाफ पांच साल पहले भी कार्रवाई हो चुकी है। इसके बावजूद उसने यहां फिर से काम शुरू कर दिया। फैक्टरी मालिक के खिलाफ केस दर्ज कर उसे जेल भेज दिया गया है। एसटीएफ को सूचना मिली थी कि माधवपुर रोड पर बंद फार्मा फैक्टरी में अवैध रूप से दवाएं बनाई जा रही हैं। सूचना के आधार पर ड्रग विभाग को साथ लेकर जांच की गई। एसएसपी आयुष अग्रवाल ने बताया कि फैक्टरी में काफी कच्चा माल पड़ा था। वहां कई ब्रांडेड कंपनियों की दवाओं के रैपर भी पाए गए। उन्होंने बताया कि इस फैक्टरी का मालिक शाहरुख खान है। पुलिस ने फैक्टरी से बरामद माल को जब्त कर लिया है। एसएसपी के अनुसार आरोपी शाहरुख खान केवल बारहवीं तक पढ़ा है। उसने अपने टेक्निकल स्टाफ केमिस्ट नीति त्यागी और सगरेंद्र कौर की फार्मा डिग्री के आधार पर ड्रग विभाग से लाइसेंस लिया था। इस लाइसेंस की वैधता 2018 तक ही थी। ऐसे में फैक्टरी को बंद कर दिया गया। उसके बाद फिर से उसने यहां काम शुरू कर दिया। 2019 में ड्रग विभाग ने छापा मारकर इस फैक्टरी को बंद कराया और शाहरुख खान के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया। लेकिन, वह बाज नहीं आया और उसने फिर से वही काम शुरू कर दिया। आरोपी के खिलाफ न्यायालय से वारंट भी जारी हुआ था। आरोपी की तलाश कर गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी को कोर्ट में पेश करके जेल भेज दिया है।

प्राइवेट हॉस्पिटल्स पर छापामारी, किया सील

राजापुर– प्राइवेट हॉस्पिटल्स पर छापामार कार्रवाई की गई है। अधिकारियों ने पांच प्राइवेट चिकित्सालयों का संचालन मानकों के अनुरूप न मिलने पर इनको सील कर दिया है। छापामार कार्रवाई के चलते कस्बे में हडकंप मच गया। कई हॉस्पिटल संचालक छापेमारी के भय से शटर गिराकर फरार हो गए। गौरतलब है कि राजापुर कस्बे में एक दर्जन से अधिक चिकित्सालय संचालित हैं। इनमें मात्र 8 हॉस्पिटल के पास लाइसेंस हैं। कुछ ऐसे हॉस्पिटल है जहां बीएएमएस की डिग्री लेकर एलोपैथी का इलाज करते हैं और आयुर्वेद की दवा नहीं रहती, जो मानक पूर्ण नहीं करती है। शिकायत मिलने पर संयुक्त टीम ने छापेमारी की। टीम ने जांच के बाद हेल्थ हेवेन हॉस्पिटल, मानस हेल्थ केयर, अनुष्ठा हॉस्पिटल, शंकर लाल पाली क्लीनिक, चौतन्य हॉस्पिटल में कमी मिलने पर इनको सील कर दिया। छापामार टीम में एसडीएम प्रमोद झा, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजापुर के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ.अरूण कुमार आर्या, साम. ुदायिक केंद्र पहाड़ी के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. उदय सिंह व सीओ निष्ठा उपाध्याय शामिल रहे। एसडीएम प्रमोद झा ने बताया कि मानव के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतने वाले अस्पताल संचालकों को व फर्जी डॉक्टरों पर सख्त कार्रवाई होगी। एक अस्पताल में बिना डिग्री होल्डर के एक डॉक्टर ऑपरेशन थियेटर में हाईड्रोसील का ऑपरेशन करते हुए दबोचा गया है। उन्होंने बताया कि मरीज को साम. ुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजापुर में दाखिल करा दिया है।

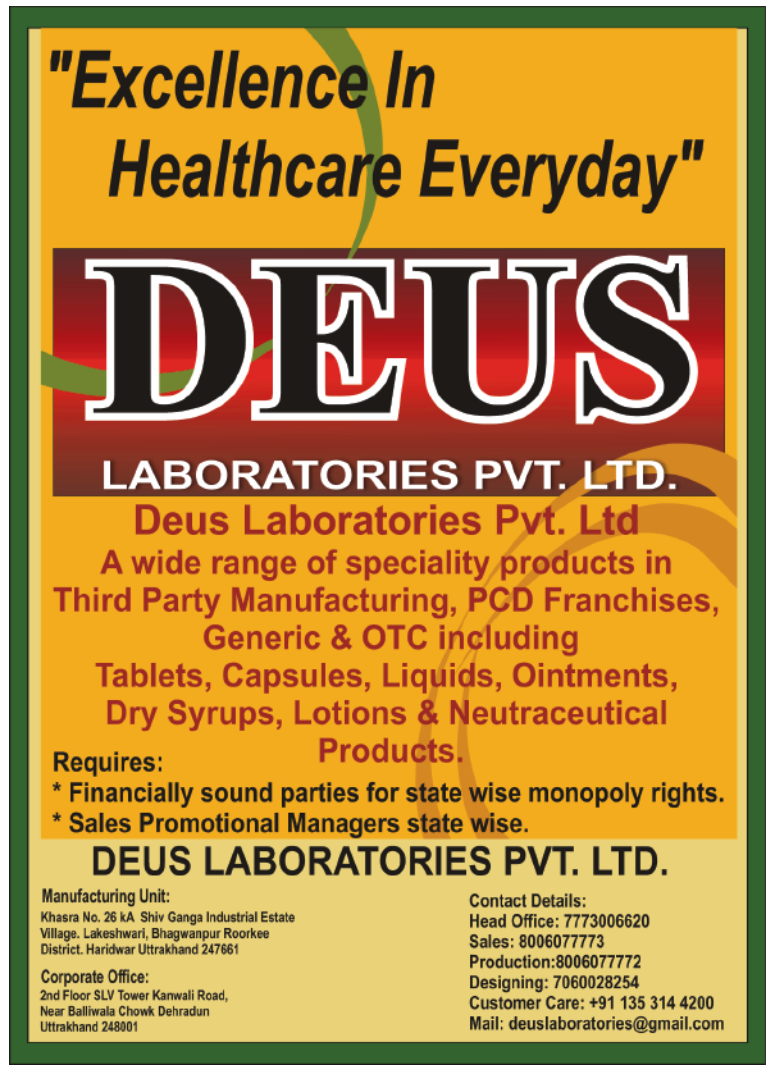

अस्पताल में मेडिकल स्टूडेंट्स ने बनाई रील्स 38 के खिलाफ ऐक्शन

कर्नाटक– अस्पताल के अंदर रील बनाना 38 मेडिकल स्टूडेंट्स को भारी पड़ गया है। मामला सामने आने पर इन सभी पर जुर्माना लगा दिया गया है। गौरतलब है कि कर्नाटक के गडग इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के स्टूडेंट्स का एक रील वायरल हो रहा है। इस इंस्टाग्राम रील की टैग लाइन रील इट, फील इट थी। मगर, हॉस्पिपल के अंदर रील बनाना इन 38 मेडिकल स्टूडेंट्स को भारी पड़ गया और अब ये जुर्माने का सामना कर रहे हैं। नियमों का उल्लंघन करने पर हॉस्पिटल मैनेजमेंट ने संज्ञान लिया है। अब इन छात्रों की हाउसमैनशिप ट्रेनिंग 10 दिन के लिए बढ़ा दी गई है। गडग इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के डायरेक्टर डॉ. बसवराज बोम्मनहल्ली का कहना है कि अस्पताल परिसर में 38 छात्रों ने मिलकर इंस्टाग्राम रील बनाई है। इन्होंने अस्पताल के नियमों को तोड़ा है। अगर इन्हें रील बनानी थी तो हॉस्पिटल के बाहर बनाते। अस्पताल के अंदर ऐसा करने से मरीजों को दिक्कत होती है। इसीलिए हमने इस तरह की इजाजत नहीं दी है। यह प्री-ग्रेजुएशन समारोह के लिए रिकॉर्ड किया जा रहा था। सजा के तौर पर आरोपी छात्रों की ट्रेनिंग बढ़ा दी गई है। बता दें कि कई दिनों पहले कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले में सरकारी अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर के अंदर प्री-वेडिंग फोटोशूट कराया गया था। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने पर एक डॉक्टर को सस्पेंड कर दिया गया। भरमसागर क्षेत्र के जिला अस्पताल में कॉन्ट्रैक्ट पर काम करने वाले डॉक्टर के फोटोशूट का वीडियो वायरल होने पर विवाद खड़ा हो गया था। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडू राव ने कहा कि मैं पहले ही संबंधित चिकित्सकों और कर्मचारियों को सावधान रहने का निर्देश दे चुका हूं ताकि सरकारी अस्पतालों में इस तरह का दुर्व्यवहार न हो। सभी को यह याद रखना चाहिए सरकार ऐसी चिकित्सा सुविधाएं आम लोगों के स्वास्थ्य के देखभाल के लिए प्रदान करती है।

4 वर्ष तक घर बैठे यह समाचार पत्र पढ़ने के लिये हमारे पंजाब नैशनल बैंक के **खाता संख्या 1824002100120081,** IFSC Code - PUNB0145020 जो कि मैडीकल दर्पण के नाम से है, में रू० 500/- जमा कर अपना पूरा पता हमारे फोन नं०- 09045029158 पर SMS कर दें।

यह उपकरण घावों के लिए मरहम हो सकता है

नई दिल्ली: अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने अपने स्कूल ऑफ इंटरनेशनल बायोडिजाइन के सहयोग से घावों को जल्द ठीक करने वाला एक उपकरण विकसित किया है, जो बड़े घावों वाले रोगियों में संक्रमण की संभावना को भी कम करता है। एम्स ट्रॉमा सेंटर की प्रोफेसर सुषमा सागर, जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ नवीन प्रौद्योगिकी के लिए संस्थान का अनुसंधान पुरस्कार प्राप्त किया, ने टीओआई को बताया कि पिछले दो वर्षों में ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कम से कम 100 रोगियों पर बैटरी चालित डिवाइस के साथ दो सफल परीक्षण किए गए थे। उन्होंने कहा कि डिवाइस में बड़े घावों के लिए नकारात्मक दबाव के साथ-साथ ऑक्सीजन वितरणष का एक संयोजन उपचार है और यह स्राव को हटाने, सूजन को कम करने और संवहनीता को बढ़ाने में मदद करता है। यह घाव में ऑक्सीजन की नियंत्रित खुराक प्रदान करके माइक्रोबियल संक्रमण को कम करने में भी मदद करता है। इसके अलावा, यह घाव के संकुचन और बेहतर उपचार के लिए स्वस्थ ऊतक निर्माण में मदद करता है। उन्होंने कहा, ष्हमें ड्रेसिंग बहुत बार बदलनी पड़ती है क्योंकि वे आसानी से गीली हो जाती हैं। आघात, जलन, मधुमेह या पुराने घावों के कारण होने वाले बड़े घावों की देखभाल के लिए ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है। घाव तक ऑक्सीजन पहुंचाना फायदेमंद है और यह अंत. रराष्ट्रीय अध्ययनों में भी साबित हो चुका है। यदि सामान्य घाव 30 दिन में ठीक हो जाता है तो स्थानीय ऑक्सीजन उपचार से यह 7-10 दिन में ठीक हो जायेगा। डिवाइस की कार्यप्रणाली के बारे में बताते हुए डॉ. सागर ने कहा कि स्वास्थ्यकर्मी घाव के आकार के अनुसार फोम ड्रेसिंग की एक परत फिट करते हैं। फिर ड्रेसिंग को एक फिल्म से सील कर दिया जाता है, जिसमें एक छेद होता है जहां एक छलनी जैसी ट्यूब जुड़ी होती है। जब ट्यूब को मशीन से जोड़ा जाता है, तो यह नकारात्मक दबाव के कारण डिस्चार्ज/एक्सयूडेट को सोख लेती है। मशीन में कनस्तर के लिए एक अटैचमेंट है जहां तरल पदार्थ एकत्र होते हैं। नकारात्मक दबाव घाव से स्राव को कम करता है और एक अन्य ट्यूब द्वारा अतिरिक्त ऑक्सीजन वितरण घाव से संक्रमण को कम करने में मदद करता है। यह नई रक्त वाहिकाओं के विकास को बढ़ावा देकर घाव को ठीक करने में भी मदद करता है। यह संयोजन चिकित्सा बड़े घावों के लिए एक बड़ा वरदान हो सकती है और ड्रेसिंग में बार-बार बदलाव से बचा जा सकता है। ऐसे संयोजन चिकित्सा उपकरण बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। उन्होंने कहा, इस उपकरण का उपयोग करके प्रत्येक ड्रेसिंग लगभग पांच दिनों तक चल सकती है। उन्होंने कहा कि ड्रेसिंग को हर दिन बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन कंटेनर भर जाने पर इसे बदला जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि घर-आधारित थेरेपी प्रशिक्षित नर्सों या पैरामेडिक्स द्वारा दी जा सकती है। नकारात्मक दबाव घाव चिकित्सा बाजार में उपलब्ध है लेकिन महंगी है। डॉक्टरों ने कहा कि एम्स द्वारा विकसित इस उपकरण की लागत कम होने की संभावना है।

स्टेम सेल ऑपरेशन से थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चे की जान बची

कोलकाता: एक जटिल बेमेल स्टेम सेल प्रत्यारोपण ने प्रियांशु धारा को थैलेसीमिया मुक्त जीवन का वादा किया है। सरकारी एनआरएस मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (एनआरएसएमसीएच) में प्रक्रिया के डेढ़ महीने बाद, दो साल-ग्यारह महीने का बच्चा ठीक हो रहा है और जल्द ही उसे घर भेज दिया जाएगा। राज्य के किसी सरकारी अस्पताल में यह इस तरह की पहली प्रक्रिया है।प्रियांशु लगभग एक साल का था जब वह रुक-रुक कर बुखार, पीलापन और कमजोरी से पीड़ित होने लगा। हेमेटोलॉजी के प्रोफेसर संदीप साहा ने ट्रांसफ्यूजन पर निर्भर थैलेसीमिया का पता लगाया, जहां हीमोग्लोबिन प्रेरित करने वाली दवाएं भी काम करने में विफल रहीं। तभी साहा ने अपने माता-पिता को स्टेम सेल ट्रांसप्लांट के बारे में सलाह दी। इससे पहले, पंसकुरा के रहने वाले माता-पिता को यह भी पता नहीं था कि दोनों थैलेसीमिया वाहक थे। जब दोनों जोड़े थैलेसीमिया वाहक होते हैं तो थैलेसीमिया वाले बच्चे को जन्म देने की संभावना लगभग 25 प्रतिशत होती है। सौभाग्य से, लड़के का बड़ा भाई प्रियम थैलेसीमिया-मुक्त पाया गया और डॉक्टर ने सुझाव दिया कि नौ वर्षीय भाई-बहन दाता हो सकता है। लेकिन जांच करने पर पता चला कि जहां मरीज का ब्लड ग्रुप ए पॉजिटिव है, वहीं डोनर भाई बी पॉजिटिव ब्लड ग्रुप का है. परिवार में कोई अन्य पूरी तरह से मेल खाने वाला दाता नहीं मिलने पर डॉक्टरों ने अधिक चुनौतीपूर्ण आधे मिलान वाले, हैप्लोआइडेंटिकल एलोजेनिक स्टेम सेल प्रत्यारोपण का फैसला किया। "हैप्लोआइडेंटिकल ट्रांसप्लांट में हमें ट्रांसप्लांट से पहले और बाद में एंटीबॉडी प्रतिक्रिया को कम करने के लिए विशेष दवाओं और कभी-कभी कीमोथेरेपी का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया में भी, हमने ग्राफ्ट बनाम होस्ट रोग को कम करने के लिए वैसा ही किया, साहा ने कहा, जिन्होंने तीव्र ल्यूकेमिया से पीड़ित एक अन्य लड़के पर सफल आधा मिलान अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण भी किया था। जबकि एक निजी सुविधा में इस तरह के प्रत्यारोपण की लागत लगभग 40 लाख रुपये थी, लड़के के माता-पिता को कुछ दवाओं और जांच परीक्षणों की लागत वहन करनी पड़ी जो सरकारी सुविधा में उपलब्ध नहीं थीं। एनआरएसएमसीएच के प्रिंसिपल पिट बरन चक्रवर्ती ने कहा, हमारी संसाधन सीमाओं के बावजूद, विशेष रूप से धन की, हम अपने डॉक्टरों को मरीजों को सर्वोत्तम देखभाल प्रदान करने के लिए अपनी विशेषज्ञता तैनात करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। बंगाल में, केवल दो सरकारी अस्पतालों - मेडिकल कॉलेज कोलकाता और एनआरएसएमसीएच - में अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण इकाइयाँ हैं। यहां तक कि कैंसर से पीड़ित बच्चों पर स्टेम सेल प्रत्यारोपण किया गया है, यह पहली बार है कि यह प्रक्रिया थैलेसीमिया रोगी पर आयोजित की गई है। "चूंकि हमारे लिए निजी सुविधा में लागत वहन करना संभव नहीं था, इसलिए डॉ. साहा ने हमें एनआरएस में बुलाया। हमें उस पर पूरा भरोसा था, "बच्चे के पिता और सुनार गौतम धारा ने कहा।

गिरफ्तार - सहरसा (बिहार)- कोडिनयुक्त कफ सिरप के कार्टूनों से लदी एक पिकअप को कब्जे में लिया गया है। इसके साथ ही आरोपी तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया है। जिले के महिषी थाना क्षेत्र पुलिस को कफ सिरप तस्करी की गुप्त सूचना मिली थी। इस पर जलई ओपी प्रभारी अवर निरीक्षक अमित कुमार ने टीम के साथ गंडोल चौक के पास नाकाबंदी की। तलाशी में वाहन से कुल 18 कार्टून 180 लीटर प्रतिबंधित कोडिंन युक्त कफ सिरप बरामद किया गया। इनके साथ एक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपित आदित्य कुमार जिले के गोपालपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत गोपालपुर गांव का रहने वाला बताया जा रहा है। पुलिस ने आरोपी तस्कर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। पिकअप वाहन को भी जब्त कर लिया गया है। पुलिस फिलहाल अग्रिम कार्रवाई में जुटी है।

जैसा मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने तथा वृद्ध शरीर को त्यागकर नये शरीर को प्राप्त करती है.

सन्त चुप रहते है, बुद्धिमान बोलते हैं, मूर्ख बहस करते हैं

दवा बिक्री का भंडाफोड़

रायगढ़- नशीली दवा बिक्री के धंधे का भंडाफोड़ किया गया है। करीब पौने 15 लाख रुपये कीमत की प्रतिबंधित दवा जब्त की गई है। वहीं, मौके से छह आरोपियों को भी अरेस्ट किया गया है। यह कार्रवाई प्रतिबंधित टेबलेट, सिरप एवं इंजेक्शन बेचने वालों पर पुलिस ने ड्रग्स विभाग के साथ मिलकर की है। ओडिशा के मेडिकल स्टोर से डॉक्टर की पर्ची के बिना दवा बेचने पर इसके संचालक और उसके भाई को गिरफ्तार किया। थाना प्रभारी जूटमिल निरीक्षक मोहन भारद्वाज को सूचना मिली कि रामकुमार खटर्जी अपनी किराने की दुकान में प्रतिबंधित दवाएं बेचता है। सूचना पर जूटमिल पुलिस ने दुकान पर रेड की और दो अलग-अलग कंपनियों की प्रतिबंधित दर्द निवारक कैप्सूल जब्त किए। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह कनकतुरा थाना रेंगली जिला झारसुगुड़ा के मधुसूदन मेडिकल स्टोर से प्रतिबंधित दवाएं खरीदकर लाना और रायगढ़ शहर में बेच रहा था। इस पर पुलिस टीम ने ड्रग्स विभाग के साथ मिलकर मधुसूदन मेडिकल स्टोर पर छापामारी की। यहां संचालक पदम लोचन मेहर को हिरासत में लेकर पूछताछ करने पर उसने अपने भाई के साथ गांजा, नशीला टेबलेट और इंजेक्शन की बिक्री करना बताया। इसके बाद आरोपियों से छह किलो गांजा, भारी मात्रा में दवाएं, इंजेक्शन, सिरप जब्त किया गया है। पदम लोचन और उसके भाई चंद्रशेखर को अपराध में संयुक्त आरोपित बनाया गया है। थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक शनिप रात्रे ने नशीली टेबलेट बेचने की सूचना पर रेलवे स्टेशन के पास सुरेश वर्मा को हिरासत में लिया। सुरेश के कब्जे से पुलिस ने 128 नशीली कैप्सूल कीमत 8726 रुपए और बिक्री रकम 300 बरामद की। सुरेश वर्मा ने बताया कि वह घासीराम सिदार निवासी धांगरडिपा शीतला मंदिर के पास से नशीली दवाएं खरीद कर लाया था। इस पर सीएसपी रायगढ़ के नेतृत्व में पुलिस टीम ने घासीराम सिदार के घर पर दबिश दी। मौके पर दिलीप सिंह राजपूत नशीली दवाएं खरीदने के लिए खड़ा मिला। पुलिस टीम ने संदेही घासीराम सिदार के घर की तलाशी ली और उसके पास से 130 नशीली इंजेक्शन कीमती 7760 रुपए और बिक्री रकम करीब 5000 बरामद किए। पुलिस ने आरोपी दिलीप सिंह राजपूत के कब्जे से 260 नशीली इंजेक्शन कीमत 15516 रुपये तथा 8000 रुपये जब्त किए। तीनों आरोपियों पर थाना कोतवाली में धारा 21(Dp), 29 एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही की गई है।

गंगाराम अस्पताल और चिकित्सकों पर लगा लाखों का जुर्माना

नई दिल्ली- गंगाराम अस्पताल और उसके पांच चिकित्सकों पर दिल्ली राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (डीएससीडीआरसी) ने 7.20 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। इनको इलाज में लापरवाही बरतने पर एक मृत महिला मरीज के पति को 7.20 लाख रुपये का भुगतान करने का निर्देश दिया गया है। डीएससीडीआरसी ने कहा कि डॉक्टरों ने इलाज की मानक पद्धति का पालन किए बिना महिला मरीज का ''एक प्रयोग'' के रूप में इस्तेमाल किया। आयोग ने मृतका को हुई शारीरिक पीड़ा के लिए 5.10 लाख रुपये, उसके पति को हुई मानसिक परेशानी के लिए 1.20 लाख रुपये और मुकदमे की लागत के रूप में 90,000 रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया। आयोग ने अपने फैसले में कहा कि अस्पताल व चिकित्सकों ने गलत इलाज किया और ऑपरेशन के बाद मरीज को उचित देखभाल प्रदान करने में वे असफल रहे। उपभोक्ता आयोग ने मृतका के पति की शिकायत पर यह आदेश पारित किया है। इसमें आरोप लगाया गया कि अस्पताल और उसके चिकित्सकों की लापरवाही और पेशेवर कदाचार के कारण 18 जून, 2015 को उसकी पत्नी की मौत हो गई। न्यायमूर्ति संगीता ढींगरा सहगल की पीठ ने कहा कि अस्पताल शिकायतकर्ता को उसकी पत्नी के पूरे मेडिकल रिकॉर्ड उपलब्ध कराने से पहले दो महीने से अधिक समय तक इंतजार कराने के लिए कोई स्पष्टीकरण देने में विफल रहा। पीठ ने कहा कि शिकायतकर्ता बसंत लाल शर्मा ने मरीज की मौत से पहले किए गए मेडिकल परीक्षण की रिपोर्ट मांगी थी, लेकिन प्रथम दृष्टया बिना किसी कारण के मामले को लटकाए रखा गया। डॉक्टरों ने या तो मरीज की तिल्ली नहीं हटाई और सर्जरी के लिए मरीज से गलत तरीके से शुल्क वसूल लिया। या फिर गलत परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर गलत पोस्ट-ऑपरेटिव उपचार किया क्योंकि तिल्ली बरकरार थी। क्लीनिकल रिपोर्ट के अनुसार लीवर सामान्य से अधिक आकार का है। हालांकि, अल्ट्रा साउंड रिपोर्ट स्पष्ट कहती है कि लीवर सामान्य आकार का है। फिर से यह भ्रमित आचरण का संकेत है। आयोग ने कहा कि डॉक्टरों की टीम इंसानी जिंदगी से जुड़ा मामला देख रहे थे। ये कोई प्रयोग का मामला नहीं था। डॉक्टर, मरीज का इलाज करते हुए चिकित्सा उपचार के मानकों का पालन किए बिना उसे प्रायोगिक स्थल के रूप में इस्तेमाल नहीं कर सकते। अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक के माध्यम से अस्पताल और डॉ. पंकज अग्रवाल, डॉ. अंबुज गर्ग, डॉ. श्याम अग्रवाल, डॉ. सुधीर कल्हान और डॉ. प्रकाश शास्त्री को (प्रत्येक को) मुकदमेबाजी लागत के रूप में 15,000 रुपये (कुल 90,000 रुपये), मानसिक पीड़ा के लिए 20,000 रुपये (कुल 1.20 लाख रुपये) का भुगतान करने का निर्देश दिया।

सिविल अस्पताल में हंगामा

पानीपत- पानीपत सिविल अस्पताल में उस समय हंगामा हो गया जब एक युवक सिरिंज लेकर नर्स और डॉक्टरों के पीछे दौड़ता हुआ नजर आया। बताया जा रहा हैं कि वह युवक HIV संक्रमित था और अपने खून की संक्रमित सुई लेकर स्टाफ नर्सों के पीछे दौड़ पड़ा। युवक शहर के नूरवाला क्षेत्र का है। वह मानसिक रूप से परेशान था क्योंकि उसके परिवार ने HIV पॉजीटिव होने के बाद उसे दुत्कार दिया था। युवक ने डॉक्टर को भी सिरिंज मारने का प्रयास किया। सुरक्षा कर्मचारियों ने युवक को काफी मशक्कत के बाद पकड़कर लिटाया। डॉक्टरों ने उसे समझाया तो वह रोने लगा और आपबीती सुनाई। वह आश्वासन के बाद कुछ शांत हुआ। दरअसल, नूरवाला का 22 साल का युवक चिकन कॉर्नर चलाता था। उसके पिता की तीन साल पहले मौत हो गई थी। डेढ़ साल पहले युवक की तबीयत बिगड़ी तो उसने सिविल अस्पताल में अपनी जांच कराई। वह इसमें HIV पॉजिटिव पाया गया। उसने खुद कल्पना चावला मेडिकल कॉलेज से अपना 6 माह तक इलाज कराया। उसकी मां ने दूसरी शादी कर ली। अब उसका सौतेला पिता उसके साथ मारपीट करने लगा। माता-पिता ने उसे घर से निकालकर संपत्ति से बेदखल कर दिया। युवक फुटपाथ पर सोकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा। उसको समाज की उपेक्षा का सामना करना पड़ा। युवक उसको एड्स रोगी बोलकर चिढ़ाने लगे। उसको इसी झगड़े में चार माह जेल में भी रहना पड़ा। अब वह एक माह पहले बाहर आया था। उसके सौतेले पिता ने उसकी डंडों से पिटाई कर दी। युवक रोते हुए इलाज कराने नागरिक अस्पताल में पहुंचा। यहां कर्मचारियों ने उसे बेड पर लेटा दिया। वो समाज की उपेक्षा पर चिल्ला चिल्लाकर रो रहा था। उसने मिनी ऑपरेशन थिएटर में जाकर सिरिंज उठाई और अपनी बाजू में मारी। फिर इस सिरिंज को लेकर वो स्टाफ नर्सों व कर्मचारियों के पीछे दौड़ा। स्टाफ नर्स कमरे में घुस गई कर्मचारी बर्न वार्ड की ओर भाग गए। युवक ने यहां जमकर हुडदंग मचाया। सुरक्षाकर्मियों ने उसको किसी तरह से काबू किया। युवक की सारी स्थिति समझने के बाद इमरजेंसी मेडिसिन फिजीशियन एवं इमरजेंसी वार्ड प्रभारी डॉ. सुखदीप कौर ने कहा कि समाज से डॉक्टरों की ओर से ये ही अपील है कि वो ऐसे रोगियों की उपेक्षा न करें। ये भी हमारे समाज का हिस्सा है।

फार्मा पर भारत का रुख, व्यापार समझौतों में आईपीआर जेनेरिक उद्योग के विकास को बढ़ावा देने में मदद करते हैं: जीटीआरआई

नई दिल्ली: जीटीआरआई की एक रिपोर्ट में कहा गया कि प्रस्तावित व्यापार समझौतों में बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) और फार्मा मुद्दों पर भारत का रुख सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ नवाचार को संतुलित करता है, सस्ती दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करता है और जेनेरिक दवा उद्योग के विकास को बढ़ावा देता है। थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने कहा कि मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) में डेटा विशिष्टता और पेटेंट लिंकेज जैसे मुद्दों पर विकसित देशों की मांगों का विरोध करके, भारत यह सुनिश्चित करता है कि जेनेरिक दवा निर्माताओं को अधिक बाजार पहुंच और लागत मिले। जीवनरक्षक दवाएं काफी कम हो जाती हैं। जीटीआरआई पेपर में कहा गया है, भारत का दृष्टिकोण सार्वजनिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ नवाचार को संतुलित करने, अपने विकासात्मक लक्ष्यों के साथ संरेखित करने के लिए ट्रिप्स की लचीली व्याख्या को अपनाने और विशेष रूप से फार्मास्युटिकल क्षेत्र में अनुचित एकाधिकार की स्थापना को रोकने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इसमें कहा गया है कि यह रुख पारंपरिक ज्ञान की रक्षा करने और सस्ती दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने, स्वास्थ्य देखभाल और आईपीआर में महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के व्यापक प्रयास को दर्शाता है। यह मुद्दा महत्वपूर्ण है क्योंकि विकसित देश हमेशा भारत जैसे विकासशील देशों पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधित पहलुओं (टीआरआईपी) समझौते के तहत सहमत आईपीआर मामलों पर एफटीए में प्रतिबद्धताएं लेने के लिए दबाव डालते हैं। व्यापार की भाषा में इसे ट्रिप्स-प्लस कहा जाता है। टीआरआईपी समझौते विश्व स्तर पर इन अधिकारों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, नवप्रवर्तक कंपनियों के लिए उचित सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं और साथ ही जेनेरिक दवा उद्योगों को फलने-फूलने की अनुमति भी देते हैं। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, भारत का रुख इन हितों को संतुलित करने और व्यापार समझौतों के माध्यम से आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है... भारत हमेशा ट्रिप्स-प्लस प्रावधानों के खिलाफ खड़ा है। भारत ने एफटीए में अपने घरेलू जेनेरिक दवा उद्योग के हितों की लगातार रक्षा की है। जब देश टीआरआईपी समझौतों पर हस्ताक्षर करते हैं, तो वे टीआरआईपी प्रावधानों के अनुरूप पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क और अन्य प्रासंगिक कानूनों से संबंधित अपने कानूनों को संशोधित करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। इसमें कहा गया है कि भारत में टीआरआईपी आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए 2005 में 1970 पेटेंट अधिनियम और 2010 में कॉपीराइट अधिनियम में संशोधन किए गए थे। विकसित देशों के एफटीए प्रस्तावों में डेटा विशिष्टता, पेटेंट अवधि विस्तार, पेटेंट की सदाबहारता, व्यापक पेटेंट योग्यता मानदंड और पेटेंट लिंकेज पर ट्रिप्स-प्लस प्रावधान शामिल हैं। इसमें कहा गया है, भारत ने ऐसे प्रावधानों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया है। डेटा विशिष्टता में किसी नए उत्पाद के विनियामक अनुमोदन के लिए प्रस्तुत नैदानिक परीक्षण डेटा पर प्रवर्तक कंपनी को विशेष अधिकार प्रदान करना शामिल है। डेटा विशिष्टता प्रदान करने के लिए भारतीय जेनेरिक कंपनियों को भारत में अपने स्वयं के नैदानिक परीक्षण करने की आवश्यकता होगी, भले ही दवा पहले से ही कहीं और अनुमोदित हो। इसका मतलब जेनेरिक दवाओं को पेश करने में देरी और अधिक लागत होगी। भारत ने प्रस्तावित व्यापार समझौते में ईएफटीए ब्लॉक की इस मांग को खारिज कर दिया है. यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के सदस्य आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड हैं। ट्रिप्स के तहत एक प्रावधान के तहत राष्ट्रों को अनुचित व्यावसायिक उपयोग के खिलाफ नई रासायनिक संस्थाओं के लिए प्रस्तुत अज्ञात परीक्षण डेटा की रक्षा करने की आवश्यकता है। हालांकि, यह डेटा विशिष्टता को अनिवार्य नहीं करता है, पेपर में कहा गया है, भारत स्पष्ट रूप से डेटा विशिष्टता प्रदान नहीं करता है। इसके बजाय, यह पेटेंट अधिनियम की धारा 3(डी) पर निर्भर करता है जो विनियामक अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की गई अज्ञात जानकारी की सुरक्षा करता है। इसमें कहा गया है कि यह प्रावधान एकाधिकार की अवधि नहीं देता है और नियामकों को सार्वजनिक स्वास्थ्य उद्देश्यों के लिए डेटा का उपयोग करने की अनुमति देता है। भारत का तर्क है कि उसका दृष्टिकोण सस्ती दवाओं तक सार्वजनिक स्वास्थ्य पहुंच की सुरक्षा करता है, टीआरआईपी लचीलेपन के साथ संरेखित होता है और घरेलू नवाचार को प्रोत्साहित करता है। श्रीवास्तव ने कहा, भारतीय दृष्टिकोण जेनेरिक दवाओं के त्वरित प्रवेश की अनुमति देता है, सामर्थ्य और पहुंच को बढ़ावा देता है। यह उन सदाबहार प्रथाओं को भी हतोत्साहित करता है जहां मामूली बदलाव पेटेंट संरक्षण का विस्तार करते हैं। डेटा विशिष्टता दवा की कीमतों को बढ़ाएगी, सामर्थ्य को नुकसान पहुंचाएगी। भारत विनियामक अनुमोदन में देरी के लिए स्वचालित पेटेंट एक्सटेंशन की धारणा को भी चुनौती देता है, एकाधिकार के अनुचित विस्तार को रोकने के लिए मामले-दर-मामले मूल्यांकन की वकालत करता है। उन्होंने कहा, भारत सदाबहारता से बचने के लिए पेटेंट आवेदनों की सख्ती से जांच करता है, जहां मौजूदा पेटेंट में मामूली संशोधन एकाधिकार को बढ़ाते हैं, एक अभ्यास जिसे टीआरआईपी द्वारा स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं किया जाता है लेकिन पेटेंट के लिए नए आविष्कारों की आवश्यकता होती है। इसमें कहा गया है कि भारत के पेटेंट योग्यता मानदंड टीआरआईपी के न्यूनतम मानकों से अधिक सख्त हैं, जिसमें केवल खोजों, पारंपरिक ज्ञान और वृद्धिशील नवाचारों जैसे गैर-पेटेंट योग्य विषयों को शामिल नहीं किया गया है। इसमें यह भी कहा गया कि भारत पेटेंट लिंकेज का विरोध करता है, जो विपणन अनुमोदन को पेटेंट स्थिति से जोड़ता है, यह तर्क देते हुए कि यह जेनेरिक प्रतिस्पर्धा को बाधित करता है और आवश्यक दवाओं तक पहुंच को प्रतिबंधित करता है।

अमृत और मृत्यु - दोनों ही इस शरीर में स्थित हैं. मनुष्य मोह से मृत्यु को व सत्य से अमृत को प्राप्त होता है

"यदि किसी का स्वभाव अच्छा है तो उसे किसी और गुण की क्या जरूरत है? यदि आदमी के पास प्रसिद्धि है तो भला उसे और किसी श्रृंगार की क्या आवश्यकता है?" -चाणक्य

आइसोसोरबाइड मोनोनिट्रेट टैबलेट के लिए यूएसएफडीए की मंजूरी मिली

अहमदाबाद: जायडस लाइफसाइंसेज लिमिटेड को आइसोसोरबाइड मोनोनिट्रेट एक्सटेंडेड-रिलीज , टैबलेट यूएसपी, 30 मिलीग्राम, 60 मिलीग्राम और 120 मिलीग्राम के निर्माण और विपणन के लिए संयुक्त राज्य खाद्य एवं औषधि प्रशासन (यूएसएफडीए) से अंतिम मंजूरी मिल गई। आइसोसोरबाइड मोनोनिट्रेट का उपयोग एक निश्चित हृदय रोग (कोरोनरी धमनी रोग) वाले रोगियों में सीने में दर्द (एनजाइना) को रोकने के लिए किया जाता है। उत्पाद का निर्माण भारत के अहमदाबाद एसईजेड में समूह की फॉर्मूलेशन विनिर्माण सुविधा में किया जाएगा । समूह के पास अब 388 अनुमोदन हैं और वित्त वर्ष 2003-04 में फाइलिंग प्रक्रिया शुरू होने के बाद से अब तक 460 से अधिक एएनडीए दाखिल किए जा चुके हैं।

वजन घटाने वाली दवाओं के उपयोग में तेजी से वृद्धि

लॉस एंजिल्स: अमेरिकी किशोरों की एक छोटी लेकिन तेजी से बढ़ती संख्या ने पिछले साल नोवो नॉर्डिस्क की वजन घटाने वाली दवा वेगोवी के साथ इलाज शुरू किया, जो बाल चिकित्सा मोटापे की रिकॉर्ड दरों को संबोधित करने के लिए एक शक्तिशाली नया उपकरण है स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी कंपनी कोमोडो हेल्थ द्वारा संकलित अमेरिकी बीमा दावों के आंकड़ों के अनुसार, 2023 के पहले 10 महीनों में, मोटापे से पीड़ित 12 से 17 वर्ष की आयु के 1,268 बच्चों ने वेगोवी लेना शुरू कर दिया। 2022 में, केवल 25 बच्चों को यह दवा दी गई थी, जिसे उस वर्ष दिसंबर तक किशोर उपयोग के लिए अमेरिकी मंजूरी नहीं मिली थी। एक महीने बाद, प्रभावशाली अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स ने सिफारिश की कि मोटापे से ग्रस्त बच्चों को 12 साल की उम्र से ही वजन घटाने वाली दवाएं दी जाएं। मिशिगन, मिनेसोटा और विस्कॉन्सिन सहित पांच राज्यों से रॉयटर्स द्वारा प्राप्त मेडिकेड डेटा वेगोवी के उपयोग में समान वृद्धि दर्शाता है। कुल संख्या कम बनी हुई है, जनवरी 2022 से पांच राज्यों में कम से कम 464 बच्चों को दवा दी जा रही है। इसमें स्वास्थ्य बीमा के बिना खरीदे गए नुस्खे, या टाइप 2 मधुमेह के लिए दो समान उपचारों का ऑफ-लेबल उपयोग, नोवो से ओजेम्पिक शामिल नहीं हैं। और एली लिली से मौन्जारो । फिर भी, संघीय अनुमानों के अनुसार, वे बाल्टी में एक बूंद हैं क्योंकि लगभग 20 प्रतिशत अमेरिकी बच्चे, या लगभग 14.7 मिलियन, मोटापे से ग्रस्त हैं। लेकिन डेटा से पता चलता है कि परिवारों में वेगोवी को अपनाने की इच्छा बढ़ रही है, जो मोटापे के लिए पहला अत्यधिक प्रभावी उपचार है, सर्जरी के बिना। दीर्घकालिक जोखिमों और लाभों पर सीमित डेटा के साथ, साप्ताहिक इंजेक्शन के उपयोग में बड़ी लागत शामिल हो सकती है। मैं जहां भी संभव हो इन दवाओं का उपयोग करता हूं। वयस्कों के विपरीत, जहां यह एक बचाव अभियान की तरह है, हम बच्चों और किशोरों के साथ बीमारी को रोकने की अधिक संभावना रखते हैं,ृ सैन में अलामो सिटी हेल्दी किड्स एंड फैमिलीज के चिकित्सा निदेशक डॉ. सुजैन क्यूडा ने कहा। एंटोनियो, टेक्सास। कूडा बाल चिकित्सा मोटापे पर नोवो नॉर्डिस्क के सलाहकार थे। पहले के वर्षों में, बहुत कम संख्या में किशोरों को नोवो का सैक्सेंडा निर्धारित किया गया था, जिसे 2014 में वयस्कों के वजन घटाने के लिए और 2020 में किशोरों के लिए अनुमोदित किया गया था। सैक्सेंडा वेगोवी की तरह भूख को कम करने के लिए काम करता है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप औसतन कम वजन कम होता है . दोनों उपचारों के एक वर्ग से संबंधित हैं जिन्हें जीएलपी-1 एगोनिस्ट के नाम से जाना जाता है। कोमोडो डेटा शो के अनुसार, 2023 के पहले 10 महीनों में 378 किशोरों को सक्सेंडा निर्धारित किया गया था। यह 2022 में दवा का उपयोग शुरू करने वाले 567 रोगियों से कम था। 2018 से 2021 तक, 266 किशोरों को नए सक्सेंडा नुस्खे प्राप्त हुए। ओकलैंड, कैलिफोर्निया के बिली स्मॉल जूनियर ने कहा कि वह और उनका परिवार शुरू में अपने 15 वर्षीय बेटे को वेगोवी पर रखने के लिए अनिच्छुक थे। वे मतली, उल्टी और अन्य गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याओं जैसे दुष्प्रभावों के साथ-साथ दीर्घकालिक उपयोग से संभावित अज्ञात जोखिमों के बारे में चिंतित थे। उनका बेटा, बिली स्मॉल III, 5 फुट 9 (1.75 मीटर) का था और उस समय उसका वजन 385 पाउंड (176 किलोग्राम) था। उनके बाल रोग विशेषज्ञ ने चेतावनी दी कि उन्हें टाइप 2 मधुमेह और हृदय रोग विकसित होने का खतरा बढ़ गया है। उन्हें पहले से ही अस्थमा का पता चला था। उनके पिता ने कहा, हमने बिली से पूछा कि वह इसके बारे में कैसा महसूस करता है। वह वास्तव में चाहता था कि उसका वजन कम हो जाए। मार्च 2023 में वेगोवी पर शुरुआत करने के बाद से, बिली ने लगभग 90 पाउंड या अपने शरीर के कुल वजन का 23 प्रतिशत कम कर लिया है। दवा परिवार की राज्य मेडिकेड योजना द्वारा कवर की गई थी। बिली की भूख तेजी से कम हो गई, और उसे शायद ही कभी दुष्प्रभाव का अनुभव हुआ। उन्होंने फिल्मों और बास्केटबॉल खेलों के लिए दोस्तों के साथ जुड़ना शुरू कर दिया और अपने पिता के साथ जिम जाना शुरू कर दिया। बिली स्मॉल जूनियर ने अपने बेटे, जो अब 16 वर्ष का है, के बारे में कहा, उसके आत्मविश्वास पर भारी दबाव था। उसकी जीवन की गुणवत्ता पहले से ही 100 गुना बेहतर है। नोवो और एली लिली दोनों 6 साल की उम्र के बच्चों में अपनी वजन घटाने वाली दवाओं का परीक्षण कर रहे हैं। लिली की दवा, टिरजेपेटाइड, केवल टाइप 2 मधुमेह के लिए मौन्जारो और वजन घटाने के लिए ब्रांड नाम के तहत अमेरिका में वयस्कों के लिए स्वीकृत है। लिली ने कहा कि वह बच्चों या किशोरों में टिरजेपेटाइड की भविष्य की योजनाओं पर टिप्पणी नहीं कर सकती क्योंकि नैदानिक परीक्षण अभी भी जारी हैं। नोवो ने कहा कि दुनिया भर में लगभग 175 मिलियन बच्चे और किशोर मोटापे से ग्रस्त हैं, और कुछ के लिए, कम कैलोरी वाला आहार और बढ़ा हुआ व्यायाम पर्याप्त नहीं हो सकता है। अमे. रिका उन गिने-चुने देशों में से एक है जो युवाओं में वजन कम करने वाली नई दवाएँ आजमा रहा है। सीखा गया कोई भी सबक अन्यत्र स्वास्थ्य अधिकारियों को सूचित कर सकता है। नोवो ने कहा कि दवा को पिछले साल जर्मनी, ब्रिटेन, डेनमार्क और संयुक्त अरब अमीरात में युवाओं के लिए इसी तरह की मंजूरी मिली थी। बीमा कवरेज के बिना, यूएस में वेगोवी की कीमत 1,300 डॉलर प्रति माह तक हो सकती है, अब तक के आंकड़ों से पता चलता है कि जो लोग इसे लेना बंद कर देते हैं, उनमें से अधिकांश अपना खोया हुआ वजन वापस पा लेते हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि जीवन भर इसके उपयोग से बचने के कोई तरीके हैं या नहीं। कोमोडो ने लगभग 20 मिलियन बच्चों, या 12 से 17 वर्ष की आयु की लगभग 80 प्रतिशत अमे. रिकी आबादी से जुड़े स्वास्थ्य बीमा दावों की समीक्षा की। समीक्षा की गई लगभग छह साल की अवधि के दौरान इन रोगियों में, 2.25 मिलियन किशोरों के बीमा दावों में मोटापे का निदान सूचीबद्ध था। विश्लेषण अक्टूबर 2023 तक बंद बीमा दावों का उपयोग करके आयोजित किया गया था। कुछ चिकित्सा विशेषज्ञ सावधानी बरतने का आग्रह करते हैं क्योंकि इस बारे में सबूतों की कमी है कि ये दवाएं विकास को कैसे प्रभावित कर सकती हैं। यूएस प्रिवेंटिव सर्विसेज टास्क फोर्स ने जिन बच्चों को वजन कम करने की आवश्यकता है, उनकी मदद के लिए दवा के बजाय व्यवहार थेरेपी और पोषण संबंधी शिक्षा सहित गहन परामर्श की सिफारिश की। इरविन में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में बाल चिकित्सा के प्रतिष्ठित प्रोफेसर डॉ डैन कूपर ने कहा, ष्हम वास्तव में नहीं जानते कि ये दवाएं बढ़ते बच्चे के संदर्भ में क्या करती हैं।

यूएस एफडीए ने इओवांस की त्वचा कैंसर सेल थेरेपी के लिए त्वरित मंजूरी दी

नई दिल्ली: इओवांस बायोथेराप्यूटिक्स ने कहा कि अमेरिकी स्वास्थ्य नियामक ने उन्नत मेलेनोमा वाले वयस्क रोगियों के लिए अपने सेल थेरेपी के लिए त्वरित मंजूरी दे दी है, यह त्वचा कैंसर के सबसे घातक रूप के लिए अनुमोदित होने वाला पहला ऐसा उपचार है ।ठोस ट्यूमर को लक्षित करने वाली पहली सेल थेरेपी के लिए एजेंसी की हरी झंडी उन रोगियों में उपयोग की अनुमति देती है जिनका पहले अन्य उपचारों से इलाज किया गया है, लेकिन उनका कैंसर शरीर के अन्य हिस्सों में फैल गया है, और सर्जरी से हटाया नहीं जा सकता है। लिफाइलुसेल, जिसे अम्टागवी के नाम से जाना जाता है, एक ट्यूमर व्युत्पन्न इम्यूनोथेरेपी है जो रोगी की अपनी बीमारी से लड़ने वाली सफेद रक्त कोशिकाओं से बनी होती है, जिन्हें टी-कोशिकाओं के रूप में जाना जाता है, जिसमें एक विशिष्ट प्रकार के ट्यूमर-घुसपैठ करने वाले लिम्फोसाइट्स (टीआईएल) होते हैं। अंतरिम सीईओ फ्रेडरिक वोग्ट ने एक कॉन्फ्रेंस कॉल पर कहा कि अम्टागवी को अमेरिका में प्रति मरीज 515,000 डॉलर की सूची कीमत पर बेचा जाएगा। अम्तागवी की त्वरित स्वीकृति 73 रोगियों के वैश्विक अध्ययन से प्राप्त सुरक्षा और प्रभावशीलता डेटा पर आधारित है। इस थेरेपी को अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन की पारंपरिक मंजूरी प्राप्त करने के लिए पुष्टिकरण परीक्षणों की आवश्यकता होगी। सेल थेरेपी मैन्युफैक्चरिंग सेंटर के सह-संस्थापक और सीईओ डॉ. जेसन बॉक ने कहा, टीआईएल थेरेपी के लिए संभावित बाजार बहुत बड़ा है, क्योंकि सभी कैंसर में से 90 प्रतिशत ठोस ट्यूमर होते हैं, जबकि 10 प्रतिशत रक्त कैंसर होते हैं। अध्ययन के आंकड़ों से पता चला है कि अनुशंसित खुराक पर अम्टागवी से उपचारित रोगियों में वस्तुनिष्ठ प्रतिक्रिया दर, उपचार प्रभावशीलता का एक उपाय, 31.5 प्रतिशत थी। ब्रोकरेज जेफरीज के विश्लेषक माइकल यी ने एक नोट में कहा, मंजूरी मिलने के साथ, कंपनी के पास पूर्ण स्वामित्व वाली संपत्ति दुर्लभ है और यह बड़ी फार्मा कंपनियों के लिए एक अच्छा विकल्प होगी जो इसका और भी बेहतर लाभ उठा सकती हैं। थेरेपी का लेबल उपचार-संबंधी मृत्यु दर, लंबे समय तक गंभीर साइटोपेनिया, गंभीर संक्रमण और कार्डियोपल्मोनरी और गुर्दे की हानि के लिए एक चेतावनी के साथ आता है। वोग्ट ने कहा कि कंपनी को नहीं लगता कि बॉक्सिंग चेतावनी का बिक्री पर कोई प्रभाव पड़ेगा और उम्मीद है कि इस साल की दूसरी तिमाही में महत्वपूर्ण राजस्व दर्ज करना शुरू हो जाएगा। बॉक ने कहा, टीआईएल थेरेपी ठोस ट्यूमर वाले रोगियों के लिए एक आशा. जनक विकल्प प्रदान करती है। उन्होंने कहा, सीएआर-टी या अन्य सेल थेरेपी ने अब तक इन कैंसर प्रकारों के इलाज में बड़ी सफलता नहीं दिखाई है। इओवांस थेरेपी के नैदानिक लाभों की पुष्टि के लिए एक अंतिम चरण का परीक्षण भी कर रहा है।

गिलियड साइंसेज ने ठोस ट्यूमर परीक्षणों में कैंसर के इलाज के लिए नामांकन रोक दिया है

बेंगलुरु: गिलियड साइंसेज ने कहा कि ठोस ट्यूमर पर कैंसर की दवा, मैग्रोलिमैब का परीक्षण करने के लिए नामांकन वैश्विक स्तर पर रोक दिया गया था, अमेरिकी नियामक द्वारा मरीजों की मौत के बढ़ते जोखिम के बाद कुछ अध्ययनों को रोक दिए जाने के एक सप्ताह बाद। गिलियड सभी चल रहे परीक्षणों में मैग्रोलिमैब के लाभ-जोखिम की समीक्षा कर रहा है और जल्द से जल्द इस मूल्यांकन पर एक अपडेट प्रदान करेगा, कंपनी ने कहा था कि देर से चरण और अन्य अध्ययनों के विश्लेषण से मृत्यु का खतरा बढ़ गया है। दवा के परीक्षणों पर अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन की रोक के जवाब में। अमेरिकी दवा निर्माता ने यह भी कहा था कि वह सभी प्रकार के रक्त कैंसर पर मैग्रोलिमैब का परीक्षण बंद कर देगा और कोलन और स्तन कैंसर के रोगियों जैसे अन्य अध्ययनों में इसकी सुरक्षा की समीक्षा करेगा। यह दवा एक एंटीबॉडी उपचार है जो सीडी47 नामक एक प्रकार के प्रोटीन को अवरुद्ध करती है, जो क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा विनाश से बचाने में मदद करती है। गिलियड ने 2020 में फोर्टी सेवन इंक की 4.9 बिलियन डॉलर की खरीद के माध्यम से उपचार तक पहुंच प्राप्त की। गिलियड ने एक प्रकार की कीमोथेरेपी के संयोजन में दवा का एक अध्ययन भी बंद कर दिया है, जो कि डिसफंक्शनल से उत्पन्न विकारों के एक समूह के उच्च जोखिम वाले रोगियों में है। जुलाई 2023 में रक्त कोशिकाएं। आई-मैब, इनोवेंट बायोलॉजिक्स, अकेसो उन कंपनियों में से हैं जो कैंसर के लिए दवाओं की एक समान श्रेणी विकसित करना चाहती हैं।

यूएस एफडीए ने एस्ट्राजेनेका के टैग्रिसो-कीमो कॉम्बो को मंजूरी दी

नई दिल्ली: एक प्रकार के फेफड़ों के कैंसर के इलाज के लिए कीमोथेरेपी के साथ एस्ट्राजेनेका की ब्लॉकबस्टर कैंसर दवा टैग्रिसो के संयोजन को अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) द्वारा मंजूरी दे दी गई है, कंपनी ने एक बयान में कहा। एस्ट्राजेनेका ने कहा कि इस दवा का उपयोग एक प्रकार के उन्नत फेफड़ों के कैंसर वाले वयस्कों के इलाज के लिए किया जाएगा, उन्होंने कहा कि एफडीए की मंजूरी उन परीक्षणों पर आधारित थी, जिन्होंने मीडियन प्रोग्रेसिव-फ्री सर्वाइवल (पीएफएस) को लगभग नौ महीने तक बढ़ा दिया था। पीएफएस शब्द का तात्पर्य यह है कि इलाज के बाद बीमारी खराब हुए बिना कोई मरीज कितने समय तक जीवित रहता है। चरण 3 परीक्षण, जिसे FLAURA2 कहा जाता है, से पता चला कि टैग्रिसो में कीमोथेरेपी जोड़ने पर, अकेले टैग्रिसो की तुलना में रोग के बढ़ने या मृत्यु का जोखिम 38 प्रतिशत कम हो गया था। नियामक की ओर से यह मंजूरी अक्टूबर में दवा प्राथमिकता समीक्षा की अनुमति देने के बाद आई है। फेफड़ों के कैंसर की दवा टैग्रिसो की बिक्री 2023 में 9 प्रतिशत बढ़ी, वर्तमान में इसे अमेरिका, यूरोपीय संघ, चीन और जापान सहित 100 से अधिक देशों में मोनोथेरेपी के रूप में अनुमोदित किया गया है।

4 वर्ष तक घर बैठे यह समाचार पत्र पढ़ने के लिये हमारे पंजाब नैशनल बैंक के **खाता संख्या 1824002100120081,** IFSC Code - PUNB0182400 जो कि मैडीकल दर्पण के नाम से है, में रू० 500/- जमा कर अपना पूरा पता हमारे फोन नं०- 09045029158 पर SMS कर दें।

मैडीकल दर्पण मीडिया हाऊस की ओर से जन्मदिन पर ढेर सारी शुभकामनाएं

SHRI SUNIL KUMAR BANSAL JI	AGRA	20-03-1968	9412652474
SHRI KAMAL SINGH BAGHEL JI	AGRA	21-03-1979	7983010302
SHRI ABHAY KUMAR A. SANCHETI JI	WARDHA	21-03-1982	9021043699
SHRI NARENDRA GATKINE JI	NAGPUR	21-03-1975	9405138902
SHRI ASHISH SHARMA JI	AGRA	22-03-1979	9837279162
SHRI MAHESH BHAI G. PATEL JI	BANASKANTHA	23-03-1956	9998960399
SHRI CHETAN VYAS JI	VADODARA	23-03-1966	9824073433
SHRI HARSHAL BHAREKAR JI	PUNE	23-03-1986	9503850155
DR. AMIT CHAUDHARY JI	BULANDSHAHR	23-03-1994	7895156670
DR. MAHESH SHARMA JI	BULANDSHAHR	25-03-1992	9759830704
Shri. M.K. MATH JI	BIJAPUR	26-03-1967	9448689295
SHRI PRSHANT CHANDEWAR JI	WARDHA	27-03-1975	9423605604
SHRI SACHIN MAHAJAN JI	JALGAON	27-03-1986	9604508080
Shri ATUL JAIN JI	SONIPAT	31-03-1973	8146093465
SH. SAVENDER SINGH JI	BULANDSHAHR	01-04-1966	9557912074
SADDAM HUSAIN JI	BULANDSHAHR	02-04-1994	8057764142
SHRI VIJAY RATHI JI	PUNE	03-04-1970	9890002088
SHRI HEMANT P.BENDALE JI	JALGAON	05-04-1968	9923484882
SHRI ANIL KUMAR GUPTA JI	AGRA	05-04-1968	9808323219
SHRI LAKHICHAND JAIN JI	JALGAON	05-04-1972	9823060465
SHRI DEEPAK BADKE JI	SATARA	05-04-1975	9923477763
SHRI MANOJ KUMAR MITTAL JI	AGRA	06-04-1975	9412331049
MOHD. KADIR SHEKH	PUNE	06-04-1975	8087930346
SHRI MANISH SAKODE JI	NAGPUR	06-04-1982	9326604835
SHRI ASHISH R. AGARWAL JI	GONDIA	06-04-1982	8552839533
MOHD.RAHUL KHAN	ALWAR	06-04-1999	7240300354
SHRI SANTOSH DEVIDAS TAMBE JI	PUNE	07-04-1977	9860414062
SHRI KISHOR SHARMA JI	PUNE	07-04-1980	8975046079
MOHD. IRFAN KHAN	ALWAR	07-04-1995	9001647086
SHRI SANDEEP BORA JI	NASHIK	08-04-1971	9923280219
SHRI TAMBE DEVIDAS JI	PUNE	08-04-1986	9860484048
SHRI BALKRISHNA B. SONAWANE JI	JALGAON	08-04-1975	9423915795
SHRI ABHAY K. GUGALE JI	PUNE	09-04-1974	9730449555
SHRI KISHOR KUMAR JI	AGRA	10-04-1971	9837063302
SHRI SHRENIK GANDHI JI	PUNE	12-04-1968	7719973776
SHRI NARESH KUMAR JI	AGRA	12-04-1982	8126423671
SHRI ADHIKRAOA. PATIL JI	SATARA	13-04-1972	9881191904
MR. PATITAPABAN PRADHAN JI	ANGUL	14-04-1971	9438755750
SHRI JAGDISH PALOD JI	JALGAON	14-04-1958	9890032427
SHRI KAPIL AHER JI	NASHIK	14-04-1986	9766880970
MR. ROHIT KUMAR JI	MEERUT	15-04-1988	8958226060
SHRI AVNISH BORSE JI	NASHIK	15-04-1989	9881701142
SHRI ANANDA PRADHAN JI	BARGARH	17-04-1985	9778524123
SHRI DEEPAK AHUJA JI	NAGPUR	19-04-1975	9527261851
SHRI RAJNESH KUMAR KATARYA JI	FARRUKHABAD	20-04-1996	9839441078

हॉस्पिटल को किया सील

मढोरा (बिहार)– धेनुकी में फर्जी हॉस्पिटल मां अम्बे को सील कर दिया गया है। यह कार्रवाई मढौरा बीडीओ, थानाध्यक्ष व प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी की मौजूदगी में की गई। मां अम्बे नामक हॉस्पिटल में दो दिनों पहले डिलीवरी के दौरान एक महिला व उसके नवजात की मौत हो गई थी। जांच में पता चला कि उनका ऑपरेशन झोलाछाप डॉक्टर ने जबरन किया था। इस मामले को लेकर बाद में काफी बवाल भी मचा था। मृतका के परिजनों ने उक्त हॉस्पिटल के फर्जी डॉक्टर अनुज कुमार व अन्य के खिलाफ पुलिस थाने में केस दर्ज करवा दिया था। इस घटना के बाद मढौरा एसडीओ डॉ. प्रेरणा सिंह के निर्देश पर बीते दविस थानाध्यक्ष, बीडीओ व मढौरा रेफरल अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी की मौजूदगी में उक्त फर्जी हॉस्पिटल को सील कर दिया गया। इधर स्थानीय रेफरल अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. कृष्ण चंद्रा ने नोटिस जारी किया है। नोटिस में सभी निजी हॉस्पिटल, नर्सिंग होम व जांच घरों के संचालकों से जांच के लिए जरूरी काग. जातों की मांग की है।

Ceremony & Farewell

Hyderabad- Bhagwan mahavir school of nursing celebrated 17th batch G.N.M student lamp lighting and capping ceremony and 13th batch farewell.The chief guest was sri Mahendra Ranka chairman of mahavir hospital and research center and guests of honour were Mr Sunil Jain , Mr sushil sancheti and Dr .Gisulal jainPrincipal angel bethsheba , tutors kiran mayee , Blessy , jyotsna , 25 seats filled for academic year 2023 - 2024. We provide free seats every year for 18 students and encourage rural background students to get admission in our college.in a press release said by dr Ghisulal Jain trustee. **- Mahavir Hospital & Reserch Centre Masab Tank, Ghisulal Jain, Mob- 9030337013, Hyderabad**

फाइलेरिया की दवा खाते ही बच्चों की तबीयत बिगड़ी

भागलपुर (बिहार)– फाइलेरिया की दवा खाने से भागलपुर के सरकारी स्कूल में बच्चों की तबीयत अचानक खराब हो गई गई। करीब एक दर्जन बच्चों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। इससे परिजनों में हडकंप मचा हुआ है। भागलपुर के मध्य विद्यालय उर्दू बाजार में फाइलेरिया उन्मूलन के लिए बच्चों को दवा खिलायी जा रही थी। बताया गया कि दवा खाने के बाद करीब आधा दर्जन से अधिक बच्चों फाइलेरिया का स्वास्थ्य खराब हो गया। बीमार बच्चों को इलाज के लिए मायागंज अस्पताल लाया गया। अस्पताल में अभिभावकों, शिक्षक व दूसरे छात्रों की भीड़ लग गई। परिजनों की शिकायत है कि बच्चे दवा खाते ही असजह महसूस करने लगे। कई बच्चों को सांस लेने में परेशानी महसूस होने लगी और वो जमीन पर ही अचेत होकर गिर पड़े। बच्चों की तबीयत बिगडने की सूचना पर प्रशासन की टीम भी मौके पर पहुंची। बताया गया कि सरकारी अभियान के तहत फाइलेरिया की दो दवा एलबिंडाजोल और डीईसी सभी बच्चों को दी गई थी। बता दें कि फाइलेरिया उन्मूलन के लिए 10 से 16 फरवरी तक अभियान चलाया जा रहा है। निर्देश में कहा गया था कि बच्चों को फाइलेरिया रोधी दवा मध्याह्न भोजनोपरांत ही दी जाए। भागलपुर के मध्य विद्यालय उर्दू बाजार में फाइलेरिया उन्मूलन के लिए बच्चों को दवा खिलायी जा रही थी। बताया गया कि दवा खाने के बाद करीब आधा दर्जन से अधिक बच्चों फाइलेरिया का स्वास्थ्य खराब हो गया। बीमार बच्चों को इलाज के लिए मायागंज अस्पताल लाया गया। अस्पताल में अभिभावकों, शिक्षक व दूसरे छात्रों की भीड़ लग गई। परिजनों की शिकायत है कि बच्चे दवा खाते ही असजह महसूस करने लगे। कई बच्चों को सांस लेने में परेशानी महसूस होने लगी और वो जमीन पर ही अचेत होकर गिर पड़े। बच्चों की तबीयत बिगडने की सूचना पर प्रशासन की टीम भी मौके पर पहुंची। बताया गया कि सरकारी अभियान के तहत फाइलेरिया की दो दवा एलबिंडाजोल और डीईसी सभी बच्चों को दी गई थी। बता दें कि फाइलेरिया उन्मूलन के लिए 10 से 16 फरवरी तक अभियान चलाया जा रहा है। निर्देश में कहा गया था कि बच्चों को फाइलेरिया रोधी दवा मध्याह्न भोजनोपरांत ही दी जाए।

सीएम फ्लाइंग ने मारा छापा

गुरुग्राम– हरियाणा सीएम फ्लाइंग स्क्वॉड और हेल्थ डिपार्टमेंट की ज्वाइंट टीम ने गुरुग्राम जिले की मानेसर तहसील के नाहरपुर कासन गांव के एक मकान में छापेमारी की और अवैध रूप से चलाए जा रहे एक नर्सिंग होम का भंडाफोड़ किया। एक अधिकारी ने बताया, स्क्वॉड ने नर्सिंग होम के ऑपरेटर को भी पकड़ लिया जो एक जीएनएम है। वह खुद को डॉक्टर बताकर काम कर रहा था। उन्होंने बताया कि मानेसर पुलिस थाने में संचालक के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है। पुलिस के मुताबिक, कासन में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के मेडिकल ऑफिसर डॉ. संदीप गुप्ता ने अपनी शिकायत में कहा कि उन्हें सीएम फ्लाइंग स्क्वॉड के गुरुग्राम ऑफिस द्वारा सूचित किया गया था कि नाहरपुर कासन में एसएस नर्सिंग होम का संचालक डॉक्टर की उपस्थिति के बिना ही लिखता है कि मरीजों को अमुक टेस्ट कराने होंगे। अजीब डिमांड को लेकर आए दिन लड़ाई-झगड़ा होता रहता था। उन्होंने कहा कि इस नर्सिंग होम का रजिस्ट्रेशन भी किसी अन्य स्थान से है। पुलिस ने बताया कि सूचना के आधार पर मुख्यमंत्री के उड़न दस्ते और स्वास्थ्य विभाग के एक संयुक्त दल ने एसएस नर्सिंग होम पर छापा मारा। दल को वहां पर चरखी दादरी जिले के बरला गांव का रहने वाला सौरभ सिंह मिला जो नर्सिंग होम का संचालक था। सीएम फ्लाइंग स्क्वॉड के निरीक्षक हरीश कुमार ने बताया कि पूछे जाने पर वह वैध दस्तावेज या नर्सिंग होम संचालन की कोई अनुमति नहीं दिखा सका। उसने वर्ष 2023 का रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र पेश किया जो कासन गांव के पते पर रजिस्टर्ड था। डॉ. गुप्ता ने शिकायत में कहा, 'पूछताछ में सौरभ ने बताया कि उसने दो चिकित्सकों, एमबीबीएस डॉ चंचल सिंह दासिल और बीएएमएस डॉ हिमानी को नियुक्त किया था लेकिन छापेमारी के समय दोनों नर्सिंग होम में उपलब्ध नहीं थे। एक मेज पर उमेश और पूनम नाम के दो मरीजों के पर्चे मिले जिन पर नर्सिंग होम संचालक ने डॉ. हिमानी की मुहर लगाई थी।' उन्होंने कहा, 'जब उससे पर्चे पर चिकित्सीय सलाह देने के संबंध में वैध डिग्री मांगी गई तो वह कोई डिग्री नहीं दिखा सका। नर्सिंग होम का पंजीकरण भी दूसरी जगह का था। वह मरीजों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहा था।' पुलिस ने बताया कि डॉ. गुप्ता की शिकायत के बाद मानेसर पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई। जांच अधिकारी उप निरीक्षक बलराज सिंह ने बताया कि इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और नर्सिंग होम संचालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्होंने कहा, 'हम आरोपी से पूछताछ कर रहे हैं और आगे की जांच जारी है।'

आवश्यक सूचना

इस बात की शिकायत लगातार आ रही है कि औषधि विक्रेताओं को तथाकथित पुलिस अधिकारी दवाओं की एक सूची भेज कर उस सूची के आधार पर दवा की मांग कर रहे हैं। साथ ही यह सूचना दी जा रही है कि आपके पास गलती से 10000 का भुगतान ऑनलाइन कर दिया गया है। आप अपनी दवा की कीमत लेकर बाकी धनराशि तत्काल वापस कर दें। इसके पहले कि औषधि विक्रेता संदिग्ध भुगतान प्राप्त होने को लेकर संतुष्ट हो पाए, उसपर पैसा वापसी का दबाव बनाया जाना शुरू कर दिया जा रहा है। व्हाट्सएप कच में वर्दी धारी पुलिस अधिकारी की फोटो और योजनाबद्ध तरीके से बनाए गए दबाव से व्यापारी भयभीत और आतंकित किया जा रहा है। आपको किसी भी प्रकार से भयभीत और आतंकित नहीं होना है। आपके पास ऐसी कोई भी कॉल या व्हाट्सएप पर दवा की सूची प्राप्त होती है तो आपको तत्काल यह 4 काम करने हैं।1. दवा की मांग करने वाले व्यक्ति को फोन पर जवाब देना है कि दवा के लिए डॉक्टर का पर्चा भेजिए। 2. पैसा वापस मांगने पर आप उससे उसका बैंक अकाउंट डिटेल मांगिए। उससे स्पष्ट कहिए कि हम मोबाइल से भुगतान नहीं करते। 3. यदि बार-बार कॉल कर रहा है अथवा व्हाट्सएप कर रहा है तो उसे ब्लॉक कर दीजिए। 4. उसके द्वारा की जा रही बातचीत को रिकॉर्ड कीजिए और किए गए व्हाट्सएप मैसेज को स्क्रीनशॉट बनाकर सुरक्षित कीजिए। घटना की सूचना जल्द से जल्द संगठन को दीजिए।

–महेन्द्र गुप्ता, मो० 9670552710, केमिस्ट एंड कास्मेटिक वेलफेयर एसोसिएशन, जौनपुर

घरेलू नुस्खे

प्राकृतिक घरेलू उपचार ऐसे इलाज हैं जो घर में आसानी से उपलब्ध वस्तुओं से तैयार होते हैं, जैसे कि फल, सब्जियां, घास, मसालों और जड़ी बूटियों इत्यादी से। ये पदार्थ ऐसी चीजें हैं जो आम तौर पर रोजाना हमारे सामने आती हैं। आम बीमारियों से निपटने के लिए इस प्रकार के उपचार हमारी रसोई में उपलब्ध वस्तुओं से तैयार करना आसान है। ऐसी वस्तुओं के कुछ सामान्य उदाहरण हैं – एप्पल का सिरका, लहसुन, दही, एलोवेरा, बोरिक एसिड, फोलिक एसिड, टमाटर, कच्चे प्याज, चाय के पेड़ का तेल, बादाम, दालचीनी, नींबू का रस, नट्स, अंडे, हल्दी, ग्रीन टी, बेकिंग सोडा, प्राकृतिक शहद इत्यादि।

घरेलू उपचार का उपयोग किसके लिए किया जाता है?– घरेलू उपचारों की एक आम विशेषता यह है कि आमतौर पर उन्हें एक सामान्य व्यक्ति द्वारा भी उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए किसी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होती हैं, बशर्ते उपयोग की उचित विधि का ज्ञान प्राप्त किया गया हो। उपचार की विधि के लिए आपको कोई रॉकेट साइंस पढ़ने की जरुरत नहीं हैं, आपको जो बीमारी ठीक करनी है उसका उपचार इस वेबसाइट पर उपलब्ध विस्तृत घरेलू उपचार शृंखला में देखिए और उसका इस्तेमाल कीजिए। यह सुविधा आपको अद्वितीय और आनंददायक लगती है क्योंकि आप अपने आप को ठीक करने में सक्षम हैं। इनमें कुछ औषधीय गुण हैं इसलिए इनका सामान्य बीमारियों के उपचार में इस्तेमाल किया हैं। कुछ सामान्य बीमारियों का इलाज किया जा सकता है जैसे – मुंहासे और अन्य त्वचा की स्थितियाँ जैसे खुजली और दाद, रूसी, बालों का झड़ना, यीस्ट संक्रमण, सिरदर्द, पेट दर्द, बुखार, श्वसन संक्रमण जैसे कि आम सर्दी जुकाम और फ्लू, गठिया, कब्ज, अवसाद, मोटापा, दस्त आदि। **घरेलू उपचार किस प्रकार अपना कार्य करते हैं?** अधिकांश घरेलू उपचार में निहित सामग्री विभिन्न तरीकों से जीवों के कारण होने वाले रोगों का निवारण करती है जैसे कि :– ये उपचार सूक्ष्म जीवों को मारते हैं या इनके गुणन को रोकते हैं। वे महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को ब्लॉक या उनमें हस्तक्षेप करते हैं, जो सूक्ष्मजीवों के अस्तित्व को जन्म दे सकती हैं उदाहरण के लिए, वे कवक में सेल दीवार के निर्माण को रोक देते हैं जिससे यीस्ट संक्रमण हो सकता है। वे सूक्ष्म जीवों के जीवित रहने के लिए अनुकूल वातावरण नहीं बनने देते हैं। वे प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करके भी शरीर को सूक्ष्म जीवों से लड़ने में सक्षम बनाते हैं। **घरेलू उपचार के फायदे**–हाल के दिनों में, विशेष रूप से इंटरनेट के आ जाने से, प्राकृतिक उपचार अधिक आसानी से घर बैठे उपलब्ध तथा लोकप्रिय हो गए हैं। घरेलू उपचार के कई फायदे हैं, इसी कारण सदियों से हमारी दादी नानी के नुस्खों के रूप में ये घरेलू एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचते रहे हैं। **कुछ प्रमुख फायदे निम्नलिखित हैं :–** घरेलू उपचार का प्रयोग करना और तैयार करना सरल है। किसी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है। कोई भी उन्हें तैयार कर सकता है और प्रभावी ढंग से उनका उपयोग कर सकता है। घरेलू उपचार के कम दुष्प्रभाव हैं और यदि हैं भी तो ये बहुत हल्के होते हैं। घरेलू उपचार सामान्यतया कोई ऐसा रसायन नहीं होता जो शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है। घरेलू उपचार सस्ते और आसानी से मिलते हैं। वे किसी के किचन, खेत में या सस्ती दरों पर आसानी से बाजार से लें सकते हैं। कई बीमारियों में घरेलू उपचार अधिक प्रभावी होते हैं। एक ही घरेलू उपचार का कई प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

NOTHING IS IMPOSSIBLE EVERYTHING IS POSSIBLE

Contract Research manufacturer
In Quality and state of Art sections of-
AYURVEDIC AYUSH MARK PRODUCTS
TABLET | CAPSULES | OIL | BHASMA | SYRUP
COSMECEUTICALS
SERUM | PSORIASIS | VITILIGO | SKIN CARE | HAIR CARE
ALLOPATHIC
TABLET | CAPSULE | OINTMENT
NUTRACEUTICALS
Rajani Healthcare Products
Office Address: Purva Complex, Sadashiv Peth Pune 411 030, Maharashtra India
Plant: E-18/1, Jejuri MIDC Tel: Purander Dist: Pune Maharashtra India 412 303, www.rajanipharma.com
pharma789@gmail.com, export.rhcp@gmail.com, info@rajanipharma.com, business@rajanipharma.com
+91 20 24471007 +91 20 24473132 +91 9823096996 +91 8793340533 +91 9168316618 +91 9604639665

गुटखा तंबाकू खाना कैसे छोड़े

तम्बाकू (तंबाकू) गुटखा एक ऐसा जहर है जो सेवन करने वाले व्यक्ति को धीरे-धीरे मारता है। लोग तम्बाकू गुटखा का सेवन शौक में शुरू कर देते हैं लेकिन बाद में ये शौक लत में बदल जाता है। चाहते हुए भी आपको इस लत से छुटकारा नहीं मिल पाता। तम्बाकू गुटखा उत्पादों का सेवन अनेक रूप में किया जाता है, जैसे बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, जर्दा, खैनी, हुक्का, चिलम। तम्बाकू जैसे जहर से दूर रहने के लिए आपको कुछ उपाय और तरीके अपनाने जरूरी हैं। इन्हीं नुस्खों की मदद से आप तम्बाकू और गुटखे की लत को दूर कर पाएंगे। हम आपको तम्बाकू गुटखा छोड़ने के घरेलू उपाय, तरीके और नुस्खे बता रहे हैं। इन उपायों की मदद से आप तम्बाकू व गुटखे की लत को आसानी से छोड़ सकते हैं। अगर आप गुटखा तम्बाकू छोड़ना चाहते हैं तो छोड़ने का एक समय तय करें और अपने फैसले पर अड़े रहें। बिना समय तय किए कभी भी तंबाकू गुटखा न छोड़ें, क्योंकि बिना कोई प्लान बनाए आप आसानी से पुरानी आदतों में वापस जा सकते हैं। तो छोड़ने का एक समय तय करें, लेकिन अपने प्लान में कभी भी इतनी सख्ती न रखें। इस बात का खुद को एहसास दिलाएं कि आप कितना इस लत के आदी हैं और फिर उस हिसाब से अपना प्लान तैयार करें। प्लान तैयार करें और इसके बदलें क्या करेंगे यह भी सोचें। अगर आप काफी समय से तंबाकू गुटखा चबा रहे हैं तो धीरे-धीरे लत को कम करने के लिए खुद को समय दें और छोड़ने वाले तय समय पर गुटखा तंबाकू खाने की लत को कम कर दें। तंबाकू गुटखा छोड़ने के लिए खुद को कुछ हफ्ते या एक महीने तक का समय दें। तंबाकू गुटखा खाने से मुंह के कैंसर, पेट के कैंसर, गले के कैंसर और खाने की नली के कैंसर हो सकता है। इससे आपको हृदय से संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। तंबाकू गुटखा खाने से दांत पीले, कमजोर और मसूड़े अपनी जगह से पीछे हटते जाते हैं। लगातार गुटखा तम्बाकू खाने से दांत समय से पहले कमजोर होकर जल्दी टूटने लगते हैं और मुंह से संबंधित बीमारियां होने लगती हैं। तंबाकू खरीदने और खाने से रोजाना आपका कुछ कीमती समय बर्बाद हो जाता है। तंबाकू गुटखा खरीदने की जगह आप च्युइंग गम खरीदकर खा सकते हैं। अपने ऐसे दोस्तों के साथ न रहें जो तंबाकू गुटखा खाना पसंद करते हैं। कई लोगों को किसी-किसी जगह या कार्य करते हुए तम्बाकू गुटखा खाने की इच्छा होती है। तो इस इच्छा को पहचाने और इनसे छुटकारा पाने की कोशिश करें। अलग-अलग लोगों को कई तरह से तम्बाकू गुटखा खाने की इच्छा होती है जैसे - बीच रात में उठते हुए या सुबह सोकर उठने के बाद, खाना खाने के बाद या खाना खाने से पहले, वाहन चलाते समय, तनाव में, गुस्से में, बोरियत महसूस होते समय, किसी और को धूम्रपान करते हुए देखना या तम्बाकू व गुटखा खाते हुए देखना, कॉफी या शराब पीते समय, सेक्स के बाद, टीवी देखते समय आदि। अगर आप पूरे दिन में कई बार तम्बाकू गुटखा खाते हैं तो गुटखा तम्बाकू लेने की मात्रा को धीरे-धीरे कम करते जाएं। आपके जो दोस्त तम्बाकू गुटखा खाते हैं उनके साथ न रहें या साथ में खाने के लिए मना कर दें। उस जगह पर न जाएं जहां से आप तम्बाकू गुटखा खरीदते हैं या ऐसी जगह जहां यह सब चीजें मिलती हैं। इस तरह आप अपनी इच्छा पर नियंत्रण लगा पाएंगे। अगर आपको फिर से तम्बाकू गुटखा खाने की इच्छा हो रही है तो अपने परिवार वालों और दोस्तों से सलाह या मदद लें। धीरे-धीरे तम्बाकू गुटखे की मात्रा को कम करने के बाद आखिर में यह सुनिश्चित जरूर करें कि जो समय आपने छोड़ने का सुनिश्चित किया था उस समय में आपने तंबाकू गुटखा खाना छोड़ा है या नहीं। तम्बाकू आपके जीवन की एक ऐसी आदत बन जाती है, जिसे छोड़ना आसान नहीं होता और अपनी तम्बाकू खाने की इच्छा को नियंत्रित करने के लिए समय लगता है।

एचआईवी दवा का स्पेस में किया निर्माण

मुंबई- एचआईवी दवा का स्पेस में निर्माण करने में वैज्ञानिकों को सफलता मिली है। दवा निर्माण की सफलता के बाद अंतरिक्ष यान वापस लौट आया है। यह हैरान कर देने वाली सफलता अमेरिका की एक कंपनी ने पाई है। कंपनी ने स्पेस में एक कैप्सूल भेजा जिसमें एक दवा का क्रिस्टल पृथ्वी की निचली कक्षा में तैयार किया गया था। ये खास क्रिस्टल एचआईवी और हैपिटाइटिस सी के उपचार में काम आने वाली दवा के हैं। अमेरिकी स्टार्टअप वर्दा का कैप्सूल स्पेस से धरती पर आया अमेरिकी स्टार्टअप वर्दा स्पेस इंडस्ट्रीज का एक स्पेस कैप्सूल हाल ही में स्पेस से लौटकर धरती पर आया है। इसमें एक एंटीवायरल ड्रग के क्रिस्टल हैं जो स्पेस में तैयार किए हैं। वर्दा के अनुसार डब्ल्यू 1 (विनेबागो-1) अभियान में कैप्सूल की रीएंट्री के बाद उटाह रेगिस्तान के उठाह टेस्ट एंड ट्रेनिंग रेंज में वह उतरा। अब उसे लॉस एंजे. लिस में पोस्ट मिशन एनालिसिस के लिए ले जाया जाएगा। बताया गया है कि इन क्रिस्टल को स्पेसक्राफ्ट से निकाल कंपनी के साझेदारों को पास तैयार करने के लिए भेजा जाएगा। कंपनी का कहना है कि इस कैप्सूल की पूरी फ्लाइड के दौरान जमा किए गए आंकड़ों को अमेरिकी एयर फोर्स और अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा के साथ शेयर किए जाएंगे। विनेबागो -1 को पिछले साल जून में स्पेस एक्स ट्रांस्पोर्टर-8 अभियान के पेलोड के साथ स्पेस में भेजा गया था। बता दें कि किसी निजी कंपनी के स्पेस कैप्सूल ने रीएंट्री कर सफल प्रयोग पहली बार किया है। इसमें ऐसे पदार्थ रखे हुए थे जो रिटोनाविर नाम के दवा के क्रिस्टल बनाने के लिए काम आते हैं। यह दवा एचआईवी और हैपिटाइटिस सी के उपचार में उपयोग में लाई जाती है। कंपनी का कहना है कि स्पेस में तैयार यह दवा धरती पर तैयार दवा से अलग तरह की होगी। इसके अब परीक्षण किए जाएंगे। यह पृथ्वी की निचली कक्षा में व्यवसायिक माइक्रोग्रैविटी और एक औद्योगिक पार्क बनाने की दिशा में पहला कदम है।

औषधि निरीक्षक को किया सस्पेंड

बड़वानी (मध्यप्रदेश)- औषधि निरीक्षक, बडवानी कमल अहिरवार को सस्पेंड कर दिया गया है। यह कार्रवाई मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुरेखा जमरे ने की। बताया गया है कि यह कार्रवाई शासकीय कार्य के प्रति लापरवाही बरतने तथा अपनी ड्यूटी सही प्रकार से नहीं निभाने के चलते की गई है। सीएमएचओ के अनुसार औषधि निरीक्षक विवेक शर्मा ने प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केन्द्र, रेडकॉस भवन, ओल्ड कलेक्ट्रेट कैम्पस, बड़वानी (मध्यप्रदेश) के नाम से खेरची औषधि विकय अनुज्ञप्ति प्राप्ति के लिए प्रस्तुत आवेदन के कैंसिल आदेश से दुखी होकर उच्च न्यायालय में याचिका दायर की। कोर्ट के निर्णय के बाद विवेक शर्मा ने 15 फरवरी 2023 को अपीलीय आवेदन राज्य शासन के समक्ष प्रस्तुत किया। अपील में उल्लेख किये गये बिन्दुओं पर बिन्दुवार टीप औषधि निरीक्षक बडवानी द्वारा लगभग 7 माह विलंब से प्रस्तुत की गई। इस कारण मामले के समाधान में काफी देरी हुई। वहीं, न्यायालय के समक्ष शासन की छवि भी धूमिल हुई है। उक्त कृत्य के कारण सीएमएचओ डॉ. सुरेखा जमरे ने औषधि निरीक्षक विवेक शर्मा को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। मध्यप्रदेश सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण तथा अपील) नियम 1966 के नियम 9 के अंतर्गत बडवानी के औषधि निरीक्षक कमल अहिरवार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। इस दौरान इनका मुख्यालय कार्यालय उप संचालक, खाद्य एवं औषधि प्रशासन जिला बडवानी रहेगा।

वजन घटाने वाली दवाओं से सिकुड़ सकती हैं मांसपेशियां

मुंबई- वजन घटाने वाली दवा का सेवन करने से पहले विशेषज्ञों की यह राय जानना आप सबके लिए हितकारी हो सकता है। इन दवाओं के सेवन से आपकी मांसपेशियां सिकुड़ सकती हैं। इस बारे में एस्ट्राजेनेका के प्रमुख पास्कल सोरियट ने चेताया है कि वेगा. `वी जैसी लोकप्रिय वजन घटाने वाली दवाओं के इस्तेमाल से मरीजों की मांसपेशियां कम हो सकती हैं। वे बताते हैं कि वेगोवी सहित मोटापे की अन्य दवाएँ आजकल काफी प्रचलन में हैं। इन्हें हजारों लोग इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि हालांकि, फार्मा कंपनियों को अधिक वसा और कम मांसपे. शियों को लक्षित करने वाली दवाएं बनाने के लिए कहा गया है। सोरियट के अनुसार अगर आज किसी दवा के सेवन से आपका वजन कम हो गया है तो आप दवा का सेवन बंद कर देते हैं। ऐसे में आपका वजन फिर से बढ़ जाता है। लेकिन उनकी खोई हुई मांसपेशियाँ इतनी नहीं होतीं, जब तक कि निश्चित रूप से वे जिम नहीं जाते। उन्होंने फार्मा कंपनियों से वजन घटाने वाली दवाओं की गुणवत्ता सुधारने को भी कहा। इससे वे लंबे समय अपना प्रभाव बनाए रख सकेंगी। उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि एस्ट्राजेनेका एक नई और सस्ती, मोटापा घटाने की दवा के निर्माण में जुटी हैं। कोविड वैक्सीन के लिए विख्यात कंपनी ने नवंबर में चीनी बायोटेक कंपनी एक्कोजीन द्वारा विकसित की जा रही एक प्रायोगिक गोली के लिए 1.6 अरब पाउंड तक का सौदा किया। सोरियट ने बताया कि उनकी योजना ऐसी दवा बनाने की है जिनका इस्तेमाल गरीब देशों में भी किया जा सकता है। एस्ट्राजेनेका मोटापे और मधुमेह के इलाज की दवा विकसित कर रहा है।

बच्चों का बिगड़ा स्वास्थ्य

शंभुगंज (बांका, बिहार)- एक्सपायरी दवा पिलाने से आधा दर्जन बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो गया। बच्चों की हालत बिगड़ते देख उनके परिजनों ने उन्हें आसपास के अस्पतालों में दाखिल करवाया। सीएचसी प्रबंधन की लापरवाही से परिजनों और ग्रामीणों में काफी रोष है। गौरतलब है कि स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा छोटे बच्चों को बूस्टर डोज लगाई जा रही हैं। इस क्रम में रामचुआ आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 129 पर एएनएम नीतू भारती, वैक्सीनेटर सहित अन्य कर्मी बच्चों को बूस्टर डोज (खसरा रोधी) लगाने के साथ पीसीएम (पारासिटामोल) ड्रॉप सहित अन्य दवा भी पिलाने का काम कियां दवाई पिलाए जाने के बाद सभी आधा दर्जन बच्चे गहरी नींद सो गए। जब सात-आठ घंटे बीत जाने के बाद भी बच्चों में कुछ हलचल नहीं हुई तो उनके परिजन घबरा गए। शोर की आवाज सुन अन्य लोग भी मौके पर पहुंचे। जब पीसीएम ड्रॉप पर नजर पड़ी तो पता चला कि यह दवा दिसंबर 2023 में ही एक्सपायर हो चुकी थी। एक्सपायरी दवा पिलाए जाने की बात से बच्चों के परिजन घबरा गए। कोई अपने बच्चों को लेकर तारापुर तो कोई भागलपुर पहुंचा। ग्रामीणों ने इस लापरवाही के लिए अस्पताल प्रभारी और स्वास्थ्य प्रबंधक से शिकायत की। ग्रामीणों ने अस्पताल की लापरवाही की जांच कर दोषी पर कार्रवाई करने की बात कही। इस संबंध में एएनएम नीतू भारती ने बताया कि उक्त केंद्र पर बूस्टर डोज देने का काम सरलतापूर्वक किया गया। पीसीएम ड्रॉप वैक्सीनेटर द्वारा दिया गया है। दवा एक्सपायर है या नहीं, यह वैक्सीनेटर बता सकते हैं। वहीं, अस्पताल प्रबंधक यशराज और अस्पताल प्रभारी डॉ. अजय शर्मा ने कोई जवाब नहीं दिया।

भारतीय बाजार में सर्वो-सी मैकेनिकल वेंटिलेटर लॉन्च किया

मुंबई: गेटिंगे ने भारतीय बाजार में अपने अत्याधुनिक सर्वो-सी मैकेनिकल वेंटिलेटर के लॉन्च की घोषणा की। सर्वो-सी को बाल चिकित्सा और वयस्क दोनों रोगियों की विविध श्वसन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो फेफड़ों-सुरक्षात्मक चिकित्सीय उपकरण प्रदान करता है। यह लॉन्च भारत भर के अस्पतालों के लिए उन्नत स्वास्थ्य सेवा समाधानों को सुलभ और किफायती बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ती लागत के साथ, सुरक्षित, उच्च-गुणवत्ता और टिकाऊ समाधानों में निवेश पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। गेटिंग के सर्वो-सी, 50 से अधिक वर्षों के सर्वो प्रदर्शन से प्रेरित होकर, श्वसन सहायता को सरल बनाना है, यह सुनिश्चित करना है कि भारत में अस्पतालों को किफायती मूल्य पर अत्याधुनिक उपकरणों तक पहुंच हो। अरुणा नायक , प्रबंध निदेशक, गेटिंग इंडिया, ने टिप्पणी की, "गहन देखभाल इकाई में, रोगी की सहज सांस लेने की यात्रा में रुकावटों को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। सर्वो-सी, इनवेसिव से नॉन-इनवेसिव वेंटिलेशन, हाई फ्लो थेरेपी से वीनिंग तक अपने निर्बाध संक्रमण के साथ, इष्टतम रोगी परिणामों के लिए एक सुचारू वर्कफ्लो सुनिश्चित करता है। श्वसन उपचार मॉड्यूलर घटक भाग स्मार्ट बेड़े प्रबंधन की सुविधा प्रदान करते हैं, मालिकाना डिस्पोजल की आवश्यकता के बिना अपटाइम और लागत दक्षता सुनिश्चित करते हैं। CO2 मॉनिटरिंग और सर्वो कम्पास जैसी सुविधाएँ मात्रा और दबाव लक्ष्यों को देखने में योगदान करती हैं, फेफड़ों की यांत्रिकी में वास्तविक समय और पूर्वव्यापी अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं और गैस विनिमय. नायक ने आगे जोर देकर कहा, हमारा उद्देश्य आईसीयू को चालू रखकर और उन्हें अपने मरीजों की आत्मविश्वास से देखभाल करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करके भारत में स्वास्थ्य पेशेवरों का समर्थन करना है।

मरीजों को मिलेगी एयर एंबुलेंस की सुविधा

प्राप्त समाचार के अनुसार उत्तर प्रदेश के मरीजों को एयर एंबुलेंस की सुविधा देने की तैयारी है, इसकी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इससे मरीजों को तत्काल एक शहर से दूसरे शहर पहुंचाया जा सकेगा। स्वास्थ्य विभाग की ओर से एयर एंबुलेंस कंपनियों से करार किया जाएगा। इससे एयर एंबुलेंस का खर्चा तय कर दिया जाएगा स्वास्थ्य विभाग की रणनीति है कि एयर एंबुलेंस कंपनियों से करार करके दूरी और समय के हिसाब से दर तय कर दी जाए। ताकि यहां भर्ती गंभीर मरीज को दूसरे शहर में शिफ्ट करने में सुविधा रहे। स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. ब्रजेश राठौर ने बताया कि एयर एंबुलेंस सुविधा शुरू होने से प्रदेश के मरीजों के साथ ही आसपास के प्रदेश के मरीजों को भी यहां ले आने में सहूलियत मिलेगी। इससे संबंधित प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजा गया है। एसजीपीजीआई में करीब तीन साल पहले इमरजेंसी ब्लॉक के बगल में एयर एंबुलेंस के लिए रनवे बनाने की जगह चिह्नित की गई है। हालांकि अभी तक यह परियोजना शुरू नहीं हो पाई है। इसी तरह केजीएमयू के ट्रामा फेज-2 की परियोजना में भी एयर एंबुलेंस उतारने की सुविधा दी जाएगी। सूत्रों के मुताबिक लखनऊ के चिकित्सा संस्थानों के बाद झांसी, गोरखपुर, वाराणसी, आगरा, मेरठ सहित अन्य मेडिकल कॉलेजों में भी हवाई पट्टी बनाई जाएगी। इससे यहां भर्ती होने वाले मरीजों को दूसरी जगह भेजने और मरीजों को अन्य स्थानों से यहां लाने में आसानी होगी।

डीसीए ने 9 ब्लड बैंकों पर की छापेमारी, मिलीं खामियां

हैदराबाद- डीसीए (ड्रग्स कंट्रोल एडमिनिस्ट्रेशन) ने शहर के नौ ब्लड बैंकों पर छापेमारी की है। निरीक्षण में पाया गया कि इन ब्लड बैंकों में जरूरी बातों की अनदेखी की जा रही थी। अधिकारियों ने बताया कि इन ब्लड संक्रामक रोगों के लिए रक्त की जांच करने में विफलता, रक्त और रक्त घटक परीक्षण में चूक, अत्यधिक शुल्क लेना, अपर्याप्त रिकॉर्ड रखरखाव आदि खामियां पाई गई हैं। इन नौ ब्लड बैंकों को विभागीय कार्रवाई शुरू करने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। लकड़ी-का-पुल में एवीएस ब्लड सेंटर और मेहदीपट्टनम में विवेकानंद ब्लड सेंटर ये दस्तावेज नहीं दिखा पाए कि एचआईवी, हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी आदि के लिए परीक्षण किट वास्तव में ब्लड बैंक द्वारा खरीदे और इस्तेमाल किए गए थे। कई ब्लड बैंक संपूर्ण मानव रक्त और उसके घटकों पर अत्यधिक फीस शुल्क वसूलते मिले। जैसे ताजा जमे हुए प्लाज्मा (एफएफपी) को दिशानिर्देशों के अनुसार 400 रुपये लिए जाने चाहिए, लेकिन श्री बालाजी ब्लड सेंटर, मलकपेट में 1,500 रुपये और नंदी ब्लड सेंटर, बालानगर ने 1,400 रुपये लिए गए। इसी तरह, प्लेटलेट कंसंट्रेट के लिए, नवजीवन ब्लड सेंटर, चौतन्यपुरी ने 400 रुपये की बजाए 1,200 रुपये लिए। डीसीए तेलंगाना के महानिदेशक वीबी कमलासन रेड्डी ने कहा कि श्री बालाजी ब्लड सेंटर, मलकपेट ने 11,000 की निर्धारित लागत के मुकाबले एकल दाता प्लेटलेट्स के लिए प्रसंस्करण शुल्क के रूप में 15,000 एकत्र किए। निरीक्षण में यह भी पता चला कि कुछ ब्लड बैंक अनुमोदित तकनीकी कर्मियों की देखरेख में काम नहीं कर रहे हैं। प्रथमा साईं ब्लड सेंटर में चिकित्सा अधिकारी, तकनीशियन और पंजीकृत नर्स जैसे जरूरी कर्मचारी नहीं मिले। वहीं, विवेकानन्द ब्लड सेंटर में तकनीकी पर्यवेक्षक उपलब्ध नहीं था।

मेडिसिन बनाने के लिए मारे जा रहे लाखों गधे

लंदन- मेडिसिन के निर्माण के लिए हर साल लाखों गधे मार दिए जाते हैं। जी हां, यह सच है। गधों की खाल के लिए इन्हें मारा जाता है। चीन में गधे की खाल में मौजूद जिलेटिन से बने पारंपरिक औषधीय इलाज की काफी डिमांड है। इसे एजियाओ कहा जाता है। ब्रिटेन स्थित डंकी सेंचुरी की रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक स्तर पर इस खाल की सप्लाई के लिए हर साल कम से कम 60 लाख गधों को मार दिया जाता है। बताया गया है कि गधे की खाल में स्वास्थ्यवर्धक और एंटी-एजिंग गुण होते हैं। इस व्यापार के विरोधियों का कहना है कि ऐसे लोग जो गधे जैसे जानवर पर निर्भर हैं, एजियाओ के पारंपरिक घटक की अस्थिर मांग के शिकार हो रहे हैं। चीन में गधों की संख्या में तीन दशकों के दौरान भारी कमी आई है। खाल के व्यापारी देश-विदेशों में इन जानवरों और उन पर निर्भर समुदायों को निशाना बना रहे हैं। गौरतलब है कि तंजानिया और आइवरी कोस्ट सहित देशों ने 2022 में गधों को मारने और खाल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। लेकिन पाकिस्तान अभी भी यह व्यापार कर रहा है। पिछले साल के अंत में यहां देश के पहले आधिकारिक प्रजनन फार्म में कुछ सर्वोत्तम नस्लों को पालने की बात कही गई। चीन में एजियाओ बाजार का मूल्य 2013 में लगभग 3.2 अरब डॉलर से बढ़कर 2020 में 7.8 अरब डॉलर हो गया। यह स्थिति सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों, पशु कल्याण प्रचारकों और अंतरराष्ट्रीय अपराध जांचकर्ताओं के लिए चिंता का विषय है। गधों को मारने के तरीके अक्सर अनियमित, अमानवीय और अस्वास्थ्यकर होते हैं। ये बड़ी संख्या में बूचड़खानों के रास्ते में ही मर जाते हैं। गधे मजबूत, अनुकूलनीय जानवर हैं लेकिन ये जल्दी प्रजनन नहीं करते। ऐसे में प्रचारकों को डर है कि यदि स्थिति पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो गधों की संख्या घटती रहेगी।

ALWAISWIN Pharma India Pvt Ltd
Deals In:- Herbal, Food, Neutraceuticals Syrup, Injectables, Softgel
Our Company registered Products:
Almonx 500 | Orthogard- BP | Alrabe-DSR | Nerviwin-M
Almonx Cv625 | Orthogard- NP | Alvit-Grow 16G | Nerviwin150
Almonx LB | Orthogard- MR | Alvit- Active12G | Nerviwin GB
Almonx 250 | Orthogard Gel | Alvicof-dx | Nerviwin 300
Call Us:-9815003544,7784849000
Franchise Available For Vacant States
Attractive Packings | Third Party Enquiry Also Welcome | Best Quality Products
Head Office:-18-f-Big B Complex Rotary Chowk Baddi (H.P)
G.Mail:- alwaiswinpharma@gmail.com
Our web:-alwaiswinpharma.com

बिकाऊ है

बुलन्दशहर में जिला अस्पताल के सामने
मोती बाग की ओर जाने वाली
सड़क पर मन्दिर के पास

Ground Floor	First Floor
2 Shops	200 Square Yard, Drawing Room Big Lobby, 3 Bedroom, Kitchen, 3 WC

-विशेषताऐं-

- On Road Property
- 30 फीट से अधिक चौड़ी सड़क
- Corner Property
- 3 Side Open (East, West & South)
- 12 फीट पटाव की छत
- व्यवसायिक उपयोग
- Situated in Mix Area Residence Cum Commercial
- पार्क, अस्पताल, मैडीकल स्टोर, सब्जी मण्डी, बस स्टैण्ड के निकट
- फर्श पर टाइल्स
- लाइट, जेट पम्प आदि सभी सुविधायें

Contact us:
9410434811, 9045029158

मार्च माह के व्रत एवं त्यौहार

20.03.2024	एकादशी व्रत
24.03.2024	होली
25.03.2024	रंग
30.03.2024	पंचमी
01.04.2024	सप्तमी
05.04.2024	एकादशी
08.04.2024	अमावस्या
09.04.2024	नवरात्रि प्रारंभ
13.04.2024	पंचमी
17.04.2024	राम नवमी
20.04.2024	द्वादशी

नशीले इंजेक्शन की खेप के साथ तस्कर गिरफ्तार जेल भेजा

रायपुर- नशीले इंजेक्शन की खेप ले जाते हुए एक तस्कर को रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार कर लिया गया है। मुखबिर की सूचना पर जीआरपी ने यह कार्रवाई की। तसकरी का आरोपी युवक बैग और टॉली बैग में छिपाकर 800 सीसी इंजेक्शन बिलासपुर ले जा रहा था। नशीले इंजेक्शनों की कीमत 18 हजार 531 रुपए आंकी गई है। जीआरपी एएसआई राजेंद्र सिंह ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर रायपुर में रेलवे प्लेटफार्म नंबर 5, 6 बिलासपुर छोर पर शौचालय के पास आरोपी जानिसार अख्तर को पकड़ा गया। तलाशी लेने पर युवक के बैग और टॉली बैग से 32 डिब्बे मिले। इनमें प्रतिबंधित 800 सीसी इंजेक्शन जब्त किए गए हैं। पूछताछ में नशीले इंजेक्शन के संबंध में आरोपी कोई वैध दस्तावेज नहीं दिखा पाया। इन नशीले इंजेक्शनों की कीमत 18 हजार 531 रुपए बताई गई है। आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया गया है। वह बिलासपुर जाने की तैयारी में था। विशेष एनडीपीएस न्यायालय रायपुर के आदेश पर आरोपी को जेल भेज दिया है। आरोपी जानिसार अख्तर (36 वर्ष) पिता अहमद अख्तर तालापारा, बिलासपुर का निवासी बताया गया है। उसके खिलाफ अपराध क्रमांक- 17/2024 धारा 21 (क), 27 (क) नारको एक्ट के तहत कार्रवाई की गई। रेलवे पुलिस अधीक्षक जेआर ठाकुर एवं उप पुलिस अधीक्षक रेल का ट्रेन में अवैध रूप से नशीला पदार्थ लाने ले जाने पर रोक लगाने के सख्त निर्देश हैं।

लाइसेंस निरस्त किया जाएगा

आगरा: नशे के लिए अवैध तरीके से कौडीनयुक्त कफ सिरप को बिक्री करने वालों का लाइसेंस निरस्त किया जाएगा, मुकदमा दर्ज कराया जाएगा। हर सप्ताह दवा कारोबा. रियों को कोडीनयुक्त कफ सिरप की खरीद और बिक्री का ब्योरा औषधि विभाग के कार्यालय में देना होगा। एक-एक कफ सिरप की खरीद और बिक्री पर नजर रखी जाएगी। सूखी खांसी के लिए इस्तेमाल होने वाले कोडीनयुक्त कफ सिरप का दुरुपयोग बढ़ गया है। छात्रों से लेकर युवा नशे के लिए कफ सिरप का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए प्रदेश स्तर पर कफ सिरप की खरीद और बिक्री पर निगरानी के लिए औषधि विभाग को सख्त निर्देश दिए गए हैं। औषधि निरीक्षक नवनीत कुमार ने बताया कि ऐसी फर्म जो भौतिक रूप से संचालित नहीं हो रही हैं, उनके नाम से कोडीनयुक्त कफ सिरप की बिक्री करने वाले दवा कारोबारियों को दोषी माना जाएगा। लाइसेंस निरस्त करने के साथ ही मुकदमा दर्ज कराया जाएगा। साथ हो प्रदेश के बाहर से खरीदे जा रहे. कोडीनयुक्त सिरप का ब्यौरा फर्म, थोक दवा कारोबारी हास्पिटल द्वारा स्थानीय स्तर और प्रदेश के साथ ही अन्य राज्यों में की जा रही कफ सिरप की बिक्री का ब्योरा भी देना होगा। आगरा रिटेल केमिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ० आशीष ब्रह्मभट्ट ने बताया कि सभी दुकानदारों को कफ सिरप की बिक्री करते समय सावधानी बरतने और ब्योरा देने के लिए कहा गया है। दवा माफिया नशे के लिए कोडीनयुक्त कफ सिरप की बांग्लादेश सहित 11 राज्यों में अवैध बिक्री करते हैं। पिछले वर्ष सिकंदरा क्षेत्र में कोडीनयुक्त कफ सिरप की अवैध फैक्ट्री पकड़ी गई थी। राजस्थान, पंजाब और दिल्ली पुलिस कई बार छापा मार चुकी है, कई दवा कारोबारी जेल जा चुके हैं। ट्रांसपोर्ट कंपनी और गोदामों में कफ सिरप पकड़ा जा चुका है। **आशीष ब्रह्मभट्ट, आगरा, मो० 9897811055**

ड्रग्स बरामद, विदेशी नागरिक अरेस्ट

गांधीनगर (गुजरात)- ड्रग्स की अब तक की सबसे बड़ी खेप बरामद होने का समाचार है। भारतीय नौसेना ने नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के साथ मिलकर लगभग 3300 किलोग्राम प्रतिबंधित मादक पदार्थ जब्त किया है। इसे नौका के द्वारा ले जाया जा रहा था। नौका में पांच संदिग्ध विदेशी नागरिकों को भी गिरफ्तार किया है। गुजरात के आतंकवादी रोधी दस्ते ने भारतीय नौसेना और स्वापक नियंत्रण ब्यूरो (एनसीबी) के साथ अरब सागर में एक संयुक्त अभियानचलाया। इस दौरान एक ईरानी नौका को रोककर उसके चालक दल के पांच सदस्यों को हिरासत में लिया। आशंका है कि आरोपी लोग ईरान और पाकिस्तान से हो सकते हैं। इनके पास से हजारों करोड़ रुपये की कीमत का 3300 किलोग्राम से अधिक मादक पदार्थ बरामद किया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि एनसीबी और अन्य एजेंसियों ने मादक पदार्थों की तस्करी के एक और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। देश में अब तक की सबसे अधिक अपतटीय जब्ती (मात्रा के आधार पर) की है। उन्होंने बताया कि नौका से गिरफ्तार किए गए पांच लोगों के ईरानी या पाकिस्तानी नागरिक होने का संदेह है। उनके पास से राष्ट्रीयता का कोई दस्तावेज बरामद नहीं हुआ है। भारतीय नौसेना ने लगभग 3300 किलोग्राम प्रति. बंधित मादक पदार्थ (3089 किलोग्राम चरस, 158 किलोग्राम मेथामफेटामाइन 25 किलोग्राम मॉर्फिन) ले जा रहे एक संदिग्ध नौका को पकड़ा है। यह अब तक का सबसे अधिक जब्त किया मादक पदार्थ है। नौका और चालक दल के सदस्यों के साथ-साथ प्रतिबंधित पदार्थों को भी भारतीय बंदरगाह पर कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सौंप दिया है।

लापरवाही

खंडवा (मध्य प्रदेश)- जिला अस्पताल में बड़ी लापरवाही का मामला सामने आया है। यहां एसएनसीयू में डॉक्टरों ने दो गर्भवती महिलाओं का एक जैसा नाम होने पर भारी लापरवाही कर दी। गलती से मृत नवजात की मां को स्वस्थ नवजात देकर डिस्चार्ज कर दिया। वहीं, स्वस्थ नवजात के परिजनों ने नाराजगी दिखाई तो मामले का खुलासा हो पाया। डॉक्टरों ने गांव से परिजनों को बुलाकर बच्चा स्वस्थ मां को सौंप दिया है। जानकारी के अनुसार जिला अस्पताल के प्रसूति विभाग में 14 फरवरी को शास्त्री नगर निवासी मनीषा पति विजय वर्मा डिलीवरी के लिए दाखिल हुई थी। सुबह के समय मनीषा ने नॉर्मल डिलीवरी से 3 किलोग्राम वजन के स्वास्थ्य बालक को जन्म दिया। उसी रात सालाई गांव निवासी मनीषा पति विजय चौहान ने घर पर 1.28 किलोग्राम के बच्चे को जन्म दिया था। जिसे रात 2 बजे परिजनों ने अस्पताल के एसएनसीयू में इलाज के लिए भर्ती करवाया था। 15 फरवरी से जब भी स्टाफ मनीषा पति विजय के नाम की आवाज दी जाती है तो बी ब्लॉक में एसएनसीयू के पास मदर वार्ड में भर्ती मनीषा चौहान उठकर आती है। वहीं एसएनसीयू से दूर ए ब्लॉक के वार्ड नंबर 3 में मनीषा वर्मा डिलीवरी के बाद से भर्ती थी। मनीषा चौहान को स्टाफ ने एसएनसीयू से बच्चों को छुट्टी कर बच्चा सौंप दिया था। वहीं, शाम को जब डॉक्टर ने मनीषा वर्मा और परिजनों को बच्चे की हालत खराब होने की जानकारी दी तो उन्होंने कहा कि हमारा बच्चा अस्वस्थ हो ही नहीं सकता। वह जन्म से ही स्वस्थ और उसका वजन 2.900 किलो से अधिक था। परिजन ने जब बच्चे का वजन बताया तो डॉक्टर और स्टाफ ने रिकॉर्ड देखने के बाद अपनी गलती मानी। इसके बाद पुलिस की मदद से नवजात को गलत परिजन के घर से लाकर उसके असली माता-पिता को सौंपा। वहीं, अपने बचाव के लिए डॉक्टर स्टाफ ने दोनों बच्चों का सिंपल डीएनए जांच के लिए स्टोर कर लिया है।

कम गुणवत्ता वाली दवाएं मिली केस दर्ज

धनबाद- कैल्शियम और विटामिन डी की दवाएं सब स्टैंडर्ड यानी कम गुणवत्ता वाली पाई गई हैं। जांच के दौरान इन दवाओं की गुणवत्ता तय मानकों के अनुरूप नहीं मिली। बताया गया है कि ये दवाइयां तोपचांची सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में मरीजों को बांटी गई थी। ड्रग इंस्पेक्ट रंजीत चौधरी ने संबंधित दवा निर्माता कंपनी और दवा की सप्लाई करने वाली एजेंसी के खिलाफ कोर्ट में केस दर्ज करवा दिया है। पूर्व ड्रग इंस्पेक्टर ने करीब नौ महीने पहले तोपचांची सीएचसी की दवाओं का सौंपल लिया था। इन सैंपलों की जांच लेबोरेटरी में कराई गई। अब इसकी जांच रिपोर्ट आई है। रिपोर्ट में वहां से ली गई दवाओं के सैंपल में कैल्शियम और विटामिन डी की दवाएं सब स्टैंडर्ड पाई गई हैं। जांच रिपोर्ट आने के बाद उक्त दोनों दवाओं का निर्माण करने वाली कंपनी और इसकी सप्लायर एजेंसी के खिलाफ कोर्ट में मामला दर्ज करा दिया गया है। बताया गया है कि बलियापुर सीएचसी से भी दवाओं का सैंपल लेकर जांच के लिए भेजा गया था। उसकी जांच रिपोर्ट में भी कैल्शियम और विटामिन डी की दवा ही सब स्टैंडर्ड मिली थी। इस मामले में पूर्व में केस किया जा चुका है। बता दें कि तोपचांची और बलियापुर सीएचसी में सब स्टैंडर्ड मिली कैल्शियम और विटामिन डी की दवाओं की आपूर्ति जिले से की गई थी। एजेंसी ने जिले को दवाइयां भेजी थी। यहीं से उक्त दोनों सीएचसी समेत धनबाद सदर अस्पताल व अन्य सभी स्वास्थ्य केंद्रों में न दवाओं को भेजा गया। अधिकारियों के अनुसार इन दो केंद्रों से लिए गए सैंपल की जांच रिपोर्ट के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पूरे जिले में बांटी गईं ये दवाएं तय मानक के अनुरूप नहीं थी। यानी मरीजों ने सब स्टैंडर्ड दवाएं खाई हैं। जांच में टीबी विभाग को दी गई एक दवा भी पिछले दिनों सब स्टैंडर्ड मिली थी। यह दवा धनबाद समेत कई जिलों में भेजी गई थी। इस मामले में भी कार्रवाई की गई है।

Caring health with
Curing hands...

- Tablets
- Capsules
- Injections
- Softgel Capsules
- Dry Syrup
- Liquid Suspension
- Cardia Range
- Derma Range
- Eye & Ear Drops
- Ayurvedic Range

Email : cancuf@gmail.com

Call Us : 92164 24072
98883 16959

A professionally managed fast growing pharmaceuticals Company with a multidimensional ethical products.

CARE n CURE FARMACIA
SCF: 421, M. Mkt., Manimajra, Chandigarh-160101
www.carencurefarmacia.com

नकली दवा बेचते युवक गिरफ्तार

गरियाबंद (छत्तीसगढ़)- प्रतिबंधित नशीली दवा बेचने के लिए घूम रहे एक युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से 300 प्रति. बंधित टेबलेट भी जब्त की हैं। आरोपी युवक के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि डाकबंगला वार्ड नं 8 का रहने वाला सद्दाम खान पारागांव के पास प्रतिबंधित नशीली टेबलेट बेचने की फिराक में घूम रहा है। सूचना के तहत कोतवाली पुलिस ने दो मौके से सद्दाम खान को रोककर उसकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान आरोपी के पास से 75-75 गोली के चार पत्ते मिले, जिसमें 300 प्रतिबंधित नशीली दवा थी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीसी एक्ट के तहत कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया। बता दें कि प्रतिबंधित नशीली दवाएं मार्केट में सिर्फ डॉक्टर के पर्चे पर मिलती है। नगर के कुछ मेडिकल स्टोर चोरी छिपे इन दवाओं को बेच रहे हैं। 30 से 40 रुपये की एमआरपी वाली इन नशीली दवाओं का एक पत्ता 400 से 500 रुपये में बेचते हैं। वहीं सस्ती और बिना बदबू के होने से ये दवाएं युवाओं की पसंद बन चुकी हैं।

युवक गिरफ्तार, रिमांड पर भेजा

यमुनानगर- प्रतिबंधित ट्रामाडोल कैप्सूल के साथ एक युवक को गिरफ्तार कर पुलिस रिमांड पर भेजा गया है। जानकारी अनुसार हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो यूनिट की टीम ने साढौरा दोसडका रोड पर गांव सरांवा टी प्वाइंट के पास से एक युवक को गिरफ्तार किया। युवक की तलाशी लेने पर उसके कब्जे से प्रतिबंधित 160 ट्रामाडोल कैप्सूल जब्त किए गए। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ केस दर्ज कर लिया। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया। कोर्ट ने आरोपी को पुलिस रिमांड पर भेजा है। ब्यूरो के उप पुलिस अधीक्षक जगबीर सिंह व यूनिट कुरुक्षेत्र प्रभारी निरीक्षक सुखपाल सिंह ने बताया कि पुलिस टीम देर शाम दोसडका चौक पर गश्त कर रही थी। इस दौरान टीम को सूचना मिली कि गांव सरांवा निवासी अजय कुमार प्रतिबंधित कैप्सूल बेचने का काम करता है। वह अपने घर से प्रतिबंधित कैप्सूल लेकर बेचने के लिए जाएगा। सूचना मिलते ही टीम ने साढौरा दोसडका मार्ग पर गांव सरांवा टी प्वाइंट के पास नाका लगाकर वाहनों की जांच शुरू कर दी। कुछ देर बाद पुलिस टीम को एक युवक आता दिखाई दिया। पुलिस टीम ने युवक को हिरासत में लेकर उसकी तलाशी ली तो उसके पास से 20 पत्ते नशीले कैप्सूल ट्रामाडोल के बदामद हुए। इसमें 160 नशीले कैप्सूल थे। आरोपी की पहचान अजय के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया। अदालत ने आरोपी को पुलिस रिमांड पर भेजने की अनुमति दे दी है।

NEET&UG के पंजीकरण की अंतिम तिथि 9 मार्च

नई दिल्ली: राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (एनईईटी-यूजी) 2024 के लिए ऑनलाइन पंजीकरण खोल दिया है। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 9 मार्च रात 9 बजे तक है. राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग अधिनियम, 2020 की धारा 14 के अनुसार, भारतीय चिकित्सा प्रणाली के प्रत्येक विषय यानी बीएएमएस, बीयूएमएस और बीएसएमएस पाठ्यक्रमों में स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए एक समान एनईईटी (यूजी) होगा। इस अधिनियम के तहत शासित सभी चिकित्सा संस्थान। एनईईटी (यूजी) राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग के तहत बीएचएमएस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए लागू होगा।

भारत के पहले जीनोमिक्स-आधारित संक्रामक रोग परीक्षण के लिए तैयार है

तिरुवनंतपुरम: आईआईटी बॉम्बे के जीनोमिक्स-आधारित डायग्नोस्टिक्स समाधानों में अग्रणी और केरल के एक निजी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल ने शहर में संक्रामक रोग निदान के लिए दुनिया का पहला ऑन-साइट जीनोमिक्स परीक्षण शुरू करने के लिए हाथ मिलाया है, दोनों संस्थाओं ने एक संयुक्त बयान में कहा। जारी बयान में कहा गया है कि आईआईटी-बॉम्बे स्थित हेस्टैकएनालिटिक्स और यहां नेय्याट्टिनकारा में एनआईएमएस मेडिसिटी संक्रामक रोगों के निदान के लिए जीनोमिक्स परीक्षण इन्फेक्सएनटीएम पेश करने के लिए सहयोग कर रहे हैं। इसमें कहा गया है कि यह साझेदारी केरल में संक्रामक रोगों का पता लगाने के उद्देश्य से चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सफलता का प्रतिनिधित्व करती है। बयान में कहा गया, यह पहल शहर के डायग्नोस्टिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण क्षण है, जो संक्रामक रोगों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए डायग्नोस्टिक सेंटर को जीनोम अनुक्रमण तकनीक से लैस करके बेदाग परिणाम और सक्षम सेवाओं का वादा करता है। इसमें कहा गया है कि इन्फेक्सएनटीएम एक अत्याधुनिक लक्षित अगली पीढ़ी का अनुक्रमण परीक्षण है, जिसे 24 घंटे के भीतर प्रासंगिक रोगाणुरोधी प्रतिरोध जीन का पता लगाने के साथ-साथ किसी भी बैक्टीरिया और/या फंगल संक्रमण का पता लगाने के लिए डिजाइन किया गया है। परीक्षण एक किट-सह-सॉफ्टवेयर समाधान है और इसे अस्पताल के भीतर किया जा सकता है। भारत में निर्मित, विश्व के लिए निर्मित, infexnTM संक्रमण का पता लगाने के लिए एक परीक्षण है। 'infexn' रिपोर्ट संदिग्ध संक्रमण वाले रोगियों के लिए जीवन रक्षक हो सकती है। बयान में कहा गया है, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अनुकूलित एंटीबायोटिक उपयोग को प्राप्त करने के लिए उन्नत निश्चित निदान के साथ स्वास्थ्य देखभाल पारिस्थितिकी तंत्र को सशक्त बना सकता है। इसमें आगे कहा गया है कि यह अग्रणी पहल रोगाणुरोधी प्रबंधन को बढ़ावा देने के राष्ट्रीय लक्ष्य के प्रभावी कार्यान्वयन को भी सक्षम बनाएगी जो जी20 अध्यक्ष पद पर रोगाणुरोधी प्रतिरोध के खिलाफ लड़ाई के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के अनुरूप है। लॉन्च पर टिप्पणी करते हुए, डॉ. अनीश नायर, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, एनआईएमएस सेंटर फॉर जीनोमिक मेडिसिन, एनआईएमएस मेडिसिटी, केरल को यह कहते हुए उद्धृत किया गया कि यह अभिनव दृष्टिकोण ष्संक्रामक रोग का पता लगाने की सटीकता और दक्षता को बढ़ाने का वादा करता है, जो एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में
उन्होंने कहा, हेस्टैकएनालिटिक्स के साथ हमारा सहयोग केरल के दरवाजे पर नवाचार और उन्नत प्रौद्योगिकियों को लाने के हमारे प्रयासों को दर्शाता है। डॉ. महुआ दासगुप्ता कपूर, निदेशक, चिकित्सा मामले (संक्रामक रोग), हेस्टैकएनालिटिक्स, को यह कहते हुए उद्धृत किया गया कि यह अत्याधुनिक जीनोमिक परीक्षण समाधान ष्चिकित्सकों को संक्रामक रोगों का कुशल और सटीक निदान प्रदान करता है, जिससे लक्षित चिकित्सा प्राप्त होती है और रोगी के परिणामों में सुधार हुआ। उन्होंने कहा, हम जीनोम अनुक्रमण आधारित नैदानिक समाधानों को जनता के लिए सटीक, लागू और सुलभ बनाने की इस अभिनव यात्रा का नेतृत्व करने के लिए उत्साहित हैं।

मेडिकल स्टोर पर रेड, तीन करोड़ रुपये की नशीली दवाइयां जब्त

सीबीगंज (बरेली)- मेडिकल स्टोर पर छापामारी कर तीन करोड़ रुपये मूल्य की नशीली दवाइयां बरामद की गई हैं। यह कार्रवाई एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) की टीम ने की। बताया गया कि आरोपी मेडिकल स्टोर संचालक अपने भाई के साथ मिलकर यह गोरखधंधा चला रहा था। मेडिकल स्टोर संचालक को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके भाई की तलाश जारी है। सीबीगंज के गांव महेशपुर निवासी मुन्ने का किला मेडिकल स्टोर है। एएनटीएफ की सीओ प्रतिमा सिंह और प्रभारी विकास यादव ने उसके मेडिकल स्टोर पर छापा मारकर उसे हिरासत में ले लिया। मौके से कुछ नशीली दवाएं बरामद हुई हैं। उसकी निशानदेही पर सीबीगंज के महेशपुर गांव में गांधी आश्रम के पास गोदाम में छापा मारा तो वहां से नशीली दवाओं का जखीरा बरामद हुआ। मुन्ने ने पूछताछ में बताया कि उसका भाई बबलू उर्फ कमर गनी विभिन्न स्थानों से नशीली दवाओं की खेप मंगाता था। फिर वे लोग इसे दिल्ली, पंजाब, उत्तराखंड के अलावा पड़ोसी देश बांग्लादेश तक सप्लाई करते थे। बरामद दवाओं की कीमत करीब तीन करोड़ रुपये बताई गई है। सीबीगंज पुलिस ने मुन्ने को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। आरो. पियों के गोदाम से ट्रामाडॉल युक्त एक लाख नौ हजार 584 कैप्सूल, अल्प्राजोलाम युक्त दो लाख 20 हजार 200 टैबलेट, 23 हजार 276 बोतल कोडीन फास्फेट युक्त सीरप, नाइट्राजीपाम युक्त 1800 टैबलेट बरामद की गईं। बरामद हुई सभी नशीली दवाओं का वजन करीब 11 क्विंटल है। इसके अलावा एक मोबाइल फोन और 1.66 लाख रुपये नकद बरामद हुए। जांच के दौरान आरोपी मुन्ने इन नशीली दवाओं को बेचने और स्टॉक का लाइसेंस नहीं दिखा सका। इस वजह से उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत थाना सीबीगंज में रिपोर्ट दर्ज की गई है। साथ ही दवाओं की बिक्री और खरीद का भी उसके पास कोई हिसाब नहीं मिला। दवा व्यापारियों के मुताबिक कोडीन फास्फेट युक्त कफ सीरप की नशेडियों में ज्यादा डिमांड रहती है। बांग्लादेश समेत अन्य स्थानों पर इस कफ सीरप को ढाई से तीन गुना कीमत पर बेचा जाता है। यह सीरप लखनऊ से भारी मात्रा में बरेली आता है। वर्ष 2018 में लखनऊ से गाजियाबाद भेजी गई ऐसी ही खेप को दिल्ली काइम ब्रांच ने पकड़ लिया था। किला के ट्रांसपोर्ट के जरिये यह माल वहां भेजा गया था। अब यह टीम स्थानीय स्तर पर मुन्ने और बबलू से यह दवा खरीदने और बेचने वालों की जानकारी हासिल कर कार्रवाई की तैयारी कर रही है।

ब्रांडेड फार्मा कंपनियों की नकली दवाओं की बिक्री का भंडाफोड़

कानपुर- प्राप्त समाचार के अनुसार ब्रांडेड फार्मा कंपनियों की नकली दवाइयां बेचे जाने का मामला पकड़ में आया है। ड्रग विभाग की टीम ने कौशलपुरी, आरकेनगर स्थित मेडिकल स्टोर पर रेड कर नामी कंपनियों की नकली दवाएं जब्त की हैं। टीम ने दवाओं के सैंपल लेकर लैब में भेज दिए हैं। ड्रग इंस्पेक्टर के मांगने पर मेडिकल स्टोर संचालक इन दवाओं की खरीद से संबंधित कोई दस्तावेज नहीं दिखा पाया। टीम ने कुल 4,79,325 रुपए कीमत की दवाइयां, औषधि एवं प्रसाधन सामग्री जब्त कर ली। वहीं मेडिकल स्टोर को सीज करके दवा के खरीद व बिक्री पर रोग लगा दी है। सहायक आयुक्त औषधि दिनेश कुमार तिवारी ने बताया कि नकली एवं अधोमानक औषधि की बिक्री की सूचना मिली थी। सूचना के अनुसार टीम गठित कर जांच के आदेश दिए थे। टीम में नगर की ड्रग इंस्पेक्टर रेखा सचान और ओमपाल सिंह, इटावा के ड्रग इंस्पेक्टर रजत कुमार पांडेय रहे। टीम ने थाना नजीराबाद से पुलिस बल के साथ कौशलपुरी के न्यू गगन केमिस्ट पर छापा मारा और दवाओं की जांच शुरू की। मेडिकल स्टोर पर जांच के दौरान एल्केम, टोरेंट, अरिस्टो, लूपिन, सन फार्मा, ग्लेनमार्क, सिप्ला लिमिटेड, एबट, डॉ. रेड्डीज एवं अन्य एम.एन.सी. कंपनी की नकली दवाइयां पाई गईं। मेडिकल स्टोर संचालक दवाओं की खरीद के संबंध में कागजात नहीं दिखा पाए। टीम ने मौके से 4,79,325 रुपए की औषधियां, औषधि एवं प्रसाधन सामग्री को जब्त कर लिया। मेडिकल स्टोर संचालक पुलकित गुप्ता के मोबाइल फोन पर व्हाट्सएप चौट के जरिये क्रय-विक्रय को देखकर मोबाइल फोन को बरामद कर लिया गया। व्हॉट्स पर क्रय-विक्रय की दवाओं का अनुमानित मूल्य 22,999 रुपये है। कुल दवाओं की कीमत 5,02,324 रुपये है। ड्रग इंस्पेक्टर ओम पाल सिंह ने बताया कि दवाओं को जांच के लिए राजकीय विश्लेषक लैब में भेजा गया है। ड्रग इंस्पेक्टर रेखा सचान ने बताया कि बुखार की जीरो डॉल एसपी, गैस की टैन-10, डीएसआर, एंटी बायोटिक ऑगमेंटिन, क्लेवम, ब्लड प्रेशर की टेल्मा, डायबिटीज की दो दवाएं, चक्कर की वर्टिन तथा नींद की दवाएं नकली मिली हैं। नामी कंपनियों के नाम पर इन नकली दवाओं से बैच की कोडिंग और एमआरपी काट दी गई थी। उन्होंने बताया कि 18 दवाओं के सैंपल भरकर जांच के लिए भेजे गए हैं।

भारत में पैथोलॉजी में एआई को अपनाने के लिए क्यूरिटिव ने मेट्रोपोलिस, कोर डायग्नोस्टिक्स और राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट के साथ साझेदारी की है

सिंगापुर: क्यूरिटिव ने भारत में तीन डायग्नोस्टिक केंद्रों और अस्पतालों के साथ साझेदारी की घोषणा की: मेट्रोपोलिस हेल्थकेयर, राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट और कोर डायग्नोस्टिक्स। इन संस्थानों ने पैंथियन इमेज मैनेजमेंट सिस्टम (आईएमएस) और क्यूरिटिव के एआई उत्पादों को अपनाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति का लाभ उठाकर, ये संस्थान नैदानिक सटीकता बढ़ा रहे हैं, परिचालन दक्षता में सुधार कर रहे हैं और अंततः रोगी देखभाल को आगे बढ़ा रहे हैं। साझेदारी पर टिप्पणी करते हुए, मेट्रोपोलिस हेल्थकेयर के सीईओ, सुरेंद्रन चेमेनकोट्टिल ने कहा: "हम पैथोलॉजी में अपनी क्षमताओं को आगे बढ़ाने के लिए मौजूद अपार संभावनाओं को लेकर उत्साहित हैं। चूंकि यह कैंसर देखभाल के नए मानक स्थापित करने पर मुख्य फोकस को मजबूत करता है, विशेष रूप से प्रोस्टेट कैंसर का पता लगाने के लिए प्रभावी उपचार निर्णय लेने में चिकित्सकों का समर्थन करने में। हमारी पूरी टीम यह दिखाने के लिए उत्सुक है कि कितनी गहरी तकनीक चिकित्सकों का समर्थन करेगी और 4 फरवरी के विश्व कैंसर दिवस की आकांक्षाओं को पूरा करते हुए, कैंसर देखभाल में अंतर को बंद करने में योगदान देगी , ष्क्यूरिटिव के सीईओ ब्रूनो ओचिपिंती ने कहा CORE डायग्नोस्टिक्स के सीईओ श्री दिनेश चौहान ने कहा, "CORE डायग्नोस्टिक्स में हमारे पैथोलॉजी वर्कफ्लो में उनके उन्नत ।ए समाधानों को एकीकृत करने से रोगी के परिणामों में सुधार हुआ है, नैदानिक देखभाल में उत्कृष्टता प्रदान की गई है और दुर्लभ बीमारियों के निदान के लिए नई AI सेवाओं का विकास हुआ है।ष निदान। प्रमुख स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों में किए गए नैदानिक अध्ययनों से पता चलता है कि निदान के लिए आवश्यक समय में 90% तक की कमी आई है और रोगविज्ञानियों के बीच मतभेद में 80% तक की कमी आई है और सुधार से निदान सटीकता में वृद्धि हुई है और कैंसर की देखभाल की गुणवत्ता में समग्र वृद्धि हुई है। मरीज. राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट रिसर्च सेंटर में पैथोलॉजी के एचओडी डॉ. गुरुदत्त गुप्ता ने कहा, संबंधित क्षेत्रों की कुशल पहचान और सटीक ग्रेडिंग के साथ, इन उपकरणों को एकीकृत करने से हमारे वर्कफ्लो और नैदानिक परिशुद्धता में वृद्धि हुई है, जिससे हमारे अभ्यास को महत्वपूर्ण लाभ मिलते हैं।

अस्थमा रोधी दवाएं फार्मा बाजार के विकास को गति देती हैं

नई दिल्ली: फार्मा बाजार में जनवरी के दौरान श्वसन उपचारों ने वृद्धि का नेतृत्व किया , जिससे साल की जोरदार शुरुआत हुई और यह लगभग 8% बढ़कर 17,937 करोड़ रुपये हो गया। अस्थमा रोधी दवाओं (फोराकोर्ट और बुडेकोर्ट) ने महीने के दौरान दोहरे अंकों में वृद्धि दर्ज करना जारी रखा, जो देश भर में बढ़ते प्रदूषण स्तर के साथ हमारे संघर्ष की ओर इशारा करता है। आमतौर पर, घरेलू फार्मा बाजार अतीत में बड़े पैमाने पर या तो एंटीबायोटिक्स या एंटी-डायबिटीज द्वारा संचालित होता रहा है। टीओआई द्वारा मार्केट रिसर्च फर्म फ्टप। से जुटाए गए नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि जनवरी तीसरा महीना बन गया है जिसमें श्वसन दवाओं की कीमतों में हाल के दिनों में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई है। फार्मा खुदरा बाजार दिसंबर में 5% की कमजोर वृद्धि के साथ वर्ष के अंत में बंद हुआ था। शीर्ष रैंकर्स में, अस्थमा और श्वसन संबंधी समस्याओं के लिए उपयोग की जाने वाली फोराकोर्ट ने जनवरी में 20% की वृद्धि के साथ 83 करोड़ रुपये की बिक्री के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। अन्य शीर्ष दवाएं - मधुमेह-रोधी उपचार मिक्सटार्ड और लैंटस ने महीने के दौरान सुस्त बिक्री दर्ज की। कुल मिलाकर, 214,476 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य का संगठित फार्मा खुदरा बाजार, जनवरी में MAT (चलती वार्षिक कुल) के अनुसार 10% से अधिक बढ़ गया। उडिलिव, लिव 52, टेल्मा और जेरोडोल-एसपी सहित थेरेपी ने मजबूत दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की, जबकि इलेक्ट्राल 5% की वृद्धि के साथ 128 रैंक हासिल कर 5वें स्थान पर पहुंच गया। इसके अलावा, तीव्र खंड, जिसमें खांसी और सर्दी की दवाएं शामिल हैं, में 6% की वृद्धि देखी गई, जबकि क्रोनिक में लगभग दोगुना बढ़कर 11% हो गया। इस बीच, घरेलू कंपनियों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की वृद्धि जनवरी में 8% और 7% के साथ लगभग बराबर रही। अधिकांश घरेलू कंपनियों की वृद्धि भारत और अमेरिकी कारोबार सहित उभरते बाजारों में बिक्री से प्रेरित हो रही है। अमेरिका हमेशा से एक आकर्षक बाजार रहा है, जो उनके राजस्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रखता है। इसके अलावा, बहुराष्ट्रीय कंपनियों सहित कुछ कंपनियों को आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची में उनकी दवाओं को शामिल करने के हिस्से के रूप में किए गए नियामक मूल्य नियंत्रण से कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। विश्लेषकों को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2024 में कंपनियों की राजस्व वृद्धि लगभग 7-9% होगी, जो मूल्य वृद्धि और नए उत्पाद लॉन्च से समर्थित है। 2023 के एक बड़े हिस्से के दौरान, असमान मानसून के अलावा, मूल्य सीमा से कंपनियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिससे एक्यूट थेरेपी की बिक्री प्रभावित हुई।

दवाओं के सैंपल फेल

बद्दी (सोलन)- शुगर और दर्द समेत 46 दवाओं के सैंपल फेल मिले हैं। इसके चलते बाजार से इन दवाओं का स्टॉक वापस मंगवाया गया है। बता दें कि सैंपल फेल मिली दवाओं में अकेले हिमाचल प्रदेश मेकं बनी 14 दवाइयां शामिल हैं। प्रदेश की जिन 14 दवाओं के सैंपल फेल हुए हैं, उनमें सिरमौर की तीन, कांगड़ा की एक और सोलन जिले की 10 दवाओं के सैंपल फेल पाए गए हैं। केंद्रीय औषधी मानक नियंत्रण संगठन द्वारा जारी किए गए ड्रग अलर्ट में ये दवाएं मानकों पर सही नहीं पाई गई हैं। इन दवाओं में त्वचा में होने वाले संक्रमण, जीवाणु संक्रमण, भूख बढ़ाने वाली दवा, एलर्जी, गर्भाशय से अनियमित रक्त स्राव, एनीमिया, एसिडिटी एलर्जी, शुगर और दर्द की दवाएं शामिल हैं। जनवरी में देश में कुल 932 दवाओं के सैंपल लिए गए थे, जिनमें 886 पास हुए और 46 फेल हुए। जिन दवाओं के सैंपल फेल हुए हैं, बद्दी के लोधी माजरा की एक्विनोओ फार्मास्युटिक कंपनी की भूख बढ़ाने की दवा साइप्रोहेप्टाडीन ट्राईकोलिन साईट्रेट, पांवटा की जी लैबोरेटरी कंपनी की एलर्जी की दवा मोक्सीफ्लोक्सासिन शामिल हैं। मलकू माजरा के एंज फार्मा कंपनी की एनीमिया की दवा फोलिक एसिड, हलेरो लैब कंपनी की एसिडिटी की पेंटाप्रोजोल, हिल्लर लैब की एलर्जी की दवा लेवासिट्राजिन, के सैंपल फेल हुए हैं। मेग्नाटेक कंपनी की शुगर की दवा ग्लिमोपिराईड, मेटफोरमिन पियोग्लिटालोन, झाड़माजरी स्थित सश्री राम हेल्थ केयर कंपनी की एसिडिटी की दवा पेंटाप्रोजोल, बद्दी के भटोली कलां स्थित एएसपीओ कंपनी की त्वचा की एलर्जी की दवा मोंटेलुकास्ट, कांगड़ा जिले के राचिल फार्मा कंपनी की एलर्जी की लियोसिट्राडिन व बद्दी के मलकू माजरा स्थित एंज लाइफ साइंस कंपनी की दर्द की दवा डिक्लोफेनाक दवा के सैंपल फेल हुए हैं। ड्रग कंट्रोलर मनीष कपूर ने बताया कि जिन दवा उद्योगों के सैंपल फेल पाए गए हैं, उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया जाएगा। साथ ही इन दवाओं के स्टॉक भी बाजार से वापस मंगवाए जाएंगे। इसके अलावा, औषधी विभाग स्वयं भी इन सैंपल की जांच करेगा।

सप्लायर अरेस्ट

रायपुर (छग)- होलसेल सप्लायर एंजेसी संचालक को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से सवा लाख रुपये कीमत की प्रतिबंधित कोडिन सीरप जब्त की गई है। यह कार्रवाई देवेंद्र नगर और एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट की टीम ने संयुक्त रूप से की। एसपी संतोष सिंह ने बताया है कि नई दिल्ली, रोहिणी निवासी संदीप भारद्वाज को नशीली कफ सीरफ के साथ प्रतिबंधित टेबलेट सप्लाई करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। संदीप, दिल्ली में मेडिकल एजेंसी का संचालक है। वह यहीं से छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र व पूर्वोत्तर राज्यों में प्रतिबंधित कफ सिरप की सप्लाई करता था। गिरफ्तार किए गए आरोपी के कब्जे से पुलिस ने सवा लाख रुपए कीमत की छह सौ सीसी प्रतिबंधित कोडिन सीरप जब्त की है। बता दें कि देवेंद्र नगर पुलिस ने पिछले महीने टिकरापारा निवासी मोहम्मद अहमद, डोमार उर्फ पिंटू के कब्जे से कोडिन सीरप के साथ प्रतिबंधित नींद की टेबलेट जब्त की थी। पूछताछ में आरोपी युवक ने सीरप तथा टेबलेट महाराष्ट्र से ट्रांसपोर्ट के जरिए उसके पास पहुंचने की जानकारी दी थी। आरोपी मोहम्मद की निशानदेही पर महाराष्ट्र, नागपुर निवासी दवा कारोबारी कमलेश उपध्याय को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब तीन हजार करीब कफ सीरप की बोतलें जब्त की गई। कमलेश ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उसने यह दवा दिल्ली में मेडिकल एजेंसी के संचालक तथा होलसेल डीलर संदीप से मंगाया है। इसके बाद रायपुर पुलिस ने दिल्ली में आकर संदीप को गिरफ्तार करने में सफलता पाई। पुलिस के अनुसार संदीप जहां से कफ सीरप मंगाता था, उसकी भी जांच की जाएगी। संदीप को गिरफ्तार कर उसके संस्थान की तलाशी ली, तो जानकारी मिली कि संदीप केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं, महाराष्ट्र के साथ पूर्वोत्तर राज्य असम, गुवाहाटी, नागालैंड तथा अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में प्रतिबंधित कफ सीरप की आपूर्ति करता था। संदीप डिमांड के आधार पर प्रतिबंधित कफ सीरप आर्डर देकर मंगाता था और जहां सीरप भेजनी होती थी, वहां के लिए वह उक्त कफ सीरप को महाराष्ट्र भेजता था।

सरकार की शर्तों पर ही बनेंगे बल्क ड्रग फार्मा और मेडिकल डिवाइस पार्क

शिमला (हिमाचल प्रदेश)– बल्क ड्रग फार्मा पार्क और मेडिकल डिवाइस पार्क सरकार अपनी शर्तों पर ही बनाएगी। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने स्पष्ट कहा कि किसी भी पार्क को बंद करने की सरकार की कोई मंशा नहीं है। विधानसभा सदन में प्रश्नकाल के दौरान उन्होंने दोनों पार्क को एक रुपये लीज पर दी जमीन और जीएसटी में दी दस साल की छूट को लेकर पूर्व सरकार को घेरा। उन्होंने पूर्व की जयराम सरकार पर हिमाचल के हितों को बेचने के आरोप भी लगाए। भाजपा विधायक बिक्रम सिंह के सवाल का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मेडिकल डिवाइस पार्क में 400 एकड़ जमीन एक रुपये पर जमीन दी गई। मुफ्त में पानी देना है। तीन रुपये यूनिट पर बिजली भी देनी है। भारत सरकार ने इसके विकास पर केवल 100 करोड़ रुपये देने हैं। उद्योग मंत्री इस पर काम कर रहे हैं। मेडिकल डिवाइस पार्क को अपनी शर्त पर विकसित करेंगे, जिसमें हिमाचल के हित होंगे। सीएम ने कहा कि ऊना के हरोली में बल्क ड्रग फार्मा पार्क के लिए 1,400 एकड़ जमीन एक रुपये की लीज पर दी जानी है। इसमें भारत सरकार ने 1,000 करोड़ देने हैं। डीपीआर बनेगी तो 923 करोड़ रुपये हिमाचल सरकार देगी। सात रुपये प्रति यूनिट बिजली खरीदी जा रही है। इसे तीन रुपये प्रति यूनिट देना है। दस साल तक जीएसटी छोड़ दी है। दोनों ही पार्क बसेंगे, लेकिन इन्हें बसाने के लिए राज्य सरकार की अपनी शर्तें होंगी। इनके लिए अच्छी कंपनियों को लाया जाएगा। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के इतिहास में पहली बार इतना बड़ा प्रोजेक्ट मिला है। कोविड के हालात में प्रधानमंत्री ने निर्णय लिया है कि कैसे अपने पांव पर खड़े हों। तीन बल्क ड्रग्स फार्मा पार्क बनाने की बात हुई। हिमाचल जैसे छोटे राज्य को यह परियोजना ऐसे नहीं मिली है। इसके लिए अधिकारियों ने दिन-रात मेहनत की है। डेढ़ साल बाद भी सरकार यह तय नहीं कर पा रही कि निर्माण राज्य सरकार को करना है या किसी और से कराना है। उन्होंने कहा कि इस पार्क में 20 हजार से ज्यादा लोगों को रोजगार भी मिलना है। भाजपा विधायक बिक्रम सिंह के सवाल का जवाब देते हुए उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने कहा कि बल्क ड्रग पार्क के लिए तीन विकल्प सुझाए गए हैं। फैसला सरकार को करना है और इसके लिए जल्द कैबिनेट में चर्चा होगी। पहला विकल्प या तो राज्य सरकार एक हजार करोड़ रुपये का इसमें निवेश कर स्वयं निर्माण करे, या फिर किसी कंपनी के साथ करार कर इसका निर्माण करे। दूसरे विकल्प में 51 फीसदी की हिस्सेदारी सरकार रखे और 49 फीसदी की हिस्सेदारी निजी कंपनी को दे। तीसरा विकल्प पीपीपी मोड का है। इन पार्कों का कार्य पारदर्शिता के साथ किया है। भारत सरकार की गाइडलाइन के आधार पर कार्य हो रहा है। बल्क ड्रग पार्क के लिए पर्यावरण क्लीयरेंस के लिए दस्तावेज जमा करवा दिए हैं और मार्च में जन सुनवाई होगी। इस पार्क में जो ट्रीटमेंट प्लांट बनना है, वह अंतरराष्ट्रीय स्तर का होगा। पार्क का प्रोजेक्ट 1,923 करोड़ रुपये का है और इसके लिए केंद्र ने 225 करोड़ रुपये जारी कर दिए हैं। अगर इस प्रोजेक्ट में और देरी हुई तो निवेशक भी मिलना मुश्किल होंगे।

अस्पताल में घायल को चढ़ा दिया दूसरे ग्रुप का ब्लड

जयपुर (राजस्थान)– सरकारी अस्पताल सवाई मानसिंह हॉस्पीटल में नर्सिंग स्टाफ की बड़ी लापरवाही सामने आई है। घायल युवक को दूसरे ग्रुप का ब्लड चढ़ा दिया गया। इसके बाद युवक की दोनों किडनियों ने काम करना बंद कर दिया। मरीज की मौत हो गई। मृतक सचिन बांदीकुई का रहने वाला था और 12 फरवरी को उसका कोटपूतली के पास एक्सीडेंट हो गया था। इसके बाद परिजनों ने सचिन को एसएमएस अस्पताल जयपुर के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया था। सचिन के इलाज के दौरान ब्लड की जरूरत पड़ी। डॉक्टर ने मरीज का सेंपल लिया जो ओ पॉजिटिव था। लेकिन डॉक्टर की लापरवाही के चलते उन्हें एबी पॉजिटिव ब्लड चढ़ा दिया गया। इसके बाद सचिन के पेट और कमर में दर्द होने लगा। फिर से डॉक्टर ने सचिन का ब्लड सैंपल लिया तो परिजनों को पता चला कि सचिन का ब्लड ग्रुप ओ है और डॉक्टर ने एबी पॉजिटिव ब्लड चढ़ा दिया। जांच में सामने आया कि गलत ब्लड चढ़ाने से सचिन शर्मा की किडनियां खराब हो गई थी। इससके चलते मरीज सीरियस हो गया और उसे आईसीयू में भर्ती किया गया। हालांकि, डॉक्टर्स ने सचिन को बचाने की लाख कोशिश की, लेकिन एक गलती उनकी लाख कोशिशों पर भारी पड़ी। मरीज ने एसएमएस अस्पताल में दम तोड़ दिया। सचिन शर्मा की मौत के मामले में उसके परिजनों ने डॉक्टर्स पर लापरवाही के गंभीर आरोप लगाए हैं। परिजनों का कहना है कि समय रहते अगर डॉक्टर्स ध्यान देते तो सचिन की जान बच जाती। परिजनों का कहना है कि डॉक्टर ने पर्ची पर ब्ल0ण्ड सेंपल लिख कर दिया। इतनी बड़ी लापरवाही कैसे हो गई। सचिन के ताऊ महादेव और भाई लवकुश ने बताया कि इमरजेंसी केस को देखते हुए उसका ब्लड सैंपल लिया गया। यह ब्लड सैंपल नर्सिंग स्टाफ की जगह एक वार्ड बॉय ने लिया। इसी कारण बड़ी गलती हुई। इसके बाद गलत ब्लड ग्रुप की पर्ची पर उसे ब्लड और प्लाज्मा चढ़ा दिया गया। ब्लड चढने के बाद पीडित सचिन की तबीयत खराब हो गई। जिससे उसकी मौत हुई। सचिन के पिता ने एसडीएम के नाम तहसीलदार को ज्ञापन सौंपकर दो दोषी डॉक्टर और अन्य स्टाफ के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

जनहित में जारी

आपको विदित है की वित्तीय वर्ष २०२३-२४ समाप्त होने में केवल 1 माह की अवधि शेष है, एवं माह फरवरी एवं माह मार्च के GSTR -1 जाने है. अत: आपसे निवेदन है की वर्ष में जिन भी व्यापारियों से GST सम्बंधित लेन देन हुए है उनके खातों का मिलान करके यदि कोई बिल एंट्री करने से छूट गए हो अथवा बिल में GST की राशि, दिनांक, माल खरीदने वाले का GST क्रमांक, बिल क्रमांक आदि कोई भी सुधार करने की आवश्यकता हो तो कृपया 31.03. 2024 तक सूचित करें. साथ ही साथ आपके ऑनलाइन जनरेटेड GSTR2B का निरिक्षण कर यदि आपके सप्लायर द्वारा आपको कोई इनवॉइस जारी किया गया हो जो की GSTR2B में परिलक्षित नहीं हो रहा हो अथवा गलत राशि परिलक्षित हो रही हो तो कृपया अपने माल अथवा सेवा आपूर्तिकर्ता से संपर्क कर उचित कार्यवाही करने का निवेदन करें.

– प्रसाद दानवें, मो० 923080627

गर्भपात की गोलियां बेचते पकड़ा गया

नारनौल– गर्भपात की गोलियां बेचने के आरोप में एक सब्जी विक्रेता को गिरफ्तार करने का समाचार है। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने रेवाड़ी के गांव झाल में बीती शाम छापेमारी की और एक व्यक्ति को तीन हजार में गर्भपात की छह गोली बेचते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया। बताया गया है कि गर्भपात की गोली बेचने वाला टैम्पो में सब्जी बेचने का काम करता है। आरोपी ने बताया कि इसमें मेहनत ज्यादा व पैसा कम मिल रहा है। इसी वजह से कमाई का शार्ट तरीका ढुंढा और यह अवैध धंधा करने लगा। अब कोसली पुलिस पूछताछ कर रही है कि यह सब्जी बेचने वाला व्यक्ति किस फार्मेसी संचालक या चिकित्सक के संपर्क में है। जानक. ारी के अनुसार सीएमओ डा. रमेश. चंद्र आर्य को गुप्त सूचना मिल रही थी कि गर्भपात की गोली बिना चिकित्सक व पहचान पत्र के अवैध रूप से जिले में बेची जा रही हैं। सूचना के आधार पर सीएमओ ने रविवार को टीम गठित की। इसमें नोडल अधिकारी डा. विजय यादव व डिलिंग अशोक कुमार को शामिल किया। इस टीम ने एक डिकॉय मरीज को तैयार किया। स्वास्थ्य विभाग की टीम नारनौल से रवाना हुई। कनीना पहुंचने पर डिकॉय मरीज ने मुखबरी से मिले मोबाइल नंबर पर संपर्क किया। मोबाइल रिसीव करने वाले व्यक्ति ने डिकॉय मरीज को रेवाड़ी जिला के कोसली क्षेत्र के गांव झाल में आने को कहा। शाम डिकॉय वहां पहुंचा तो टीम ने उसे पांच-पांच सौ के छह नोट यानी कुल तीन हजार रुपये देकर भेजा। डिकॉय मरीज को वहां एक व्यक्ति मिला और उसने पैसा गिनने के बाद गर्भपात की छह गोली थमा दी। इसके बाद डिकॉय मरीज से टीम को इशारा कर दिया। टीम ने मौके पर ही व्यक्ति को पकड़ लिया और रेवाड़ी स्वास्थ्य विभाग सहित वहां की पुलिस को मामले से अवगत करवाया। पूछताछ में पकड़े गए व्यक्ति ने खुद का नाम श्रीनारायण पुत्र रमाशंकर वासी इलाहाबाद यूपी बताया है। आरोपित श्रीनारायण ने बताया कि वह टैम्पो में सब्जी रखकर गांव-गांव जाकर बेचता है। इस धंधे में इतना फायदा नहीं था। इसी वजह से वह गर्भपात की गोली बेचकर मोटा मुनाफा कमा रहा था। अब पुलिस आरो. पित से यह पूछताछ कर रही है कि सब्जी बेचने वाला किस फार्मेसी संचालक या चिकित्सक के संपर्क में है और उस गिरोही में और कौन-कौन शामिल है। स्वास्थ्य विभाग के नियम कहते है कि एमटीपी किट रखना तथा बिक्री करना गैर कानूनी है। सिर्फ एमडी गायनाकोलोजिस्ट की निगरानी में ही यह किट प्रयोग की जा सकती है। एनबीबीएस डाक्टर भी इस किट के प्रयोग की प्रेसक्रिप्शन नहीं दे सकते। एमटीपी किट बनाने वाली हर दवा कंपनी को कानूनी रूप से हर किट के खरीददार का रिकॉर्ड रखना अनिवार्य है।

विदेशी फार्मा कंपनियां देश में बंद करेंगी अपना दवा कारोबार

मुंबई– कई विदेशी फार्मा कंपनियां भारत से अपना करोबार जल्द ही बंद करने वाली हैं। कंपनियों की ओर से इस तरह के संकेत मिलने लगे हैं। स्विस की बड़ी फार्मा कंपनी नोवार्टिस ने घोषणा की है कि उसने अपनी कंपनी की स्ट्रेटजिक रिव्यू शुरू कर दी है। इसके आधार पर वह जल्द ही भारत में दवा बनाना बंद कर सकती है। इस घोषणा के तहत कुछ चीजों को सूचीबद्ध किया गया है। इसमें सहायक कंपनी में इसकी हिस्सेदारी का आकलन किया जा रहा है। करीब तीन महीने पहले यूके की बड़ी कंपनी एस्ट्राजेनेका ने भी घोषणा की थी कि वह ग्लोबल स्ट्रेटजिक रिव्यू के आधार पर भारत में दवा बनाने की कंपनी से बाहर हो सकती है। कंपनियों की ओर से ये घोषणाएं उस पैटर्न को फॉलो करती हैं जिसमें फाइजर, सनोफी, एस्ट्राजेनेका और जीएसके जैसी फार्मा दिग्गजों ने पिछले कुछ सालों में विनिर्माण, बिक्री और विपणन जैसे मुख्य कार्यों में जनशक्ति कम कर दी है। इन्होंने परिचालन में कटौती की है। उपरोक्त दवा कंपनियों में से कुछ की भारत में अच्छी-खासी विरासत है। कई तो इनमें सौ साल पुरानी है। भारतीय बाजार में कुछ समय पहले ही ये बढ़त हासिल करने की होड़ में थी। इसके बावजूद अपना प्रदर्शन कम करने की इनकी योजना हैरान करने वाली है। बाहरी फार्मा के भारत से कारोबार समेटने के पीछे कई मुख्य कारण बताए जा रहे हैं। गौरतलब है कि देश कुछ सबसे गंभीर स्वास्थ्य चुनौतियां भी हैं। बढ़ती प्रतिस्पर्धा, उच्च परिचालन लागत और कम व्यवहार्य व्यवसाय ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपनी रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया है। वे मुख्य दक्षताओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। भारत में विनिर्माण की पिछली रणनीति से वे लाइसेंसिंग और विपणन समझौतों में परिवर्तित हो गए हैं। इन सालों में नोवार्टिस, रोश, एली लिली और फाइजर ने प्रमुख उपचारों के लिए टोरेंट, ल्यूपिन, सिप्ला और ग्लेनमार्क जैसी घरेलू कंपनियों के साथ समझौता किया है। नोवार्टिस की बात करें तो कंपनी ने हाल ही में अपने उच्च-विकास वाले नेत्र विज्ञान ब्रांडों को 1,000 करोड़ रुपये से ज्यादा में मुंबई स्थित जेबी केमिकल्स को बेच दिया है। नोवार्टिस इंडिया के पूर्व उपाध्यक्ष रंजीत शाहनी का कहना है कि नियामकीय बाधाओं, आईपीआर चुनौतियों और अपने भारतीय व्यवसायों से लाभ/मूल्य उत्पन्न करने के दबाव का सामना करते हुए, अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारतीय बाजार के लिए अपनी रणनीति का पुनर्मूल्यांकन कर रही हैं।

हॉस्पिटल में मेडिकल स्टोर पर रेड

बाराबंकी (उत्तर प्रदेश)– हॉस्पिटल में खुले हुए मेडिकल स्टोर पर छापामारी की गई है। यहां बाजार में 952 रुपये में बिकने वाला इंजेक्शन 3600 में बेचा जा रहा था। औषधि विभाग की टीम ने मेडिकल स्टोर को सील कर दिया है। शहर के एक हॉस्पिटल में संच. लित मेडिकल स्टोर से 952 रुपये वाला इंजेक्शन मरीजों को 3600 रुपये में बेचा जा रहा था। शिकायत के बाद औषधि निरीक्षक ने अस्पताल पहुंच कर जांच की तो शिकायत सही पाई गई। इस पर स्टोर पर उपलब्ध दवाओं को जब्त करते हुए मेडिकल स्टोर को अग्रिम आदेशों तक सील कर दिया है। औषधि निरीक्षक सीमा सिंह ने बताया कि फतहाबाद में सुमन हॉस्पिटल संचालित है। एक तीमारदार ने शिकायत दी कि अस्पताल में एंटीबायोटिक इंजेक्शन जिसकी बाजार में कीमत 952 रुपये है, उसके भर्ती मरीजों से 3600 रुपये लिए जा रहे हैं। औषधि विभाग की टीम ने जांच की तो अस्पताल में संचालित मेडिकल स्टोर में मोरोपेनम, मोरोटरेक्स, मेरोरिन और मरोस इंजेक्शन का भंडार मिला। इनकी एमआरपी 3600 से 3350 रुपये पाई गई। जबकि यही इंजेक्शन बाजार में 952 रुपये में जीएसटी हटाकर बेचे जा रहे हैं। इस बारे में स्टोर संच. ालक से बिल दिखाने के लिए कहा गया तो वह कोई बिल नहीं दिखा पाए। इस पर अस्पताल के मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध सभी इंजेक्शन जब्त कर लिए गए हैं। औषधि निरीक्षक ने मेडिकल स्टोर को अग्रिम आदेश तक सील कर दिया है। वहीं, संचालक को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया गया है। निरीक्षक ने बताया कि इस बारे में उत्तर प्रदेश प्राइस मॉनिटरिंग एंड रिसोर्स यूनिट को भी शिकायत भेजी गई है।

ड्रग्स ले जाता सप्लायर गिरफ्तार

गुरुग्राम (हरियाणा)– कार में प्रतिबंधित ड्रग्स ले जाते हुए एक सप्लायर को गुरुग्राम से गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान भोरा कलां गांव निवासी प्रवीण के रूप में हुई है। उसकी कार से डायसाइक्लोमाइन हाइड्रोक्लोराइड, ट्रामाडोल हाइड्रोक्लोराइड और एसिटामिनोफेन कैप्सूल सहित दवाओं और नशीले पदार्थों के 80 छोटे बॉक्स बरामद किए गए। बताया गया है कि आरोपी प्रवीण एनडीपीएस अधिनियम के तहत रेवाड़ी में दर्ज एक अन्य मामले में भी वांछित है। पुलिस प्रवक्ता सुधीर कुमार ने बताया कि सेक्टर 40 क्राइम यूनिट की एक टीम ने खेडकी दौला टोल प्लाजा से ठीक पहले अपनो घर होटल के पास से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। जांच के दौरान आरोपी की कार से अवैध दवाओं और नशीले पदार्थों के 80 से अधिक छोटे बक्से बरामद किए गए। इस संबंध में खेडकी दौला थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। आरोपी की पहचान भोरा कलां गांव निवासी प्रवीण के रूप में हुई है। आरोपी की कार से डायसाइक्लोमाइन हाइड्रोक्लोराइड, ट्रामाडोल हाइड्रोक्लोराइड और एसिटामिनोफेन कैप्सूल सहित दवाओं और नशीले पदार्थों के अस्सी छोटे बक्से बरामद किए गए। पुलिस ने कार और नशीली दवाएं जब्त कर ली हैं। पुलिस के अनुसार आरोपी प्रवीण एनडीपीएस अधिनियम के तहत रेवाड़ी में दर्ज एक अन्य मामले में भी वांछित है। आरोपी को कोर्ट में पेश करने की तैयारी की जा रही है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

कर्म ही पूजा है

MEDICAL DARPAN MEDIA HOUSE

All India Circulation

आवश्यकता है

समस्त भारतवर्ष में अपनी इच्छानुसार शहर का चयन कर संवाददाता व विज्ञापन बुकिंग हेतु प्रतिनिधि व ऑफिस हेतु

- ऑफिस स्टाफ
- सोशल मीडिया एक्सपर्ट
- कम्प्यूटर ऑपरेटर
- आशुलिपिक
- ग्राफिक्स डिजाइनर
- रिसेप्शनिस्ट
- अकाउन्टेंट
- टेलीकॉलर
- सॉफ्टवेयर व हार्डवेयर विशेषज्ञ

आय Rs.10,000/- to Rs.25,000/- तक, कार्यानुसार

Send Your Resume & Contact us:

9045029158, 9410434811

medicaldarpanaccount@gmail.com, medicaldarpan.ctp@gmail.com

- मैडीकल दर्पण
- Pharma दर्पण
- Pharma News
- ADR (A Drug Index)
- medicaldarpan.com
- onlinepharmamarket.com

Limca Book of Records Holder

• Soap Museum • Bank of Visiting Cards

Medical Darpan Media House, Pushpanjali Enclave, K.P. Road, Bulandshahr 203001 (UP)

'आयु': "जीवन" और 'वेद': "ज्ञान"

स्वस्थ व्यक्ति एवं स्वस्थ समाज...

Jiwan AYURVED

जीवन आयुर्वेद भवन

शास्त्रोक्त एवं पेटेंट आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माता एवं थोक विक्रेता

भस्म, पिष्टी | रस रसायन | आसव अरिष्ट | वटी, गुटिका | कूपीपक्व रसायन

गुग्गुल, स्वर्ण योग | लोह, मंडूर | पर्पटी, चूर्ण | अन्य पेटेंट दवाईयाँ

JIWAN AYURVED BHAWAN

A GMP & An ISO 9001:2008 Certified Company

Kachaura-204211 Distt. Hathras (INDIA)

Helpline No.: 09412328744, Mob.: 09456235775, 09412446828,

Whatsapp : 09927560022, 9997657780

E-mail : jiwanayurved@gmail.com, Website : www.jiwanayurvdbhawan.com

Mfg. Lic. No.: A-1593/88/2015 & GSTIN : 09ACSPC3585A1ZL

आयुर्वेद के साथ अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाएं

स्वप्न शास्त्र
दही देखना

डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा

नए-नए स्थान पर भ्रमण करने का अवसर प्राप्त होगा तथा यात्राओं के द्वारा आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा । बड़े शहर में स्थानांतरण होने की संभावना है तथा गांव को छोड़कर शहर में निवास करने का अवसर प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि उत्पन्न होगी तथा दान आदि धार्मिक कर्म करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। दिनचर्या में परिवर्तन होगा तथा समय का सदुपयोग होगा। अतिथि सत्कार करने का अवसर प्राप्त होगा तथा सुंदर वस्त्र एवं आभूषणों की प्राप्ति होगी। प्रियजनों से भेंट होगी तथा परस्पर उपहारों का आदान-प्रदान होगा। व्यवसाय संबंधी समस्याओं का समाधान होगा तथा मन प्रसन्न रहेगा। मानसिक उलझनें समाप्त होगी तथा रुके हुए कार्य बनेंगे किसी बड़े अधिकारी की सहायता के द्वारा बिगड़े हुए कार्य बनेंगे तथा व्यापार में लाभ होगा।

कच्चा फल खाना

व्यापारिक कार्यों में हानि होगी तथा आर्थिक आर्थिक प्राप्ति के अवसरों में कमी आएगी। विदेशी संबंधी कार्यों में असफलता की प्राप्ति होगी तथा पासपोर्ट इत्यादि में अधिक धन व्यय होगा। लकड़ी के कार्यों में निराशाजनक स्थिति रहेगी तथा अनेक प्रयत्नों के उपरांत भी स्थिति पूर्ववत् बनी रहेगी। परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने की संभावना है तथा प्रतियोगिता में असफलता का सामना करना पड़ेगा। समय प्रतिकूल रहेगा तथा बनते हुए कार्य भी बिगड़ेंगे । धन के अभाव के कारण अनेक कार्य अपूर्ण रह जाएंगे। प्रेम संबंधों में असफलता प्राप्त होगी तथा किसी प्रकार के संदेह के कारण संबंधों में दरार आ सकती है। माता एवं पिता के स्वास्थ्य की ओर से चिंताएं बनी रहेगी तथा मन किसी अनजाने भय से ग्रस्त रहेगा। सट्टे तथा लाटरी में धन का अपव्यय होगा तथा हानि उठानी पड़ेगी । आर्थिक स्थिति में ना के बराबर सुधार होगा तथा घरेलू सुख सुविधाओं में कमी आएगी। ससुराल पक्ष से संबंधों में कटुता आएगी तथा विवाद होने की संभावना है। सास-श्वसुर की ओर से मिलने वाली सुविधाओं में कमी आएगी तथा जीविकोपार्जन की समस्याएं पूर्ववत् बनी रहेंगी। पारिवारिक उलझनों से घिरे रहेंगे तथा पारिवारिक वातावरण में अशांति व्याप्त रहेगी।

– डा॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा, मो॰ 9711034710, 8630907504.

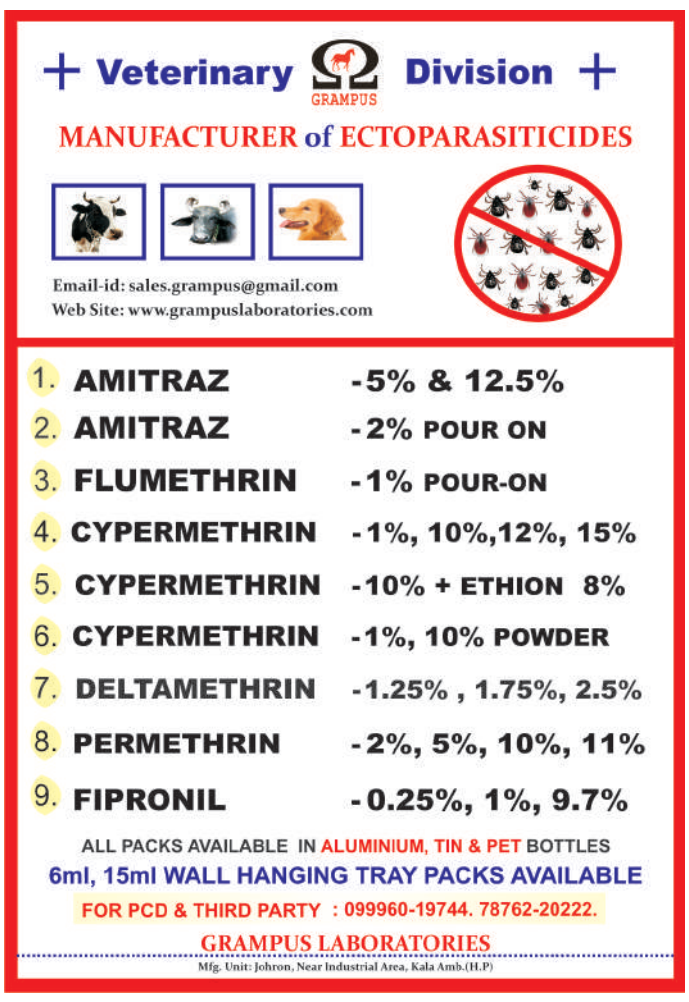

प्रोटीन का बहुत अधिक सेवन धमनियों के लिए जोखिम भरा है और इसके लिए अमीनो एसिड जिम्मेदार है: अध्ययन

वाशिंगटन: यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग स्कूल ऑफ मेडिसिन के शोधकर्ताओं ने एक जैविक तंत्र पाया है जिसके द्वारा उच्च प्रोटीन आहार एथेरोस्क्लेरोसिस के खतरे को बढ़ाता है। परिणाम नेचर मेटाबॉलिज्म में प्रकाशित हुए थे। अध्ययन, जिसमें छोटे मानव परीक्षणों को चूहों और पेट्री डिश में कोशिकाओं पर प्रयोगों के साथ जोड़ा गया, से पता चला कि प्रोटीन से 22 प्रतिशत से अधिक आहार कैलोरी का उपभोग करने से प्रतिरक्षा कोशिकाओं की सक्रियता बढ़ सकती है जो एथेरोस्क्लेरोटिक प्लाक निर्माण में भूमिका निभाती हैं, जिससे रोग का खतरा. इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने दिखाया कि एक अमीनो एसिड-ल्यूसीन-एथेरोस्क्लेरोसिस, या कठोर, कठोर धमनियों से जुड़े रोग संबंधी मार्गों को चलाने में असंगत भूमिका निभाता है। हमारे अध्ययन से पता चलता है कि बेहतर चयापचय स्वास्थ्य की खोज में अपने प्रोटीन का सेवन बढ़ाना रामबाण नहीं है। आप अपनी धमनियों को वास्तविक नुकसान पहुंचा सकते हैं, वरिष्ठ और सह-संबंधित लेखक बाबाक रजानी , एमडी, पीएचडी, प्रोफेसर ने कहा। पिट में कार्डियोलॉजी के. हमारी आशा है कि यह शोध सटीक तरीके से आहार को संशोधित करने के तरीकों के बारे में बातचीत शुरू करेगा जो आणविक स्तर पर शरीर के कार्य को प्रभावित कर सकता है और रोग के जोखिमों को कम कर सकता है। पिछले दशक में औसत अमेरिकी आहार के एक सर्वेक्षण के अनुसार, अमेरिकी आम तौर पर बहुत अधिक प्रोटीन का सेवन करते हैं, ज्यादातर पशु स्रोतों से। इसके अलावा, लगभग एक चौथाई आबादी को सभी दैनिक कैलोरी का 22 प्रतिशत से अधिक अकेले प्रोटीन से प्राप्त होता हैरजानी का कहना है कि यह चलन संभवत: इस लोकप्रिय विचार से प्रेरित है कि स्वस्थ जीवन के लिए आहार प्रोटीन आवश्यक है । लेकिन उनके और अन्य समूहों ने दिखाया है कि प्रोटीन पर अत्यधिक निर्भरता दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए इतनी अच्छी बात नहीं हो सकती है। उनके 2020 के शोध के बाद, जिसमें रजानी की प्रयोगशाला ने पहली बार दिखाया कि अतिरिक्त आहार प्रोटीन से चूहों में एथेरोस्क्लेरोसिस का खतरा बढ़ जाता है, कोलंबिया के मिसौरी विश्वविद्यालय में एक चयापचय विशेषज्ञ, बेटिना मिटेंडॉर्फर , पीएचडी के सहयोग से उनके अगले अध्ययन ने गहराई से अध्ययन किया। संभावित तंत्र और मानव शरीर के लिए इसकी प्रासंगिकता। उत्तर पर पहुंचने के लिए, रजानी की प्रयोगशाला, प्रथम-लेखक जियानग्यु झांग, पीएच.डी., और दिव्या कपूर , एमडी के नेतृत्व में, सेलुलर जीव विज्ञान और चयापचय में अपनी विशेषज्ञता को संयोजित करने और प्रयोगों की एक श्रृंखला करने के लिए मिटेंडॉर्फर के समूह के साथ मिलकर काम किया। विभिन्न मॉडलों में - कोशिकाओं से चूहों तक मनुष्यों तक। हमने अपने यंत्रवत अध्ययनों में दिखाया है कि अमीनो एसिड, जो वास्तव में प्रोटीन के निर्माण खंड हैं, विशिष्ट सिग्नलिंग तंत्र के माध्यम से बीमारी को ट्रिगर कर सकते हैं और फिर इन कोशिकाओं के चयापचय को भी बदल सकते हैं, मिटेंडॉर्फर ने कहा। ष्उदाहरण के लिए, मैक्रोफेज नामक वाहिका में छोटी प्रतिरक्षा कोशिकाएं एथेरोस्क्लेरोसिस के विकास को गति प्रदान कर सकती हैं। प्रोटीन-समृद्ध भोजन के सेवन के बाद प्रतिरक्षा कोशिका सक्रियण की समयरेखा निर्धारित करने के लिए स्वस्थ मानव विषयों में प्रारंभिक प्रयोगों के आधार पर, शोधकर्ताओं ने चूहों और मानव मैक्रोफेज में समान स्थितियों का अनुकरण किया, प्रतिरक्षा कोशिकाएं जो विशेष रूप से प्राप्त अमीनो एसिड के प्रति संवेदनशील होती हैं। प्रोटीन उनके काम से पता चला कि प्रोटीन के माध्यम से दैनिक आहार कैलोरी का 22 प्रतिशत से अधिक उपभोग मैक्रोफेज पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है जो सेलुलर मलबे को साफ करने के लिए जिम्मेदार हैं, जिससे जहाजों की दीवारों के अंदर उन कोशिकाओं के कब्रिस्तान का संचय होता है और एथेरोस्क्लोरोटिक प्लेक खराब हो जाते हैं। अधिक समय तक। दिलचस्प बात यह है कि परिसंचारी अमीनो एसिड के विश्लेषण से पता चला है कि ल्यूसीन - गोमांस, अंडे और दूध जैसे पशु-व्युत्पन्न खाद्य पदार्थों में समृद्ध एक अमीनो एसिड - मुख्य रूप से असामान्य मैक्रोफेज सक्रियण और एथेरोस्क्लेरोसिस जोखिम के लिए जिम्मेदार है, जो व्यक्तिगत आहार संशोधन पर आगे के शोध के लिए एक संभावित अवसर का सुझाव देता है।, या सटीक पोषण। रजी ने ध्यान दिया कि कई सवालों के जवाब दिए जाने बाकी हैं, मुख्य रूप से: क्या होता है जब कोई व्यक्ति यूएसडीए द्वारा अनुशंसित प्रोटीन से दैनिक कैलोरी का 15 प्रतिशत और प्रोटीन से दैनिक कैलोरी का 22 प्रतिशत उपभोग करता है, और यदि प्रोटीन के लाभों को अधिकतम करने के लिए स्वीट स्पॉट - जैसे मांसपेशियों का लाभ - जबकि हृदय रोग की ओर ले जाने वाली हानिकारक घटनाओं के आणविक झरने को शुरू करने से बचना। निष्कर्ष विशेष रूप से अस्पताल सेटिंग्स में प्रासंगिक हैं, जहां पोषण विशेषज्ञ अक्सर मांसपेशियों और ताकत को बनाए रखने के लिए सबसे बीमार रोगियों के लिए प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की सलाह देते हैं। रजानी ने कहा, शायद आँख बंद करके प्रोटीन लोड बढ़ाना गलत है। इसके बजाय, आहार को समग्र रूप से देखना और संतुलित भोजन का सुझाव देना महत्वपूर्ण है जो अनजाने में हृदय संबंधी स्थितियों को नहीं बढ़ाएगा, खासकर हृदय रोग और वाहिका विकारों के जोखिम वाले लोगों में। रजानी ने यह भी नोट किया कि ये निष्कर्ष बताते हैं कि पौधे और पशु प्रोटीन से समृद्ध आहार के बीच ल्यूसीन के स्तर में अंतर हृदय और चयापचय स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव में अंतर को समझा सकता है। उन्होंने कहा, भविष्य के आहार संबंधी दिशानिर्देशों को सूचित करने के लिए इस प्रकार के यंत्रवत अनुसंधान की क्षमता काफी रोमांचक है।

दवा को कालाजार के इलाज के लिए मिली मंजूरी

अहमदाबाद- जायडस फार्मा की दवा को कालाजार (लीशमैनियासिस) के इलाज के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने मंजूरी दे दी है। कंपनी ने बताया कि कालाजार के उपचार की प्रमुख दवा मिल्टेफोसिन के लिए कच्चे माल यानी एपीआई को डब्ल्यूएचओ ने प्री क्वालिफिकेशन मंजूरी प्रदान कर दी है। सूची में जोड़े जाने के बाद अब इस दवा की वैश्विक स्तर तक पहुंच हो सकेगी। गौरतलब है कि लीशमैनियासिस प्रोटोजोआ परजीवियों के कारण होती है। यह संक्रमित मादा फ्लेबोटोमाइन सैंडफ्लाइज काली मक्खी के काटने से फैलती है। यह बीमारी कुपोषण, विस्थापन, रहने की खराब स्थिति, कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता और सबसे गरीब लोगों को होती है। इस बीमारी के तीन मुख्य रूप बताए गए हैं। इनमें क्यूटैनियस लीशमैनियासिस (सीएल), विसरल लीशमैनियासिस (वीएल) जिसे कालाजार भी कहा जाता है और म्युकोक्यूटैनियस लीशमैनियासिस (एमसीएल)। सीएल सबसे ज्यादा पाई जाने वाली बीमारी है। वीएल सबसे गंभीर है और एमसीएल में आदमी अपने रोजमर्रा के काम भी नहीं कर पाता। विशेषज्ञों के अनुसार अगर सही समय पर वीएल का इलाज नहीं कराया जाए तो 90 फीसदी मामलों में मरीज की जान चली जाती है। अनुमानत: हर साल 70 हजार से 1 लाख मामले आते हैं और इनमें वीएल के 30 हजार मामले होते हैं। साल 2018 में सीएल और वीएल के लिए क्रमश: 92 और 82 देशों को महामारी के लिहाज से संवेदनशील माना गया था। आज 1 अरब से अधिक लोग लीशमैनियासिस की आशंका वाले क्षेत्रों में रहते हैं और संक्रमण के जोखिम में हैं। बता दें कि जायडस लाइफसाइंसेज के टीका प्रौद्योगिकी केंद्र (वीटीसी) के दो आरऐंडडी केंद्र लीशमैनियासिस रोधी टीका निर्माण में लगे हैं। ये केंद्र इटली के कैटेनिया और अहमदाबाद में हैं।

कैंसर दवा के लिए घरेलू मसालों का इस्तेमाल

मद्रास- कैंसर दवा के लिए घरेलू मसालों का इस्तेमाल कर सफलता पाई गई है। मद्रास (आईआईटी) के शोधकर्ताओं ने कैंसर के इलाज के लिए भारतीय मसालों के इस्तेमाल का पेटेंट करवाया है। पशुओं पर इसके अध्ययन में सफलता मिल चुकी है। अब इसका क्लीनिकल ट्रायल किया जाएगा। गौरतलब है कि भारतीय मसालों का इस्तेमाल खाने के स्वाद को बढ़ाने के लिए ही करते हैं। इन मसालों का इस्तेमाल चेहरे की त्वचा का सौंदर्य बढ़ाने के लिए भी करते हैं। आईआईटी मद्रास के शोधकर्ताओं ने दावा किया है अब इन्ही मसालों से कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी का भी इलाज किया जा सकेगा। बता दें कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास के शोधकर्ताओं ने कैंसर के इलाज के लिए भारतीय मसालों के उपयोग का पेटेंट कराया है। अधिकारियों के अनुसार, यह दवाएं 2028 तक बाजार में उपलब्ध होने की संभावना है। इन मसालों से बनी नैनो दवाइयों का लंग, सर्वाइकल, ब्रेस्ट, कोलन, ओरल और थायरॉयड में कैंसर की कोशिकाओं पर असर दिखा है। लेकिन ये सामान्य कोशिकाओं के लिए सुरक्षित पाई गई हैं। शोधकर्ता सुरक्षा और लागत के मुद्दों पर काम कर रहे हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार पशुओं पर इसके अध्ययन में सफलता मिली है। तीन से चार सालों में इस दवा को बाजार में उपलब्ध कराने का लक्ष्य है। साथ ही क्लिनिकल ट्रायल की योजना पर भी काम हो रहा है। आईआईटी-मद्रास के प्रोफेसर आर नागराजन ने बताया कि सदियों से हमें भारतीय मसालों के लाभ के बारे में बताया गया है। मसालों की जैव उपलब्धता ने उनके अनुप्रयोग और उपयोग को सीमित कर दिया गया है। नैनो-इमल्शन इसी बाधा को प्रभावी रूप से पार कर जाता है। नैनो-इमल्शन को स्थिर करना एक महत्वपूर्ण विचार था और इसे हमारी प्रयोगशाला में ही समायोजित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस दवा के कोई साइड इफेक्ट नहीं होंगे। इससे इलाज की लागत भी कम आएगी।

हॉस्पिटल से दवाई चुराने वाले रैकेट का पर्दाफाश

आगरा- मिलिट्री हॉस्पिटल में सप्लाई होने वाली दवाओं को चुराकर बाजार में बेचने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया गया है। गैंग के सदस्य दवाओं पर लगे सप्लाई लेवल, क्यूआर कोड और बैच नंबर को थिनर से साफ कर देते थे। उस पर अपने नए लेवल लगाकर बेच देते थे। एएनटीएफ और पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई कर रैकेट के 7 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से 40 लाख की दवाएं और बिक्री में इस्तेमाल करने वाले उपकरण भी बरामद किए हैं। डीसीपी सिटी सूरज कुमार राय ने बताया कि एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) को सूचना मिली थी कि आगरा में बड़े पैमाने पर सेना की दवाओं की सप्लाई की जा रही है। पुलिस की सर्विलांस टीम ने सूचना के आधार पर फुव्वारा मंडी के दवा बाजार में छापा डाला। यहां से पुलिस ने बड़ी मात्रा में दवाओं का जखीरा पकड़ा। यह दवाएं सेना के अस्पतालों में इस्तेमाल की जाती हैं। इनकी कीमत लगभग 40 लाख बताई गई है। पूछताछ में पता चला कि ये गिरोह दवाओं से नॉट फोर सेल का लेवल थिनर से हटा देते थे। इसके स्थान पर कोड और एमआरपी अंकित कर देते थे। फिर इन्हें दवा बाजार में सप्लाई करते थे। आरोपियों को नंदू नामक युवक इन दवाओं की सप्लाई देता था पुलिस ने अभी 7 आरोपियों को हिरासत में लिया है। इनमें महेंद्र उदवानी निवासी ग्वालियर मध्य प्रदेश, फरहान बेग नई बस्ती आगरा, नीरज राजौरा बुढ़ान सैय्यद आगरा, अजय गोयल सीताराम कालोनी बल्केश्वर आगरा, संस्कार गुप्ता बारह भाई गली बेलनगंज आगरा, प्रवेश राजपूत ताजगंज आगरा और राजेश भाटिया उर्फ राजू नॉर्थ ईदगाह आगरा के नाम शामिल हैं। सभी आरोपियों पर गैंगस्टर के तहत अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है। डीसीपी सिटी ने बताया कि अवैध रुप से अर्जित की गई संपत्ति को कुर्क किया जाएगा। इस रैकैट में कई अन्य लोगों के नाम भी सामने आ रहे हैं, जिनके खिलाफ साक्ष्य एकत्र किए जा रहे हैं।

आरोपी

भोपाल (मप्र)- आयुर्वेदिक दवा से इलाज करने व दवा उपलब्ध कराने के नाम पर सात लाख रुपये ठगने के दो आरोपी गिरफ्तार किए गए हैं। यह ठगी महाराष्ट्र के एक गिरोह से जुड़े तीन लोगों ने भोपाल में दो साल पहले की थी। इनका एक साथी पहले गिरफ्तार हो चुका है। अन्य दो आरोपी अब हाथ लगे हैं। एमपी नगर पुलिस ने कोलार पुलिस की मदद से आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। एमपीनगर पुलिस ने बताया कि दोनों आरोपियों को थाने लाकर पूछताछ की तो पता चला कि आरोपित ने 2021 में एक परिवार के साथ आयुर्वेदिक दवा से घुटनों के इलाज का दावा कर करीब सात लाख 51 हजार की ठगी की थी। इस मामले में एमपीनगर थाने में धोखाधड़ी की धाराओं में एफआइआर भी दर्ज की गई थी। इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया था, जबकि बाकी फरार थे। गिरफ्तार आरोपियों में शांता दुर्गाप्पा वेदू, अनिल दुर्गाप्पा वेदू और करन यलप्पा वेदू तीनों निवासी कोल्हापुर, महाराष्ट्र हैं। आरोपी महिला को अपने गिरोह में इसलिए रखते थे ताकि उन पर कोई शंका न कर सके। आरोपी ऐसे लोगो को टारगेट करते थे, जिनके परिवार मे किसी व्यक्ति को गंभीर बीमारी हो। ऐसे लोगों को आयुर्वेदिक इलाज के नाम पर महंगी आयुर्वेदिक दवाइयों से स्वस्थ होने का आश्वा. सन देकर लोगो के साथ धोखाधड़ी करते थे।

PALCO

Free consultancy and set up for old / new nursing home, medical center / hospitals, R&D LAB, educational science lab school, all industries lab with trunkey projects in pan India.

Contact : Mr. R.P. PAL / NEERAJ PAL

Call : 9891177191 / 8377951686

1802, FF, Electrical Market, Bhagirath Palace, Chandni Chowk, Delhi 110006

AUTHORIZED DISTRIBUTORS OF ADR BOOK

Location	Party Name	Contact No.
Agra	Satish Book Enterprises	9997877123
Ahmedabad	Bharat Medical Book House	9824013920
Akola	Book Emporium	9422861751
Aligarh	Rama Book Store	9319275252
Allahabad	Chetana Medical Books	9307978423
Amritsar	City Book Shop	0183-2571591
Amritsar	Medical Books & Surgicals Centre	0183-2422729
Aurangabad	Arihant Excel Medical Book House	9822259681
Aurangabad	Shri Samarth Book Depot	9822034577
Belgaun	Shri Ganesh Book Stall	8312461258
Berhampur	Book World	9861015189
Bhagalpur	Kora Kagaz	9771511779
Bhopal	Lyall Book Depot	0755-2543624
Bhubaneswar	Annapurna Medical Book Shop	9861243882
Bikaner	Academy Book Centre	9414138998
Burla	Bharat Book Emporium	9337335744
Calicut	Ramdas Sotes & Books	0495-2358398
Chennai	Chennai Medical Book Centre	044-66246369
Chennai	Shah Medical Books	9444829937
Coimbatore	Arasu Medical Book House	9444308567
Coimbatore	Balaji Medical Books	0422-6725292
Coimbatore	Dass Medical Book Shop	9443958620
Cuttack	Scientific Book Depot	9437020414
Delhi	Mirza Book Depot	9958723206
Delhi	Pawan Book Service	9810202316
Delhi	R.S.Book Store	9810546759
Delhi	Sagar Book Depot	9811680722
Delhi	University Book Store	9818357577
Dhulea	Koshal Book Shop	9423916592
Gorakhpur	Medical Book Centre	9450884543
Gwalior	Anand Pustak Sadan	9425114555
Indore	New Jain Book Stall	9926636333
Indore	Scientific Literature Company	9826299744
Jabalpur	Lords Book Sellers	9425155125
Jabalpur	Akash Pustak Sadan	9826563047
Jaipur	Kumar Medical Book Store	9829610430
Jammu	Bhartiya Pustakalaya	9796636000
Jammu	Narend Book Depot	9419114398
Jamnagar	Jay Medical Book Centre	9925236982
Jodhpur	Book World	9829088088
Jorhat	Naveen Pustakalaya	9435514204
Kolhapur	Ajab Pustakalaya	9881424434
Kolkata	Raj Book House	9432550891
Kota	R.K.Stationers	9829087574
Koti Hyderabad	Osmani Medical Book House	040-64644253
Koti Hyderabad	Paras Medical Books Pvt Ltd.	040-24600869
Koti Hyderabad	Sharp Medical Book Centre	040-65544303
Lucknow	Aditya Medical Books Pvt Ltd.	0522-2611724
Lucknow	Arora Book Agencies	0522-4046778
Ludhiana	Verma Book Depot	9872202530
Madurai	Medical Books & International	9344101063
Meerut	City Book Centre	0121-4056292
Meerut	Menakshi Prakashan	0121-2645498
Meerut	R LAL Book Depot	0121-2666235
Mumbai	The National Book Depot	022-24131362
Mumbai	Vikas Medical Book House Pvt Ltd.	022-23010441
Mumbai	Bhalani Medical Book House	022-24171660
Nagpur	New Medical Book Shop	9822225591
Nagpur	Book Source	9850943011
Patna	Current Book Service	9431077745
Pune	J D Granth Bhandar	020-24492832
Raipur	S.K.Medical Book House	9329637397
Raipur	Sristhi Book Stationery Mart	9300855027
Rajkot	Jay Books Medical Book	9925236984
Ranchi	Student Book Depot	0651-2221907
Saharanpur	Hans Pustak Bhandar	9457449388
Sangli	Tanavade & Sons	9823049499
Sri Nagar	Doctors Dotkom	9086454647
Tirupati	Shri Venketswar Book Depot	9885479105
Trivandram	Professional Book House	9495951506
Varanasi	Atithi Medical Books	9307978423
Varanasi	Current Book Agency	9335015235
Visakhapatnam	Andhra Medical Book Centre	9985716032
Visakhapatnam	World Medical Book Centre	9849022192

निर्देश

नई दिल्ली– ड्रग कंट्रोलर्स के लिए बेहद जरूरी खबर है। केंद्र सरकार के निर्देशों में अब हर महीने औषधि निरीक्षक को जांच के लिए कम से कम 10 सैंपल लेने होंगे। इनमें नौ दवाएं और एक सैंपल सौंदर्य प्रसाधन या फिर चिकित्सा उपकरण का होना चाहिए। नकली और घटिया दवाओं पर रोक लगाने के लिए निर्देश जारी किए हैं। निर्देशों में बताया गया है कि शहरों या कस्बों में ही नहीं, बल्कि गांवों और दुर्गम स्थानों और स्कूल-कॉलेजों के आसपास बनी दवा दुकानों पर भी जांच जरूरी है। औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 की धारा 22 एवं 23 के तहत इन निर्देशों में बताया गया है कि औषधि निरीक्षक को एक स्थान से तीन सैंपल लेना अनिवार्य है। औषधि निरीक्षक को जांच रिपोर्ट दिल्ली भी भेजनी होगी। औषधि निरीक्षकों को अपने क्षेत्र की जनता और डॉक्टरों के साथ संपर्क में रहना जरूरी है। नकली या घटिया दवाओं की बिक्री रोकने में इनकी भूमिका खास है। इनसे प्राथमिक सूचनाएं मिल सकती हैं। यह भी ध्यान देना होगा कि किन दवाओं पर सबसे ज्यादा छूट ग्राहकों को दी जा रही है? केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अभी तक नमूना चयन के लिए हमारे पास कोई परिभाषित पद्धति नहीं थी। औषधि निरीक्षक अपने व्यक्तिगत ज्ञान के आधार पर ही नमूनों का चयन करते थे। इनमें अधिकतर नमूने बड़ी कंपनियों के लिए जाते थे। गांव या दुर्गम स्थानों पर औषधि निरीक्षकों का ध्यान नहीं होता था। अगर हम देश के आखिरी छोर तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने की बात कर रहे हैं तो हमें यह भी देखना होगा कि वहां उपलब्ध दवाओं की गुणवत्ता कैसी है? सभी औषधि निरीक्षक अपने नियंत्रण प्राधिकारी के परामर्श से एक सैंपल योजना तैयार करेंगे। इसमें ग्रामीण और दुर्गम स्थान शामिल होना अनिवार्य है। हर महीने और वार्षिक कार्रवाई की रिपोर्ट दिल्ली तक साझा करनी होगी। कुछ बीमारियों के लिए स्थानीय क्षेत्रों में उपयोग की जाने वाली दवाएं, मौसमी बीमारियों के लिए दवाओं को प्राथमिकता देनी होगी।

अवैध अस्पतालों पर छापामारी

रामकोला (कुशीनगर)– स्वास्थ्य विभाग की टीम ने अवैध अस्पतालों पर छापामारी कर इन्हें सील कर दिया है। वहीं, चिकित्सा संबंधी कोई कागजात न मिलने पर इनके संचालकों के खिलाफ पुलिस में केस दर्ज करवा दिया है। विभाग की इन अस्पतालों के बाहर बोर्ड पर लिखे नामी डॉक्टरों का पता लगा रही है। इस कार्रवाई से नगर में चल रहे अन्य अवैध अस्पतालों के शटर डाउन बताए जा रहे हैं। यूट्रेस का ऑपरेशन कराने वाले दोनों मरीजों के तीमारदारों ने स्वास्थ्य विभाग की टीम को बताया कि अस्पतालों पर लगे बोर्ड पर सिर्फ विशेषज्ञ डॉक्टरों का नाम लिखा है। ये कभी अस्पताल में नहीं आते थे। फिलहाल टीम इस बात की जांच में जुटी है कि अवैध अस्पताल संचालकों ने जिन डॉक्टरों का नाम बोर्ड पर लगाया है, उनकी डिग्री सही भी है या गलत है। नोडल अधिकारी डॉ. आरके गुप्ता ने रामकोला नगर में चल रहे अवैध हॉस्पिटल की जांच की। वहां सिद्धनाथ व आयुष्मान अस्पताल का कोई कागजात नहीं मिले। यही नहीं, बोर्ड पर लिखें नामों में से कोई डॉक्टर नहीं मिला। इसके चलते दोनों अस्पतालों को सीज कर इनके प्रबंधकों के खिलाफ रामकोला पुलिस थाने में केस दर्ज करा दिया गया है। रामकोला नगर के धर्मसमधा मंदिर के पास चल रहे आयुष्मान हॉस्पिटल की जांच की तो पता चला कि अस्पताल में कोई डॉक्टर नहीं है। इसे बिना लाइसेंस के चलाया जा रहा था। बोर्ड पर आधा दर्जन डॉक्टरों के नाम दर्ज थे लेकिन यहां कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं था। जांच में मौके पर प्रबंधक पवन कुमार यादव कोई कागजात नहीं दिखा पाए। इसे अवैध मानते हुए नोडल अधिकारी डॉक्टर रमेश कुमार गुप्ता ने रामकोला थाने में शिकायत दर्ज करवाई कि अस्पताल के प्रबंधक पवन कुमार यादव अवैध तरीके से अस्पताल चला रहे थे। इसी तरह कसया रोड पर सिद्धनाथ हॉस्पिटल का संचालन बिना पंजीकरण के पाया गया। एसीएमओ डॉ. आरके गुप्ता के नेतृत्व में स्वास्थ्य टीम ने छापा मारा। इस दौरान संचालक अजय कुमार सिंह मिला। अस्पताल में दो महिलाओं को यूट्रेस का ऑपरेशन करने के बाद भर्ती किया गया था। बाहर बोर्ड पर छह नामी डॉक्टरों के नाम लिखे थे। अस्पताल संच. ालक कोई कागज नहीं दिखा सका और न ही डॉक्टर का पता और मोबाइल नंबर टीम को बताया। इसके अलावा इसी कस्बे में संचालित होने वाले आयुष्मान अस्पताल के बाहर लगे बोर्ड पर चार विशेषज्ञ डॉक्टरों का बोर्ड पर नाम लिखा था, लेकिन कोई डॉक्टर नहीं मिले। इस अस्पताल को सील कर दिया है। एसीएमओ की शिकायत पर दोनों संचालकों के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। सीओ उमेश चंद भट्ट ने बताया कि दो अस्पताल संचालकों पर धोखाधड़ी और मेडिकल एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है।

प्राइवेट हॉस्पिटल पर पड़ा छापा

जसपुर– प्राइवेट हॉस्पिटल पर छापामारी के दौरान कई कमियां पाई गई। इसके चलते अस्पताल को सील किया गया है। यह कार्रवाई एसडीएम ने पुलिस एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ मिलकर की। वहीं, हॉस्पिटल में मिले तीन युवकों काचालान किया गया है, जबकि युवती को घर भेज दिया गया। एसडीएम गौरव चटवाल ने बताया कि फर्जी हॉस्पिटल चलाने की शिकायत मिली थी। इस पर स्वास्थ्य विभाग की टीम को लेकर यूनियन बैंक के पास स्थित एक प्राइवेट हॉस्पिटल पर छापा मारा। इस दौरान कोई भी अभिलेख नहीं दिखाने पर प्राइवेट हॉस्पिटल को सीज कर दिया गया। यहां भवन के बाहर श्री हॉस्पिटल का बोर्ड लगा हुआ था। हॉस्पिटल के अंदर कंबल, दवाई, डॉक्टरों की नेम प्लेट आदि मिलीं। इससे पता चला कि हॉस्पिटल के नाम का दुरुपयोग किया जा रहा था। प्राइवेट हॉस्पिटल का रजिस्ट्रेशन नहीं था। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. हितेश शर्मा ने बताया कि उपस्थित डॉक्टर हॉस्पिटल का रजिस्ट्रेशन अथवा अन्य कोई अभिलेख नहीं दिखा सके। इसके चलते हॉस्पिटल को सीज कर दिया है। कोतवाल आशुतोष कुमार सिंह के अनुसार हॉस्पिटल में मिली युवती को उसके घर भेज दिया है। वहीं, तीनों युवकों का चालान किया गया है।

मिला सम्मान

उत्तर प्रदेश सरकार के उपनिदेशक - राष्ट्रीय बचत, मण्डल आगरा श्रीमान प्रभात मिश्रा द्वारा दि दवा व्यापार मंडल एवं फुटकर दवा व्यापार मंडल, कानपुर के संयुक्त चेयरमैन संजय मेहरोत्रा जी के द्वारा गत 5 वर्षों से की जा रही निरंतर ऑक्सीजन सिलेंडर, सी-पैप एवं बाई-पैप की नि:शुल्क सेवा का संज्ञान लेते हुए उनका प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया है। ज्ञात हो कि प्रभात मिश्र स्वयं RED TAPE MOVEMENT के प्रवर्तक हैं जो जंगल और पेड़ो को काटने से रोकने के लिए बड़े स्तर पर मुहिम है। साथ ही वे अन्य समाज सेवी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जब प्रभात मिश्र को संजय मेहरोत्रा जी द्वारा की जा रही अनुपम अद्वितीय सेवा के विषय के पता चला तो उन्होंने इस कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया है। साथ ही वे अन्य समाज सेवी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जब प्रभात मिश्र को संजय मेहरोत्रा जी द्वारा की जा रही अनुपम अद्वितीय सेवा के विषय के पता चला तो उन्होंने इस कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया है। साथ ही इस पुनीत कार्य के बारे में twitter के माध्यम से आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी जी को भी टैग करके सूचित करने का प्रयास किया है। सर्व विदित है संजय मेहरोत्रा द्वारा किये जा रहे इस जीवनदायी कार्य के कारण उन्हे ऑक्सिजन मैन के नाम से जाना जाता है। सेवा भाव को फिर मिला सम्मान बड़े ही हर्ष का विषय है कि उत्तर प्रदेश सरकार के उपनिदेशक - राष्ट्रीय बचत, मण्डल आगर प्रभात मिश्रा द्वारा दि दवा व्यापार मंडल एवं फुटकर दवा व्यापार मंडल, कानपुर के संयुक्त चेयरमैन संजय मेहरोत्रा जी के द्वारा गत 5 वर्षों से की जा रही निरंतर ऑक्सीजन सिलेंडर, सी-पैप एवं बाई-पैप की नि:शुल्क सेवा का संज्ञान लेते हुए उनका प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया है। ज्ञात हो कि प्रभात मिश्र स्वयं RED TAPE MOVEMENT के प्रवर्तक हैं जो जंगल और पेड़ो को काटने से रोकने के लिए बड़े स्तर पर मुहिम है। साथ ही वे अन्य समाज सेवी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जब प्रभात मिश्र को संजय मेहरोत्रा जी द्वारा की जा रही अनुपम अद्वितीय सेवा के विषय के पता चला तो उन्होंने इस कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया है। साथ ही इस पुनीत कार्य के बारे में जूपज. जमत के माध्यम से आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी जी को भी टैग करके सूचित करने का प्रयास किया है। सर्व विदित है श्री संजय मेहरोत्रा द्वारा किये जा रहे इस जीवनदायी कार्य के कारण उन्हे **ऑक्सिजन मैन** के नाम से जाना जाता है।

www.medicaldarpan.com

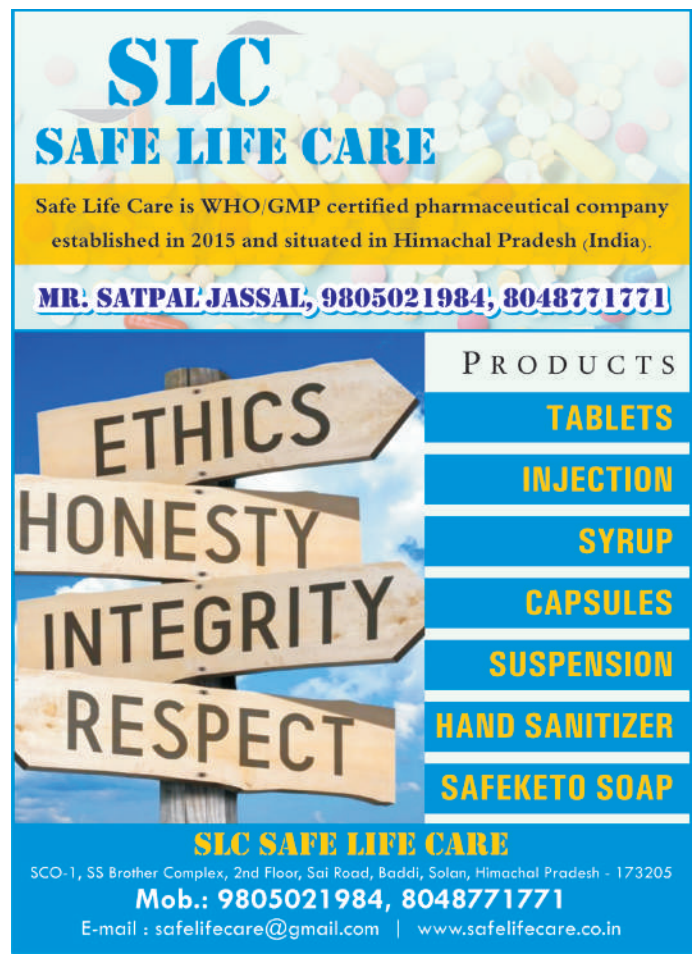

नकली दवाइयां बनाने का भंडाफोड़, दवाइयां जब्त

कोलकाता (पश्चिम बंगाल)– मकान में नकली नशीली दवाइयां बनाने का भंडाफोड़ हुआ है। मौके से एक करोड़ की नकली दवा बनाने की सामग्री जब्त की गई है। यह कार्रवाई पश्चिम बंगाल पुलिस के स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) की टीम ने की। एसटीएफ अधिकारियों ने बताया कि नकली नशीली दवाइयों के अलावा ब्रांडेड कंपनियों की नकली दवाइयां बनाने वाले एक ठिकाने का पता चला। हुगली जिले के मगरा थानाक्षेत्र में स्थित खाली पड़े एक मकान के अंदर चोरी-छिपे चल रही ब्रांडेड कंपनियों की नकली दवाइयां बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ी गई है। यहां से एक करोड़ रुपये से ज्यादा की नकली दवाइयां बनाने की सामग्री जब्त की गयी है। टीम ने मौके से दवाइयां बनाने की मशीनों और दवा बनाने के वाले केमिकल को भी जब्त कर लिया है। एसटीएफ ने इस बारे में जिले के ड्रग कंट्रोलर अधिकारी को भी सूचना दे दी है। संबंधित मकान को सील कर दिया गया है। अधिकारियों ने बताया किगुप्त जानकारी के आधार पर कांचरापाड़ा-गाईघाटा रोड पर 40 लाख रुपये मूल्य की नशीली दवा से भरा ट्रक कब्जे में लिया था। आरोपी ट्रक के चालक कोलकाता के मेंगोलेन निवासी उपेंद्र कुमार महतो को गिरफ्तार कर लिया था। उपेंद्र से पूछताछ में पता चला कि यह दवाइयां बनगांव इलाके में ले जा रहा था। इसके बाद इसे बांग्लादेश भेजा जाना था। उसने बताया कि कि हुगली जिले के मगरा थानाक्षेत्र में स्थित एक मकान है। उसका मेन गेट बाहर से बंद रहता है। मकान के भीतर फैक्ट्री चल रही है। इसमें चोरी-छिपे नशीली दवाओं के अलावा अन्य ब्रांडेड कंपनियों की नकली दवाइयां भी बनाई जाती हैं। वहीं से उसने इन 40 लाख की दवाओं को ट्रक में भरा था। पुलिस के अनुसार आरा. पी उपेंद्र से मिली जानकारी के बाद हुगली जिले के मगरा इलाके में उक्त बंद मकान पर छापामारी की गई। वहां नशीली नकली दवा बनाने के लिए मशीन, प्लास्टिक का डब्बा, ब्रांडेड कंपनियों के लेबल और काफी तरह का पाउडर और केमिकल जब्त किया गया। पुलिस ने गोदाम में मौजूद करीब एक करोड़ रुपये मूल्य की नकली दवाइयां बनाने वाली केमिकल एवं पाउडर के अलावा वहां मौजूद अन्य सामग्री को जब्त कर लिया है।. इसके बाद पूरे गोदाम व मकान को सील कर दिया गया है।

टीबी हॉस्पिटल के 45 कर्मचारियों को किया सस्पेंड

गोरखपुर– टीबी हॉस्पिटल के आउटसोर्सिंग पर लगे सभी 45 कर्मचारियों को एक साथ बर्खास्त कर देने का समाचार प्रकाश में आया है। बताया गया है कि यह कार्रवाई इन कर्मचारियों को बायोमेट्रिक हाजिरी के नाम पर वेतन कटौती का विरोध करने के फलस्वरूप की गई है।गोरखपुर एयरपोर्ट के पास बने टीबी अस्पताल में सेवा प्रदाता फर्म के तहत 45 आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की भर्ती की गई थी। बायोमेट्रिक हाजिरी न लगाने पर फर्म द्वारा इन कर्मचारियों का वेतन काट लिया गया। कर्मचारियों ने वेतन कटौती का विरोध किया। इसके चलते सेवा प्रदाता फर्म ने एक साथ सभी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया है। फर्म ने कर्मचारियों को हटाने के साथ ही स्वास्थ्य विभाग के साथ अपना अनुबंध भी एकतरफा खत्म कर दिया है। हालांकि, अस्पताल के सीएमएस ने आश्वासन दिया है कि किसी कर्मचारी को बाहर नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा है कि फर्म का यह फैसला स्वीकार्य नहीं है। सेवा प्रदाता फर्म ने ईमेल कर कर्मचारियों को बर्खास्तगी की सूचना दी। फर्म के इस कदम से कर्मचारियों में हडकंप मचा हुआ है। बता दें कि एयरपोर्ट स्थित 100 बेड के टीबी सह सामान्य अस्पताल में आउटसोर्सिंग पर 45 कर्मचारी तैनात हैं। इनमें से ज्यादातर नर्स और वार्ड ब्वॉय हैं। ये कर्मचारी फरवरी वर्ष 2016 से आउटसोर्सिंग पर तैनात किए गए। जुलाई 2021 से उनकी सेवा प्रदाता फर्म बदलकर दिल्ली की चींटी इंटरप्राइजेज कर दी गई थी। नई फर्म ने छह महीने पहले से बायोमेट्रिक हाजिरी लगावानी शुरू कर दी थी। इसके लिए अस्पताल के अंदर एक बायोमेट्रिक मशीन लगी है। इसमें सिर्फ आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की ही बायोमेट्रिक हाजिरी ली जा रही हैं। बायोमेट्रिक हाजिरी के शुरू होने से अब तक कर्मचारियों का मानदेय नहीं मिल पाया था। आठ फरवरी को खाते में चार महीने का मानदेय आया। उसमें भी बायोमेट्रिक हाजिरी के नाम पर कटौती हो गई। कर्मचारियों को चार हजार से लेकर 30 हजार रुपये तक कम मानदेय मिला है। फर्म ने इस कटौती की वजह बायोमेट्रिक हाजिरी का रिकॉर्ड माना है। उधर, टीबी अस्पताल के सीएमएस डॉ.एके वर्मा इन कर्मचारियों के पक्ष में हैं। उनका कहना है कि अस्पताल में चिकित्सकों के बाद यही कर्मचारी हैं। इन्हीं के भरोसे अस्पताल में मरीज भर्ती हैं। वे फर्म के फैसले को स्वीकार नहीं करते। उन्होंने भरोसा दिलाया है कि किसी भी कर्मचारी को बाहर नहीं होने दिया जाएगा।

मधुमेह रोगियों के लिए खोजा कारगर उपाय

नई दिल्ली– मधुमेह से पीडित रोगियों में अब किडनी-आंखों की समस्याओं का खतरा कम हो सकेगा। इसके लिए वैज्ञानिकों ने कारगर उपाय खोज लिया है। इससे रोगियों को काफी राहत मिल सकेगी। बता दें कि डायबिटीज वैश्विक स्तर पर बढ़ती गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। आंकड़े बताते है कि 20-79 वर्ष के 53.7 करोड़ से अधिक वयस्कों को मधुमेह (डायबिटीज) की समस्या हो सकती है। यानी आज लगभग हर 10 में से एक व्यक्ति मधुमेह के साथ जी रहा है। ऐसे ही चलता रहा तो यह संख्या 2030 तक 64.3 करोड़ और 2045 तक 78.3 करोड़ तक बढ़ सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार डायबिटीज गंभीर क्रोनिक समस्या है। वहीं, इसके कारण शरीर के कई अन्य अंगों पर भी नकारात्मक असर होने का खतरा हो सकता है। अगर ब्लड शुगर लेवल अक्सर बढ़ा रहता है तो इसके कारण शरीर में कई और भी प्रकार की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। डायबिटीज की स्थिति के कारण आंखों, किडनी, लिवर, हार्ट पर नकारात्मक असर हो सकता है। इन जोखिमों से बचाव के लिए विशेषज्ञों ने एक खास दवा की खोज की है। यह दवा डायबिटीज की जटिलताओं को कम करने में मददगार हो सकती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि ये दवा मधुमेह रोगियों के लिए अत्यंत लाभकारी हो सकती है। शोधकर्ताओं ने एक नई अवरोधक दवा की पहचान की है। इससे मधुमेह की दो जटिलताओं- आंखों और किडनी को होने वाली क्षति को रोकने में मदद मिल सकती है। अब तक चूहों पर किए गए शोध में इस दवा के विशेष लाभ देखे गए हैं, इंसानों पर अध्ययन शुरुआती चरणों में हैं। अध्ययनकर्ता बताते हैं कि डायबिटीज रोगियों में होने वाली किडनी और आंखों की समस्याओं में पाया गया है कि इन विकारों में ग्लोमेरुलस (रक्त को फिल्टर करने वाली छोटी वाहिकाओं का नेटवर्क) में होने वाली समस्याओं को हेपरानेज अवरोधक ड्रग के माध्यम से कम किया जा सकता है। ये न सिर्फ ब्लड शुगर बढने के कारण आंखों को होने वाली क्षति से बचा सकती है, साथ ही किडनी की समस्याओं को कम करने में भी इससे लाभ मिलने के संकेत हैं।

त्रिपुरा में स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू की

अगरतला: त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने एक सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू की, जिसके तहत पूर्वोत्तर राज्य के 4.15 लाख परिवारों को 5 लाख रुपये का बीमा कवरेज मिलेगा। मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना (CM&JAY) के तहत सरकारी कर्मचारियों सहित 4.15 लाख परिवार जो PM&JAY के अंतर्गत नहीं आते हैं, उन्हें 5 लाख रुपये के स्वास्थ्य बीमा कवरेज का लाभ मिलेगा। जब चिकित्सा आपात स्थिति उत्पन्न होती है तो लोग असहाय हो जाते हैं। कई लोग जो पीएम-जेएवाई के अंतर्गत नहीं आते हैं, वे अत्यधिक चिकित्सा व्यय को पूरा करने के लिए वित्तीय सहायता की गुहार लेकर मेरे पास आते हैं। इन सभी लोगों की मदद करना मेरे लिए एक बाधा बन गया है। इसने मुझे प्रेरित किया है उन लोगों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था के बारे में सोचें जिन्हें इलाज के लिए मदद की जरूरत है, साहा ने सीएम-जेएवाई लॉन्च करते हुए कहा। यह वास्तव में राज्य के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है कि हम उन लोगों की मदद के लिए सीएम-जेएवाई शुरू कर रहे हैं, जिन्हें सरकार से सहायता की आवश्यकता है। योजना के तहत, प्रत्येक नामांकित परिवार को 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा मिलेगा। सालाना, उन्होंने कहा। साहा ने कहा कि योजना इस तरह से डिजाइन की गई है कि मरीज के परिवार को सरकारी या निजी अस्पतालों से छुट्टी के बाद भी 15 दिनों तक मुफ्त दवा मिलेगी और पूरी प्रक्रिया कैशलेस होगी। शुरुआत में सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना को लागू करने में समस्याएं हो सकती हैं जैसा कि पीएम-जेएवाई के साथ हुआ था, लेकिन इन मुद्दों को संबोधित किया जाएगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लाभ लक्षित लोगों तक पहुंचे। हमने पिछले साल के बजट भाषण में लोगों को चिकित्सा बीमा की पेशकश करने का वादा किया था। और सरकार ने इसे पूरा किया, उन्होंने कहा। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी बसंत गर्ग ने दावा किया कि त्रिपुरा पहला पूर्वोत्तर राज्य है जिसने सभी के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा कवरेज शुरू किया है। मुख्य सचिव जेके सिन्हा ने सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा शुरू करने के सरकार के फैसले को लोगों के कल्याण के लिए एक ऐतिहासिक और साहसी कदम बताया। पीएम-जेएवाई के तहत, राज्य के लगभग 5.12 लाख परिवार कवर होते हैं, लेकिन राज्य के लगभग 4.15 लाख परिवारों के लिए कोई स्वास्थ्य बीमा प्रावधान नहीं है। यह योजना-सीएम-जेएवाई सुनिश्चित करेगी कि राज्य के सभी परिवारों को स्वास्थ्य बीमा लाभ मिले। राज्य के सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए यह एक ऐतिहासिक और साहसिक निर्णय है", उन्होंने कहा। सार्वभौमिक स्वास्थ्य बीमा योजना के कार्यान्वयन के लिए बजट में 69 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

क्रोनिक किडनी रोग के इलाज के लिए अब भारत में जार्डियन्स को मंजूरी मिल गई है

मुंबई: भारत के राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण , केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने ईजीएफआर में निरंतर गिरावट के जोखिम को कम करने के लिए जार्डियंस (एम्पाग्लिफ्लोजिन) 10 मिलीग्राम टैबलेट को मंजूरी दे दी है (केवल ईजीएफआर 30-90 मिलीलीटर / मिनट / 1.73 वाले रोगियों के लिए) एम2), अंतिम चरण की किडनी की बीमारी, हृदय संबंधी मृत्यु, और क्रोनिक किडनी रोग (सीकेडी) वाले वयस्कों में अस्पताल में भर्ती होने का खतरा बढ़ जाता है। यह संकेत अनुमोदन नेफ्रोलॉजिस्ट और हृदय रोग विशेषज्ञों को पात्र रोगियों में सीकेडी के इलाज के लिए जार्डियंस 10एमजी टैबलेट का उपयोग करने की अनुमति देता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पॉलीसिस्टिक किडनी रोग वाले मरीजों में सीकेडी के इलाज के लिए जार्डियंस की सिफारिश नहीं की जाती है, या ऐसे मरीज जिन्हें अंत:शिरा इम्यूनोस्प्रेसिव थेरेपी की आवश्यकता होती है या हाल ही में इतिहास है या गुर्दे की बीमारी के लिए 45 मिलीग्राम से अधिक प्रेडनिसोन या समकक्ष है। बोहरिंगर इंगेलहेम इंडिया के प्रबंध निदेशक गगनदीप सिंह बेदी ने कहा, ष्क्रोनिक किडनी रोग एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य मुद्दा है, और ऐसे उपचारों की एक महत्वपूर्ण अपूर्ण आवश्यकता है जो रोग की प्रगति को धीमा करते हैं और परिणामों में सुधार करते हैं। ष ष्हम किडनी रोग से पीड़ित लोगों और उनके चिकित्सकों की मदद करने में एम्पाग्लिफ्लोजिन की आवश्यक भूमिका निभाने की मंजूरी और क्षमता को लेकर बहुत उत्साहित हैंष बोहरिंगर इंगेलहेम इंडिया की चिकित्सा निदेशक डॉ. श्रद्धा भुरे ने कहा, ष्सीकेडी एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या है। भारत में, मधुमेह, उच्च रक्तचाप या हृदय रोग जैसे सामान्य जोखिम कारकों से उत्पन्न होने वाले कुछ नाम हैं। सीकेडी प्रगति वाले मरीजों को अस्पताल में प्रवेश, हृदय संबंधी घटनाओं, गुर्दे की विफलता और मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है। स्वास्थ्य पर प्रभाव के अलावा, सीकेडी के रोगियों के एक बड़े हिस्से को भी विनाशकारी स्वास्थ्य व्यय का सामना करना पड़ता है। सीकेडी का इष्टतम प्रबंधन न केवल रोगियों और उनके परिवारों के लिए, बल्कि बड़े पैमाने पर समाज और देश की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के लिए स्वास्थ्य और आर्थिक परिणामों में पर्याप्त सुधार ला सकता है।"

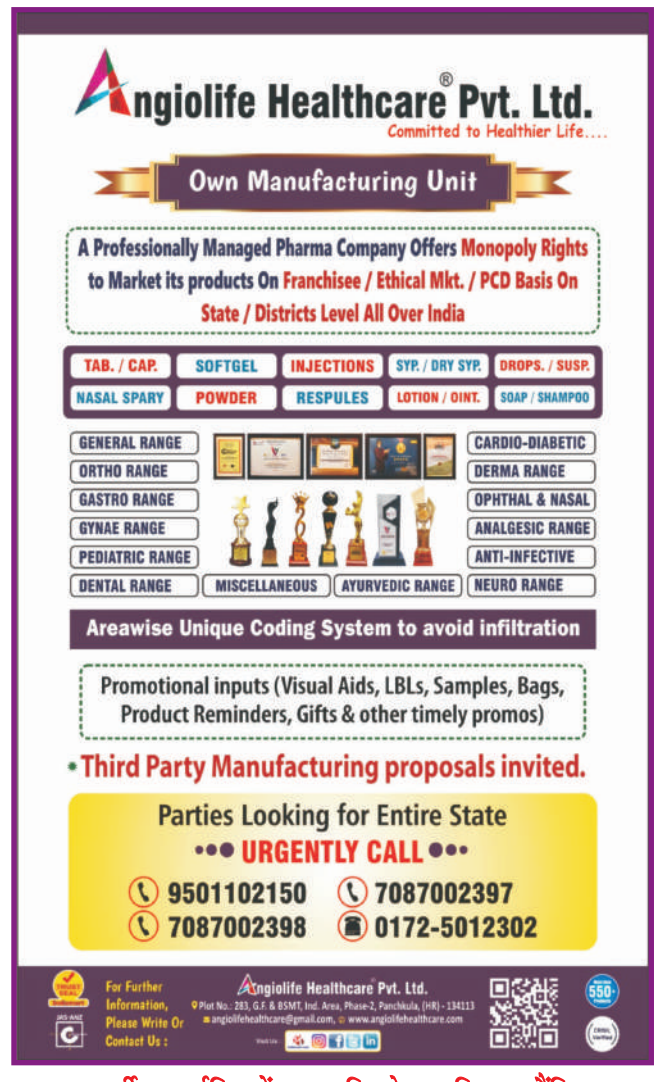

एएलएस दवा मध्य-चरण परीक्षण लक्ष्य को पूरा करने में विफल रही

नई दिल्ली: ड्रग डेवलपर डेनाली थेरेप्यूटिक्स ने कहा कि घातक न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारी के लिए उसकी और साझेदार सनोफी की प्रायोगिक दवा एक मध्य-चरण के अध्ययन में मोटर फंक्शन की गिरावट को धीमा करने में विफल रही। सुबह के कारोबार में डेनाली के शेयर लगभग 8 प्रतिशत नीचे थे। यह एमियोट्रोफिक लेटरल स्क्लेरोसिस (एएलएस) के खिलाफ प्रभावी उपचार विकसित करने की राह में बाधाओं की लंबी सूची में नवीनतम झटका है, एक ऐसी स्थिति जो संयुक्त राज्य अमेरिका में 16,000 से 32,000 लोगों को प्रभावित करती है, और दिवंगत ब्रिटिश भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग को लगभग पूरी तरह से पंगु बना देती है। यूएस एफडीए ने अब तक एएलएस के इलाज के लिए तीन दवाओं - जापानी फर्म मित्सुबिशी तानबे की रेडिकावा, जेनेरिक दवा रिलुजोल और एमिलीक्स फार्मास्यूटिकल्स की रिलिविरियो - को पारंपरिक मंजूरी दे दी है। बायोजेन के कल्सोडी को पिछले साल अप्रैल में एजेंसी की त्वरित मंजूरी मिली थी। डेनाली ने कहा कि उनकी दवा एएलएस कार्यात्मक रेटिंग पैमाने में बदलाव के मुख्य लक्ष्य को पूरा नहीं करती है, जो एएलएस के कारण होने वाले सामान्य मोटर कामकाज से विचलन को मापता है। उनकी एएलएस दवा एक प्रोटीन की बढ़ी हुई गतिविधि को रोककर काम करती है जिसके बारे में माना जाता है कि यह न्यूरोडीजेनेरेशन में योगदान देता है। एएलएस एक दुर्लभ न्यूरोलॉजिकल बीमारी है जो मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में मांसपेशियों की गतिविधियों के लिए जिम्मेदार तंत्रिका कोशिकाओं को तोड़ सकती है, जिससे प्रगतिशील पक्षाघात और मृत्यु हो सकती है। हालाँकि, सैनोफी केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की बीमारी मल्टीपल स्केलेरोसिस वाले प्रतिभागियों में दवा का मूल्यांकन करने के लिए मध्य-चरण का परीक्षण करना जारी रखेगा। सनोफी और डेनाली ने 2018 में एक साझेदारी में प्रवेश किया था, जहां सनोफी न्यूरोलॉजिकल और सूजन संबंधी बीमारियों के लिए डेनाली द्वारा विकसित उपचारों का परीक्षण करने के लिए परीक्षण करने पर सहमत हुई थी।

www.medicaldarpan.com

पीएम मोदी 7 दिनों में छह ऑपरेशनल एम्स राष्ट्र को समर्पित करेंगे

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रेवाड़ी एम्स की आधारशिला रखेंगे . केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार, 1 फरवरी, 2019 को केंद्रीय बजट में हरियाणा के लिए एक नए एम्स की घोषणा की गई थी। प्रस्तावित एम्स स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा के साथ-साथ नर्सिंग और पैरामेडिकल प्रशिक्षण भी प्रदान करेगा। स्वास्थ्य देखभाल गतिविधियों की सभी शाखाओं में कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए एक ही स्थान पर उच्च स्तर की शैक्षणिक सुविधाएं।ष प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) के तहत फरवरी 2019 में कैबिनेट द्वारा हरियाणा के रेवाड़ी जिले के गांव मनेठी में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना को मंजूरी दी गई थी। एम्स, रेवारी, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार करेगा, सुपर-स्पेशियलिटी विषयों में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा प्रदान करेगा, और कम सेवा वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल समावेशन को बढ़ावा देगा। एम्स रेवाडी की परियोजना लागत रु. 1646 करोड़, और यह दिल्ली से 96 किमी दूर है। हरियाणा और आसपास के राज्यों राजस्थान, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के नागरिकों को एम्स रेवारी, हरियाणा में आने वाली सस्ती तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं से बहुत लाभ होगा। एम्स रेवारी की आधारशिला कल पीएम मोदी द्वारा हरियाणा के रेवाडी में रखी जाएगी। पीएम मोदी इस महीने की 20 तारीख को एम्स जम्मू को राष्ट्र को समर्पित करेंगे और इस महीने की 25 तारीख को पीएम मोदी एम्स को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। 25 तारीख को राजकोट, एम्स भटिंडा, एम्स कल्याणी, एम्स मंगलगिरि और एम्स रायबरेली, केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने कहा। केंद्र द्वारा की गई कुल लागत पर उन्होंने कहा, इन 7 एम्स पर केंद्र द्वारा की गई कुल लागत 10,000 करोड़ रुपये से अधिक है। उन्होंने आगे कहा, 2014 से पहले, 7 दशकों में देश में 7 एम्स थे, इस सप्ताह केवल 7 दिनों में 7 एम्स बनेंगे। हाल ही में 9 फरवरी को लोकसभा में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि पिछले छह महीनों में विभिन्न अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों (एम्स) में 29,000 पदों पर भर्ती हुई है और अभी भी नियुक्तियां जारी हैं।

फर्जी फार्मासिस्टों का रजिस्ट्रेशन किया कैंसिल

चंडीगढ़- पंजाब काउंसिल ने 100 फर्जी फार्मासिस्टों का रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिया है। आरोप है कि इन फार्मासिस्टों ने डिप्लोमा पाने के लिए फर्जी शैक्षणिक दस्तावेज जमा करवाए थे। इनकी जांच के बाद पंजाब राज्य फार्मेसी काउंसिल ने रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर डाले। यही नहीं, फर्जी फार्मासिस्टों का ब्यौरा संबंधित जिले की पुलिस को सौंपकर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने डी-फार्मेसी घोटाले का भंडाफोड़ किया था। इसके बाद पंजाब राज्य फार्मेसी काउंसिल ने फार्मेसी डिप्लोमा से संबंधित शैक्षणिक दस्तावेजों की जांच शुरू कर दी है। अब तक की जांच के दौरान सैकड़ों फार्मासिस्टों के दस्तावेजों में अनियमितताएं पाई गई हैं।पंजाब राज्य फार्मेसी काउंसिल के रजिस्ट्रार डॉ. जसबीर सिंह के अनुसार डी फार्मेसी घोटाला सामने आने के बाद राज्य फार्मेसी काउंसिल रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया पर सख्त नजर है। अनियमितताएं रोकने के लिए परिषद ने इस प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया है। काउंसिल ने शैक्षिक दस्तावेज जांच में फर्जी मिलने वाले फार्मासिस्टों का रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिया है। शेष फार्मासिस्टों के शैक्षिक प्रमाणपत्रों का जांच पड़ताल की जा रही है। बताया गया है कि पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने भी राज्य के फार्मेसी कॉलेजों के प्रशासकों और कर्मचारियों से पूछताछ शुरू कर दी है। पंजाब में डी फार्मेसी उपलब्ध कराने वाले 100 से अधिक निजी संस्थान हैं, जबकि 6 सरकारी संस्थान हैं। फर्जी दस्तावेजों से कॉलेज स्टाफ का कनेक्शन और कॉलेज व गिरोह के सदस्यों के काम करने के तरीके सभी की गहनता से जांच की जा रही है। हाल ही में विजिलेंस ब्यूरो ने आदेश इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस एंड रिसर्च, बठिंडा के अधिकारियों को फर्जी डी. फार्मेसी डिप्लोमा जारी करने के मामले में गिरफ्तार किया था। फर्जी प्रमाणपत्र जमा करने वालों ने बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा से 10वीं और 12वीं कक्षा के फर्जी दस्तावेज पेश किए हैं।

4 वर्ष तक घर बैठे यह समाचार पत्र पढ़ने के लिये हमारे पंजाब नैशनल बैंक के खाता संख्या 1824002100120081, IFSC Code - PUNB0145020 जो कि मैडीकल दर्पण के नाम से है, में रू० 500/- जमा कर अपना पूरा पता हमारे फोन नं०- 09045029158 पर SMS कर दें।

सौंदर्य प्रसाधन के सैंपल फेल

दिनांक 22 फरवरी 2024 को शिकायत की सूचना के आधार पर हापुड़ औषधि निरीक्षक उर्मिला अग्रवाल के नेतृत्व में टीम ने दिल्ली रोड़ स्थित ZUDIO (जुडियो) के शोरूम में ड्रग एंड कॉस्मेटिक रूल 2020 के अंर्तगत 2 लिपिस्टिक सहित एक नेलपेंट कुल तीन सैंपल लेकर जांच हेतु प्रयोगशाला भेजे कार्यवाही के दौरान मंडल औषधि निरीक्षक गौरव लोधी भी मौजूद रहे। उर्मिला अग्रवाल ने बताया जांच रिपोर्ट सही ना आने पर आगे की कार्यवाही की जाएगी उन्होंने कहा कि समय समय पर दवाओं के साथ सौंदर्य प्रसाधन सामानों (कॉस्मेटिक आईटम) की सैंपलिंग आगे भी जारी रहेगी किसी भी हाल में जनपद में नकली एवं अधोमानक दवाओं व कॉस्मेटिक समान की बिक्री नहीं होने दी जाएगी। - **विकास गर्ग, मो० 9837577233, हापुड़.**

यादें बनाने में फैटी एसिड अहम भूमिका निभाते हैं: अध्ययन

वाशिंगटन: क्वींसलैंड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने दिखाया है कि संतृप्त फैटी एसिड मस्तिष्क की स्मृति बनाए रखने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। क्वींसलैंड विश्व. विद्यालय में क्वींसलैंड ब्रेन इंस्टीट्यूट के डॉ. आइजैक अकेफे ने शोध किया है जो न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों के लिए एक उपन्यास चिकित्सा का सुझाव देता है। उन्होंने स्मृति निर्माण में शामिल जीन भी खोजे हैं। डॉ. एकेफे ने कहा, हमने पहले दिखाया है कि न्यूरोनल संचार के दौरान मस्तिष्क में संतृप्त फैटी एसिड का स्तर बढ़ जाता है, लेकिन हमें नहीं पता था कि इन परिवर्तनों का कारण क्या था। अब पहली बार, हमने मस्तिष्क के फैटी एसिड परिदृश्य में परिवर्तनों की पहचान की है जब न्यूरॉन्स एक स्मृति को एन्कोड करते हैं। फॉस्फोलिपेज ए1 (पीएलए1) नामक एक एंजाइम संतृप्त फैटी एसिड बनाने के लिए एसटीएक्सबीपी1 नामक सिनेप्स पर एक अन्य प्रोटीन के साथ संपर्क करता है। मस्तिष्क शरीर का सबसे वसायुक्त अंग है, जिसके वजन का 60 प्रतिशत हिस्सा लिपिड नामक वसायुक्त यौगिकों का होता है। फैटी एसिड फॉस्फोलिपिड्स नामक लिपिड के एक वर्ग के निर्माण खंड हैं। प्रोफेसर फ्रेडरिक म्युनियर की प्रयोगशाला में किए गए काम से पता चला है कि STXBP1 PLA1 एंजाइम के लक्ष्यीकरण को नियंत्रित करता है, फैटी एसिड की रिहाई का समन्वय करता है और मस्तिष्क में सिनैप्स पर संचार को निर्देशित करता है। प्रोफेसर म्युनियर ने कहा, पीएलए 1 और एसटीएक्सबीपी 1 जीन में मानव उत्परिवर्तन मुक्त फैटी एसिड के स्तर को कम करते हैं और तंत्रिका संबंधी विकारों को बढ़ावा देते हैं। स्मृति निर्माण में मुक्त फैटी एसिड के महत्व को निर्धारित करने के लिए, हमने माउस मॉडल का उपयोग किया जहां PLA1 जीन को हटा दिया गया था। हमने उनके पूरे जीवन में न्यूरोलॉजिकल और संज्ञानात्मक गिरावट की शुरुआत और प्रगति को ट्रैक किया। हमने देखा कि उनकी यादें क्षीण होने से पहले ही, उनकी संतृप्त मुक्त फैटी एसिड का स्तर नियंत्रण चूहों की तुलना में काफी कम था। यह इंगित करता है कि यह PLA1 एंजाइम, और इसके द्वारा जारी फैटी एसिड, स्मृति अधिग्रहण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यादें कैसे बनती हैं, इसे समझने के लिए शोध के महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। प्रोफेसर मेयुनियर ने कहा, हमारे निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि इस स्मृति अधिग्रहण मार्ग में हेरफेर करने से अल्जाइमर जैसी न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारियों के इलाज के रूप में रोमांचक क्षमता है। शोध दल ऑस्ट्रेलियन इंस्टीट्यूट फॉर बायोइंजीनियरिंग एंड नैनोटेक्नोलॉजी के पीएचडी उम्मीदवारों सबर अब्द एल्कादर और क्वींसलैंड ब्रेन इंस्टीट्यूट के बेंजामिन मैथ्यूज के योगदान को स्वीकार करता है। यह न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय, स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय, बोर्डो विश्वविद्यालय, स्क्रिप्प रिसर्च इंस्टीट्यूट और बायलर कॉलेज ऑफ मेडिसिन के साथ एक सहयोगात्मक अध्ययन है।

रणनीतिक समीक्षा के बाद औरिनिया इम्यूनोथेरेपी के विकास को रोक देगा

बेंगलुरु: कंपनी ने कहा कि औपचारिक खरीद प्रस्ताव को आकर्षित करने में विफल रहने के बाद ऑरिनिया फार्मास्यूटिकल्स अपनी किडनी रोग की दवा लुप्किनिस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी इम्यूनोथेरेपी पर अनुसंधान और विकास बंद कर देगी। कनाडा स्थित दवा निर्माता ने कहा कि जून के अंत में शुरू की गई रणनीतिक समीक्षा के बाद वह औपचारिक प्रस्ताव को आकर्षित करने में विफल रही थी, जैसा कि पहले दिन में रॉयटर्स की एक रिपोर्ट से पुष्टि होती है। ऑरिनिया को 2024 की पहली तिमाही के अंत तक कर्मचारियों की संख्या कम से कम 25% कम करने का अनुमान है। कंपनी ने +150 मिलियन तक का शेयर पुनर्खरीद कार्यक्रम भी शुरू किया है।

फार्मा कंपनी के लाइसेंस कैंसिल 17 लैब को नोटिस जारी

नई दिल्ली- सालभर में 64 फार्मा कंपनी के लाइसेंस कैंसिल किए गए हैं, जबकि 17 दवा परीक्षण प्रयोगशालाओं को अच्छी विनिर्माण प्रथाओ का अनुपालन न करने पर बंद करने के नोटिस दिए गए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार बीते एक साल के दौरान 423 दवा कंपनियों की जांच की गई। इनमें सूचीबद्ध संस्थाएं और दवा परीक्षण प्रयोगशालाएं शामिल हैं। यहां विभिन्न विनिर्माण सुविधाओं में जांच पांच चरणों में की गई। जांच के बाद खामियां पाए जाने पर 101 फार्मा कंपनियों का परिचालन बंद कर दिया गया और लाइसेंस निलंबित करने के 52 मामले सामने आए। अन्य 281 कंपनियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। जांच में शामिल 131 दवा परीक्षण प्रयोगशालाओं के खिलाफ कार्रवाई की गई। उनमें से 52 के खिलाफ परीक्षण गतिविधियों को निलंबित करने का आदेश दिया गया था। अधिकारी ने बताया कि रद्द किए गए किसी भी लाइसेंस को अब तक नवीनीकृत या दोबारा जारी नहीं किया गया है। कुछ मामलों में, नोटिस जारी होने के बाद सुधारात्मक कार्रवाई की गई और पूरी प्रक्रिया की समीक्षा की गई, जबकि अच्छी विनिर्माण प्रथाओं का पालन करने में बार-बार विफलता के बाद निल. बंन और रद्दीकरण हुआ। गौरतलब है कि देश में लगभग 10,500 विनिर्माण इकाइयाँ हैं। इनमें से 8,500 एमएसएमई श्रेणी में आती हैं। लगभग 2,000 एमएसएमई, मुख्य रूप से निर्यातकों के पास डब्ल्यूएचओ जीएमपी (अच्छा विनिर्माण अभ्यास) प्रमाणन है। भारत में सभी फार्मा कंपनियों के लिए जीएमपी का पालन करना अब अनिवार्य है।

"यदि किसी का स्वभाव अच्छा है तो उसे किसी और गुण की क्या जरूरत है? यदि आदमी के पास प्रसिद्धि है तो भला उसे और किसी श्रृंगार की क्या आवश्यकता है?" -चाणक्य

लाइसेंस रद्द

कठुआ (जम्मू और कश्मीर)- 50 मेडिकल स्टोर के लाइसेंस कैंसल किए गए हैं। यह कार्रवाई निर्देशों की अनदेखी करने पर की गई। इनके अलावा, 50 मेडिकल स्टोरों संचालकों को सीसीटीवी न लगाने पर नोटिस सौंपे हैं। यह जानकारी सहायक औषधि नियंत्रक (असिस्टेंट ड्रग कंट्रोलर) राजेश कुमार ने जिला उपायुक्त को नार्को समन्वय बैठक में दी। बता दें कि उपायुक्त राकेश मिन्हास ने जिले में नशा तस्करी को रोकने के उद्देश्य से उपायों पर चर्चा और समीक्षा करने के लिए नार्को समन्वय केंद्र (एनसीओआरडी) के तहत जिला स्तरीय समिति की बैठक की। बैठक में नशीली दवाओं की लत, नशा तस्करी के केंद्रों की पहचान और चिट्टा हॉटस्पॉट से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। सहायक औषधि नियंत्रक ने बताया कि कुल 692 कैमरों में से 638 कैमरे चालू हैं। ये कैमरे काउंटर पर साइकोट्रॉपिक दवाओं की बिक्री की निगरानी में महत्वपूर्ण हैं। दिशा-निर्देशों का पालना नहीं करने पर 50 दवा दुकानों के लाइसेंस कैंसिल कर दिए गए हैं। उक्त लाइसेंस रजिस्टर तो थे लेकिन वे सभी नॉन ऑपरेशनल थे। उक्त फार्मेसी लाइसेंस का कोई गलत इस्तेमाल न कर पाए, इसलिए उन्हें कैंसिल कर दिया है। दवा बिक्री पर नजर रखेंगे एडीसी और एसडीएम जिला उपायुक्त ने एडीसी और एसडीएम को ओवर-द-काउंटर दवाओं की बिक्री पर नजर रखने का निर्देश दिया। उन्होंने सीसीटीवी निगरानी प्रणालियों की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए दवा प्रतिष्ठानों के निरीक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने एसडीएम बनी को पहाड़ी इलाकों में नशीले पदार्थों की खेती को रोकने के निर्देश दिए।

ब्रांडेड कंपनी के नाम से ठगी

बुलंदशहर- ऑनलाइन मेडिसिन मंगाने पर ब्रांडेड कंपनी के नाम पर एक व्यक्ति से ठगी होने का मामला प्रकाश में आया है। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस से मिली जानकारी अनुसार ककोड़ कोतवाली के गांव निवासी एक व्यक्ति ने दर्ज कराए केस में बताया कि वह ब्रांडेड कंपनी से ऑनलाइन दवा मंगाता रहता है। बीते दिनों बुकिंग कराने के बावजूद दवा नहीं आई। उसने संबंधित दवा कंपनी के कस्टमर केयर से बातचीत की। उससे पता गलत बताने की बात कही गई। दोबारा बुकिंग कराने के नाम पर उससे दो बार में एक लाख रुपए ऑनलाइन ठगी कर ली। थाना प्रभारी सतेन्द्र कुमार ने शिकायत के आधार पर आरोपी दवा कंपनी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है।

प्रसन्न वही है जिसने अपना मूल्यांकन किया और परेशान वही है जिसने औरों का मूल्यांकन किया.

नीतिका गुप्ता- 8979107461.

नीरू गर्ग स्वामी की ओर से ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा प्रकाशित, ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा मुद्रित तथा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एण्ड पैकिंग लिमिटिड नोएडा, गौतम बुद्ध नगर में मुद्रित एवं के० पी० रोड, बुलन्दशहर से प्रकाशित, सम्पादक – ब्रजेश कुमार गर्ग